पूज्य मालवीयजी का

हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध

'हिंदी में 'त्यागभूमि' जैसी सुन्दर, सुसम्पादित सात्विक राजस-प्रधान पत्रिका देखकर मुझे प्रसन्नता होती है। इसके लेख और टिप्पणियाँ विचारपूर्ण होती हैं। स्त्रियों और युवकों को उपदेश और उत्साह देने की सामग्री इसमें खूब रहती है।

मैं आशा करता हूँ कि देशभक्त हिन्दी-प्रेमी इसके प्रचार में सहायक होंगे।

'सस्ता-मण्डल अजमेर' ने उच्च-कोटि की पुस्तकें सस्ती निकाल कर हिन्दी की बड़ी सेवा की है। सर्व-साधारण को इस संस्था की पुस्तकें लेकर इसकी सहायता करनी चाहिए।"

मदनमोहन मालवीय

मुद्रक और प्रकाशक

जीतमल लूणिया

सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. दिव्य-विचारों का जीवन पर प्रभाव	११
२. सुख और सफलता	२७
३. कार्य और आशा (१)	४४
४. आत्म-विश्वास	६४
५. कार्य और आशा (२)	८८
६. उदासीनता से हानि	१०२
७. दैवी तत्व से एकता	११७
८. प्रेम की शिक्षा	१२०
९. दीर्घायु	१३७

इधर हिन्दी में नये मासिक-पत्र निकल रहे हैं। 'त्यागभूमि' भी उन नवागन्तुकों में एक है। लेकिन नयों और पुरानों से 'त्यागभूमि' की तुलना नहीं की जा सकती। यह अपने ढंग की अनूठी वस्तु है। लेख इतने सुन्दर और सुपाठ्य होते हैं कि उनका पढ़ना ज्ञानप्रद और हृदय को ऊँचा उठाने वाला होता है। सम्पादकीय टिप्पणियाँ इतनी नपी-तुली, विचारपूर्ण और सत्यानुमोदित होती हैं कि एक बार विरुद्ध मत रखने वाले व्यक्ति भी उन्हें पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं। हिन्दी-भाषा-भाषियों से हमारा यह निवेदन है कि वे 'त्यागभूमि' को एक बार ज़रूर देख लें। हमें तो यह कहते तनिक भी संकोच नहीं होता कि 'त्यागभूमि' अपने ढंग की सर्वोत्तम पत्रिका है। प्रताप (कानपुर)

दिव्य जीवन

(१)

दिव्य विचारों का जीवन पर प्रभाव

हमारे हृदय में जो आशापूर्ण तरंगें उठा करती हैं, हमारी आत्मा में जिन महत्वकांक्षाओं का जीवन होता रहता है, हमारे मन में जिन दिव्य भावनाओं का उदय होता रहता है, क्या वे खरगोश के सींग के समान असत्य हैं—बेजड़ हैं—व्यर्थ हैं—फिजूल हैं। नहीं नहीं, वे जीवनप्रद हैं। सत्य हैं, मजबूत जड़ वाली हैं, बड़ी प्रबल हैं, प्रभावोत्पादक हैं, हमारी शक्ति की सूचक और हमारे उद्देश्य की उच्चता की मापक हैं, हमारी कार्य्य-सम्पादन शक्ति के परिमाण की द्योतक हैं।

जिसकी हम चाह करते हैं—जिसकी सिद्धि के लिए हम अंतःकरण पूर्वक अभिलाषा करते हैं, उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी। जो आदर्श हमने सच्चे अंतःकरण से बनाया है—मन, वचन और काया को एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है—वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा।

जब हम किसी पदार्थ की अभिलाषा करते हैं—जब हम मन, वचन और काया से उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नवान होने का मनसूबा बाँधते हैं—उसी समय से हम उस पदार्थ के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना शुरू करते हैं। हमारा अन्तःकरण उसकी सिद्धि के लिए जितना उत्सुक होगा—जितनी हमारी आत्मिक भावनाएँ सुदृढ़ होंगी—उतना ही उसके साथ हमारा सम्बन्ध दृढ़

होगा। किंतु शोक ! शोक !! और महा शोक !!! कि जीवन के स्थूल बाजू पर तो हम अपना विशेष आधार रखते हैं, पर जीवनादर्श की ओर हम यथोचित ध्यान ही नहीं देते। यही कारण है कि हमें जैसी चाहिए वैसी सफलता नहीं मिलती—पूर्ण विजय से अपने अन्तःकरण को गद्गद् नहीं कर सकते विजय के डंके बजाकर संसार को आश्चर्य में नहीं डाल सकते। पर जब हम मन, वचन और काया से उस आदर्श पर स्थित रहना सीखेंगे, जो हमारा ध्येय है—जिसे हम सत्य के रूप में प्रकट करना चाहते हैं—तब हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। यदि हम चाहते हैं कि हम नौजवान बने रहें—नवयौवन का पुरजोश खून हमारे शरीर में बहता रहे—बुढ़ापे की झुर्रियों से हमारा देह जीर्णशीर्ण न हो तो हमें चाहिए कि हम सदा अपने मन को यौवन के सुखद विचारों के आनन्द-समुद्र में लहरें खिलाते रहें यदि हम चाहते हैं कि हम सदा सुंदर बने रहें, हमारे मुखमण्डल पर सौन्दर्य का दिव्य प्रकाश झलका करे, तो हमें चाहिए कि सदा हम अपनी आत्मा को सौन्दर्य के मीठे सरोवर में सुख स्नान कराते रहें।

आत्मा में रमण करने का—आदर्श पर कायम रहने का—क्या यह कुछ कम फायदा है ? इससे शारीरिक, मानसिक और नैतिक अपूर्णतायें नष्ट हो जाती हैं। ऐसी दशा में—ऐसी पूर्ण स्थिति में हो नहीं सकता कि हम कभी बुढ़ापा देखें, क्योंकि बुढ़ापा अपूर्णता और जरा का ही तो परिणाम है और आदर्श से तो ये बलाएँ कोसों दूर रहती हैं।

आदर्श में—मनोरथ सृष्टि में—हर पदार्थ तरोताजा और सुन्दर रहता है। क्षय और कुरूपता के लिए वहाँ जगह है ही

नहीं। आदर्श पर स्थित रहने की आदत से हमें बड़ी सहायता मिलती है, क्योंकि वह हमारे सामने पूर्णता का साक्षात् नमूना रखता है, हमारी श्रद्धा को दृढ़ करता है। क्योंकि हम अपनी मनोरथ-सृष्टि में सत्य के उस आभास को देखते रहते हैं, जिसके विषय में हमें मालूम होता रहता है कि सत्य कभी न कभी अवश्य हमें प्राप्त होगा।

जिस पुरुष के सदृश आप होने की अभिलाषा रखते हैं, सदा उसका आदर्श अपने सामने रक्खें। आप अपना यह आदर्श बना लें कि हममें पूर्णता और कार्य्य संपादन शक्ति बड़ी विलक्षणता से भरी हुई है। आप अपने मन से रोग एवं न्यूनता के विचारों को निकाल दें। आप अपने मन के द्वारों में कभी भी निर्बलता, न्यूनता और पराजय के विचारों का प्रवेश न होने दें। आप तो उक्त आदर्श को पूर्ण करने का मन, वचन और काया से प्रयत्न करें, अवश्य ही आपको यह प्रयत्न सफलता प्राप्त करने में सहायता देगा।

अहा! आशाजनक विचारों में क्या ही विलक्षण शक्ति भरी हुई है? प्रिय पाठको! जरा इसका अनुभव तो कीजिए। आप यह विचार पक्का कर लीजिए कि हमारी अभिलाषाएँ पूर्ण होंगी-हमारे मनोरथ सिद्ध होंगे—हमारे सुख-स्वप्न सच्चे होंगे हमें विजय—सफलता प्राप्त होगी। पराजय, असफलता, हमारे पास फटकने तक न पावेंगे। हमारे लिए जो कुछ होगा अच्छा ही होगा, बुरा कभी न होगा और फिर देखिए कि इस तरह के दिव्य और आशामय विचारों का आपकी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सांसारिक उन्नति पर क्या ही दिव्य प्रभाव

होता है। मैं ज़ोर देकर कहता हूँ कि इन विचारों को आदत में परिणत करने से मनुष्य की जैसी उन्नति होती है, वैसी दूसरी किसी भी बात से नहीं।

तुम अपने अन्तःकरण में इस विश्वास की जड़ जमा दो कि जिस कार्य्य के लिए सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ने हमें बनाया है हम उस कार्य्य को अवश्य पूर्ण करेंगे। इसके विषय में अपने अन्तःकरण में तिल मात्र भी सन्देह को जगह मत दो। यदि यह संशय तुम्हारे मन के द्वारों में प्रवेश करना चाहे तो तुम उसे निकाल बाहर करो। तुम हमेशा उन्हीं विचारों को अपने मनोमन्दिर में आने दो जो हितकर हैं। तुम उसी पदार्थ को आदर्श बनाओ, जिसकी सिद्धि तुम चाहते हो। उन विचारों को अपने अन्तःकरण से निकाल दो जो तुम्हें अहितकर मालूम होते हों—उन भावों को देश-निकाला दे दो जो तुम्हें निराश करते हों–निराशा के समुद्र में डुबोते हों। मैं कहूँगा कि तुम उस पदार्थ मात्र को अपने पास फटकने मत दो जो असफलता और दुःख की सूचना करता है।

आप चाहें जो काम करें, आप चाहे जो होना चाहें पर हमेशा उनके सम्बन्ध में आशापूर्ण, शुभसूचक भाव रक्खें। ऐसा करने से आपको अपनी कार्य्य कर-शक्ति बढ़ती हुई मालूम होगी और साथ-साथ यह भी मालूम होगा कि हमारा सुधार हो रहा है। जहाँ आपने अपने मनोमन्दिर में आनन्दप्रद, सौभाग्यशाली और शुभ चित्रों को देखने की अपनी आदत बनाली कि फिर इसके विरुद्ध परिणामों वाली आदत बनाना आपके लिए कठिन हो जायगा। यदि हमारे बच्चे उक्त प्रकार की शुभ आदत को

बनाने लग जावें, तो मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि हमारी सभ्यता में बड़ा ही विलक्षण परिवर्तन हो जायगा-हमारे जीवन की स्थिति में अपूर्व वृद्धि होगी। यदि हमने अपने मन को इस तरह सुसंस्कृत कर लिया तो हमें वह शक्ति प्राप्त होगी, जिससे हम अनैक्यता और उन सहस्र शत्रुओं पर पूरी पूरी विजय प्राप्त कर सकेंगे जो हमारी शान्ति को, सुख को, शक्ति को—सफलता को—लूटने वाले हैं।

सफलता के लिए दिव्य पूँजी

क्या आप व्यवहारिक संसार प्रवेश करने के लिए पूँजी चाहते हैं? मैं कहता हूँ कि आप संसार-प्रवेश करने के पहले मन, वचन और काया से इतना जरूर सोचलें कि हमारा भविष्य प्रकाशमान होगा, हम उन्नतिशील और सुखी होंगे, हमे सफलता और विजय प्राप्त होगी, एवं सब प्रकार की आनन्द जनक सामग्री हमें प्राप्त होगी। बस सब से पहले इसी दिव्य पूँजी को लेकर संसार में प्रवेश कीजिए और फिर उसके मीठे फल चखिए।

बहुत से मनुष्य अपनी इच्छाओं को-अपनी आशामय तरंगों को—जाज्वल्यमान रखने के बदले उन्हें कमजोर कर डालते हैं। वे इस बात को नहीं जानते कि हमारी अभिलाषाओं की सिद्धि के लिए जितना ही हम दृढ़ भाव, अविचल निश्चय रक्खेंगे उतना ही हम उनको सिद्ध कर सकेंगे। वे इस बात को नहीं जानते कि अपनी आशाओं को जीवित रखने का सतत प्रयत्न करते रहने से हम उनसे साक्षात्कार की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

कोई बात नहीं है कि इनकी सिद्धि का समय बहुत दूर मालूम होता हो। यह हमें असंगत दीखती हों। इनका मार्ग हमें अन्ध-

काराच्छन्न दीख रहा हो; पर यदि हम मन, वचन और काया से उनको प्रत्यक्ष करने के लिए जुट जावेंगे, तो धीरे धीरे अवश्य ही हम उनकी सिद्धि कर सकेंगे। पर यहाँ हम यह कहना न भूलेंगे कि केवल हम अभिलाषा ही करते रहेंगे और उसकी सिद्धि के अर्थ कुछ भी प्रयत्न-परिश्रम-न करेंगे तो जल-तरंग की तरह उनका उत्थान और पतन मन का मन ही में हो जायगा।

अभिलाषा तब ही फलोत्पादक होती है, जब वह दृढ़ निश्चय में परिणित कर दी जाती है। अभिलाषा का दृढ़ निश्चय के साथ सम्मेलन होने से उत्पादक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। फल की प्राप्ति तभी होती है जब अभिलाषा और दृढ़ निश्चय दोनों जुटकर काम करें।

हम हमेशा अपने विचारों के, मनोभावों के, और आदर्श के गुण प्रकृति के अनुसार अपनी कार्य्योत्पादक शक्ति को बढ़ाते घटाते रहते हैं। यदि हम हमेशा पूर्णता का आदर्श अपने सामने रक्खें, यदि हम हमेशा समझते रहें कि सर्व-शक्तिमान परमात्मा के अंश होने से हम पूर्ण हैं, तो हमें वह स्वास्थ्यकर शक्ति प्राप्त होगी जो हमारी रोग सम्बन्धी भावनाओं को एक दम कमज़ोर कर देगी।

बुरे विचारों से जीवन का नाश

तुम उसी बात को सोचो, उसी बात को अपनी ज़बान से निकालो जिसे तुम चाहते हो कि वह सत्य हो। बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि—"भाई! अब थक गये। बेकाम हो गये। अब परमात्मा हमें संभाल ले तो अच्छा हो।" वे इस रोने को रोते रहते हैं कि हम बड़े अभागे हैं—कमनसीब हैं—हमारा

भाग्य फूट गया है-दैव हमारे विरुद्ध है, हम दीन हैं—गरीब हैं। हमने सिरतोड़ परिश्रम किया, उन्नत होना चाहा, पर भाग्य ने हमें सहायता न दी। पर वे बेचारे इस बात को क्या जाने कि इस तरह के अन्धकारमय, निराशाजनक विचार रखने से—इस तरह का रोना रोने से—हम अपने हाथों अपने भाग्य को फोड़ते हैं—उन्नति रूपी कौमुदी को काले बादलों से ढँक देते हैं। वे यह नहीं जानते कि इस तरह के कुविचार हमारी शान्ति, सुख और विजय के घोर शत्रु हैं। वे यह बात भूले हुए हैं कि इस तरह के विचारों को मन से देश-निकाला देने ही में मंगल है। इसी से इन विचारों को आत्मा में बैठाकर ये अपने हाथ अपने पैरों पर कुठाराघात कर रहे हैं। कभी एक क्षण के लिए भी अपने मन में इस विचार को स्थान मत दो कि हम बीमार हैं—कमज़ोर हैं (हाँ यदि आप बीमारी का तथा कमज़ोरी का अनुभव करना चाहें तो भले ही ऐसे विचारों को अपने मन में स्थान दीजिए।) क्योंकि इस तरह का विचार शरीर पर इनके आक्रमण होने में सहायता देता है। हम सब अपने विचारों ही के फल हैं। उच्चता महानता और पवित्रता के विचारों से हमें आत्म-विश्वास प्राप्त होता है—ऊँची उठाने वाली शक्ति मिलती है और ऊँचे दर्जे का साहस प्राप्त होता है।

यदि आप किसी खास विषय में अपनी अपूर्वता प्रकट करना चाहते हैं तो आप अपने अभिलषित विषय में उच्च आदर्श को लेकर प्रविष्ट हो जाइए और तब तक आप अपने अन्तःकरण को वहाँ से तिलमात्र भी मत हटाइए, जब तक आपको यह न मालूम हो जाय कि सफलता होने में अब कुछ भी सन्देह नहीं है।

प्रत्येक जीव अपने आदर्श का अनुकरण करता है आदर्श के रंग से वह रँगा जाता है—आदर्श के अनुसार उसका चरित्र बन जाता है। यदि आप किसी मनुष्य के आदर्श को जानना चाहते हों तो उसके चरित्र को—स्वभाव को—देखिए, उसके आदर्श का आपको फौरन पता लग जायगा।

हमारे आदर्श ही हमारे चरित्र के संगठन-कर्ता हैं, और उन्हीं में वह प्रभाव है जो जीवन को वास्तविक जीवन में परिणत करता है। देखो! क्या ही आश्चर्य है कि जैसे हमारे आदर्श होते हैं, जैसे हमारी मानसिक अभिलाषाएँ होती हैं, जैसे हमारे हार्दिक भाव होते हैं, ठीक उन्हीं की झलक हमारे मुख-मण्डल पर दिखाई देने लगती है। हो नहीं सकता कि इनका भाव हमारे चेहरे पर न झलके—इनका प्रतिबिम्ब हमारी आँखों में न दीखे। अतएव हमें अपने आदर्श को—अपने मनोभाव को—अपने विचार-प्रवाह को श्रेष्ठता और दिव्यता की ओर झुका हुआ रखना चाहिए। हमें पूर्ण निश्चय और विश्वास कर लेना चाहिए कि निकृष्टता, दीनता, निर्बलता, आधि-व्याधि, दरिद्रता और अज्ञान से हमारा कोई सरोकार नहीं। हमें इस बात का दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि हमारे हाथ से हमेशा उत्तम ही कार्य्य होगा कभी बुरा न होगा।

अहा! वह कौन सी दैवी वस्तु है—दिव्य पदार्थ है—जो हमारी आत्मा को वास्तव में ऊँचा उठाता है—उसे अध्यात्मिकता के आनन्दमय उच्च प्रदेश पर पहुँचाता है। आत्म बन्धुओ। यह वह प्रभाव है जो हमारे दिव्य आदर्श से उत्पन्न होता है—

यह वह ज्योति है जो निर्मल अंतःकरण से निकल कर हमारे जीवन को प्रकाशित करती है।

हमें अपने जीवनोद्देश को सफल करने में श्रद्धा से—आस्था से—भी बड़ी सहायता मिलती है। यदि हम यह कहें कि मनोवांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकता तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी। यदि हम यह कहें कि श्रद्धा-आस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य रेखा है, तो कुछ भी अनुचित न होगा। पर हमें श्रद्धा ही तक न ठहर जाना चाहिए। श्रद्धा के परे भी कोई पदार्थ अवश्य है। विचार कर गहरी दृष्टि डालने से मालूम होगा कि श्रद्धा, आशा, हार्दिक लालसा आदि मनोवृत्तियों के पीछे एक अलौकिक, दिव्य पदार्थ–सत्य—भरा हुआ है। यह वह सत्य है जो हमारी प्रकृत अभिलाषाओं को सुखरूप प्रदान करता है।

उत्पादक शक्ति का यह एक नियम है कि जिसका हम दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं, वह हमें अवश्य प्राप्त होता है। यदि आप इस बात का पक्का विश्वास करें कि हमें आलीशान मकान रहने को मिलेगा, हम समृद्धिशाली होंगे, हम प्रभाव-शाली पुरुष होंगे, समाज में हम वज़नदार गिने जावेंगे–अपना प्रयत्न आरम्भ करेंगे तो आप में एक प्रकार की विलक्षण उत्पादक शक्ति का उदय होगा और वह आपके मनोरथों पर सफलता का प्रकाश डालेगी।

यदि आप अपने जीवनोद्देश को संफल करना चाहते हैं, यदि आप अपने आदर्श को कार्य्य में परिणत करना चाहते हैं तो आप अपने सम्पूर्ण विचार-प्रवाह को अपने उद्देश की ओर लगा दीजिए। एक ही उद्देश की ओर अपने मन, वचन और काया

को लगा देने से संसार में बड़ी बड़ी सफलतायें होती हुई दीख पड़ती हैं। आप उन पदार्थों की आशा कीजिए जो दिव्य हों, आप यह आत्म-विश्वास कर लीजिए कि हमारे प्रयत्न उत्साह पूर्वक होने से हमें कोई उच्च, दिव्य और महान् पदार्थ प्राप्त होने वाला है और हम अपने जीवनोद्देश पर पहुँच रहे हैं आप इस विचार में मस्त हो जाइए कि हमारी शाश्वत उन्नति हो रही है, और हमारी आत्मा का एक एक परमाणु दिव्यता की ओर जा रहा है।

अभिलाषा और सफलता

बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि इस तरह के स्वप्नों में डूब जाने से—कल्पना ही कल्पना में रहने से—हम वास्तव में कुछ भी काम न कर सकेंगे। केवल हम मन ही के लड्डू खाया करेंगे। पर यह उनकी भूल है। हमारे कहने का यह आशय नहीं है कि आप हमेशा कल्पना स्रोत ही में घूमा करें, विचार ही विचार में रह जावें, केवल मन ही के लड्डू खाया करें। किन्तु हमारे कहने का आशय यह है कि किसी काम को करने के पहले उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में करलें और सारी विचार-शक्तियों को उस ओर झुका दें जिससे आपको बहुत ही अधिक सफलता प्राप्त हो। मन के विचार को मन ही में लय न करके उसको दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है, यह हम पहले भी कह चुके हैं। पर हम इतना अब भी अवश्य कहेंगे कि ये शक्तियाँ बड़ी ही कार्य सम्पादिकायें हैं—पवित्र हैं—ईश्वर ने दैवी उद्देश सिद्धि के लिए हमें ये शक्तियाँ दी हैं, जिससे कि हम सत्य की झलक देख सकें। इन्हीं की बदौलत हम उस समय भी अपने

आदर्श पर कायम रह सकते हैं, जब कि हम असुविधा-जनक और बुरी परिस्थिति में कार्य करने को बाध्य किये गये हों।

हवाई किले बनना निःसार नहीं है। हम पहले अपने मन में उन्हें बनाते हैं—अभिलाषा में उन्हें चित्रित करते हैं—और फिर बाहर उनकी नींव रखते हैं। कारीगर मकान बनाने के पहले उसके नकशे को अपने मन में स्थिर कर लेता है और फिर उसी के अनुसार उस मकान को बनाता है। सुन्दर और भव्य मकान बनाने के पहले वह अपने मानसिक क्षेत्र में उसकी सुन्दर और भव्य इमारत खड़ी कर लेता है।

इसी तरह जो कुछ हम कार्य करते हैं, पहले उसकी सृष्टि हमारे मन में होती है, और फिर वह दृश्य रूप में आता है। हमारी कल्पनायें हमारी जीवन रूपी इमारत के मानचित्र हैं। पर यदि हम उन कल्पनाओं को सत्य करने के लिए जी जान से प्रयत्न न करेंगे तो उनका मानचित्र मात्र ही रह जायगा। जैसे यदि कारीगर मकान का केवल नकशा ही बनावे और उसे सत्य रूप में प्रकट न करे अर्थात् उसके अनुसार मकान न बनावे तो तो उसकी स्कीम उस नकशे ही में पूरी हो जायगी।

सब बड़े आदमी जिन्होंने महत्ता प्राप्त की है—बड़े-बड़े पदार्थों की प्राप्ति की है—वे सब पहले उन सब अभिलषित पदार्थों के स्वप्न ही देखा करते थे। जितनी स्पष्टता से, जितने आग्रह से, जितने उत्साह से, उन्होंने अपने सुख स्वप्न की—आदर्श की, सिद्धि में प्रयत्न किया उतनी उन्हें उनकी सिद्धि प्राप्त हुई।

तुम अपने आदर्श को इसलिए मत छोड़ दो कि उसका प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होना तुम्हें नहीं दीखता है। तुम अपनी सारी

शक्तियों का प्रवाह अपने आदर्श पर लगाकर उस पर मजबूती से जमे रहो। तुम उसे हमेशा प्रकाशित रक्खो। कभी उसे अन्धकारमय तथा मन्द मत होने दो। हमेशा तुम आनन्दप्रद नई अभिलाषा उत्पन्न हुए वायुमण्डल में रहो। वे ही पुस्तकें पढ़ो जो तुम्हारी अभिलाषा को प्रोत्साहन देती रहें; उन्हीं पुरुषों के पास उठो बैठो जिन्होंने वह काम किया है जिसकी तुम कोशिश कर रहे हो और जो सफलता के रहस्य को प्रत्यक्ष करना चाह रहे हों।

रात को सोने से पहले आप कुछ देर के लिए शान्तिपूर्वक बैठकर एकचित्त हो अपने आदर्श का विचार करो—विचार-सृष्टि में उसकी मूर्ति देखो और आनन्द में मग्न हो जाओ। तुम अपनी मनोकल्पना से स्वप्न में भी मत डरो क्योंकि वह मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता—उसका पतन हो जाता है—जो अपने आदर्श के सुखमय स्वप्न नहीं देखता। स्वप्न की शक्ति तुम्हें इस वास्ते नहीं दी गई है कि तुम्हारे अन्दर डर पैदा करे। उसके पीछे सत्य छिपा हुआ है। यह एक अपूर्व देन है, जो दैवी खजाने से दैवी धन देती है और साधारण पुरुषों की श्रेणी से उठाकर असाधारण पुरुषों की श्रेणी में रखती है—बुरी दशा से निकालकर दिव्य आदर्शों पर ला बैठाती है।

हम अपने हृदय के आनन्दमय भवन में आदर्श के जिस आभास को देखा करते हैं वह हमें असफलता और आशाभंग के कारण हत-धैर्य्य होने से रोकता है।

यहाँ स्वप्नों से मेरा मतलब उन स्वप्नों से नहीं है जो केवल तरंगों के समान क्षणिक हैं, पर हमारा मतलब उस सच्ची और

प्रकृत अभिलाषा, एवं उस पवित्र आत्मिक आकांक्षा से है जो हमें हमेशा इस बात का स्मरण कराती रहती है कि हम अपने जीवन को दिव्य और महान् बनावें। जो हमें इस बात की सूचना करती है कि तुम अप्रासंगिक एवं बुरी परिस्थिति से उठकर उन आदर्शों को साक्षात्कार कर सकते हो, जिन्हें तुम अपने कल्पना-राज्य में देखा करते थे।

हमारी प्रकृत अभिलाषाओं के पीछे ऐश्वर्य्य—ईश्वरत्व छिपा हुआ है।

दैवी और फलप्रद अभिलाषाओं के लिए हम यह नहीं कहते कि आप अपनी इन अभिलाषाओं का उन पदार्थों के लिए उपयोग करें जिनको आप चाहते हैं, पर वास्तव में जिनकी आप को आवश्यकता नहीं। मैं उन अभिलाषाओं का जिक्र नहीं करता, जो मरु देश के उस फल के सदृश हैं जो दीखने में सुंदर है, पर मुँह पर लाते ही जिसकी जघन्यता प्रकट होती है; पर हमारा आशय आत्मा की उन प्रकृत अभिलाषाओं से है जो हमारे आदर्श की सिद्धि में सहायक होती हैं। मेरा आशय उन असली आकांक्षाओं से है जो हमें पूर्णता पर पहुँचाने में—आत्म-विकास—करने में मददगार होती हैं।

हमारी मानसिक वृत्तियाँ—हमारी हार्दिक अभिलाषायें—हमारी नित्य की प्रार्थनायें हैं। इन प्रार्थनाओं को प्रकृति देवी सुनती है और उनका यथोचित उत्तर देती है। वह इस बात को मान लेती है कि हम वही पदार्थ चाहते हैं जिसकी सूचना हमारी अन्तरात्मा करती है और वह हमें सहायता करने लगती है। लोग इस बात को बहुत कम जानते हैं कि हमारी अभिलाषाएँ ही

हमारी नित्य की प्रार्थनायें हैं। ये प्रार्थनायें नकली नहीं—बनावटी नहीं—पर शुद्ध हृदय से निकली हुई आत्मिक हैं और परमात्मा उनका सुफल हमें अवश्य देता है।

हम सब इस बात को जानते हैं कि एक दैवी उपदेशक हमारी आत्मा में बैठा हुआ है और वह समय समय पर हमारी रक्षा करता है तथा हमें ठीक राह बताता रहता है, और हमारे हर एक प्रश्न का उत्तर देता रहता है। जो मनुष्य अपने मानसिक भाव को ठीक करके उत्साह और प्रमाणिकता से अपने उद्देश पर पहुँचना चाहता है, वह उस पर ज़रूर पहुँचेगा, शायद पूरा न पहुँचे तो उसके क़रीब क़रीब तो जरूर ही पहुँच जायगा।

हमारी हार्दिक अभिलाषाएँ हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती हैं। वे हमारी शक्तियों को ज़ोर देती रहती हैं—हमारी योग्यता को बढ़ाती हैं। प्रकृति देवी की ऐसी दुकान है कि वहाँ एक कीमत बोली जाती है, और मनुष्य वह कीमत देकर हर चीज को खरीद सकता है। हमारे विचार उन मूलों से हैं जो शक्तिरूपी अनन्त सागर में फैली हुई हैं और जिनको गति और स्पन्दन देने से वे हमारी आकांक्षा एवं अभिलाषा का स्नेहाकर्षण कर लेती हैं।

वनस्पति संसार की प्रत्येक वस्तु, क्या फल क्या फूल, अपने नियत समय ही पर फलते फूलते और पकते हैं। जाड़ा वहाँ तक वृक्षों के पल्लवों पर हमला नहीं करता, जहाँ तक उन्हें पूरी तरह खिलने का अवसर न मिला हो। फल बर्फ पड़ने के पहले वृक्ष पर से गिरने को तैयार रहते हैं; यही कारण है कि उनकी वृद्धि रुकती नहीं।

पर यदि हम देखें कि जाड़ा आने पर भी सब फल हरे भरे हैं–फूल पल्लवों में हैं और विकसित होने के बदले वे ठंड के शिकार बन गये हैं तो हमें समझ लेना चाहिए कि उनमें कहीं तो भी किसी तरह की भूल हुई होगी।

इसी तरह जब हम देखते हैं कि करोड़ों मनुष्यों में कोई बिरले ही ऐसे होते हैं जो अपनी पूर्ण अवस्था तक पहुँचते और बहुत से मनुष्य अर्द्धविकसित होने के पहले ही काल की खुराक बन जाते हैं, तो हमें मानना होगा कि यहाँ भी कुछ भूलें अवश्य हुई हैं।

क्यों हमारा जीवन-वृक्ष अपने समय से पहले ही मुर्झा जाता है? हममें ईश्वर सदृश गुण और अनन्त शक्ति की योग्यता होने पर भी क्यों हमारा जीवन फल अर्द्ध-विकसित होने के पहले ही वृक्ष से गिर जाता है। इससे तो हमें मानना होगा कि इसमें कहीं न कहीं हमारी भूल अवश्य है।

जब हम अन्य जीवधारियों से मानव जीवन की तुलना करते तो हमें मालूम होता है कि मानव जीवन के लिए पूर्णतः फलने फूलने और आत्म-विकास करने का ठीक अवसर है। यदि हम अपने दिव्य स्वप्नों का अनुकरण करते जावेंगे तो हमारी अभिलाषाओं के फलने-फूलने का—हमारी आकांक्षाओं के सिद्ध होने का—हमारे आदर्श के पकने का समय जरूर आयगा। क्योंकि ये बन्द मुकुर में रही हुई उन पँखुरियों के समान हैं जो कभी कहीं समय पाने पर खिलेंगी और अपनी खुशबू और सुन्दरता से अपने वायुमण्डल को सुगन्धमय बना देंगी। किसी तरह का क्षय इनको बढ़ती को न रोक सकेगा।

हम यह बात देखते हैं कि हर मनुष्य में कुछ ऐसी सामग्री मौजूद है जो उसे पूर्ण और आदर्श मनुष्य बना सकती है। यदि हम अपने आदर्श को मज़बूती से पकड़ लें, मन, वचन और काया से सांसारिक कष्टों से न घबराकर अपने जीवनोद्देश्य के पीछे चलें तो अवश्य ही हम में मानवी शक्तियों का आविर्भाव होकर हमारी सफलता पर प्रकाश पड़ेगा।

ईश्वर की यह आज्ञा कि पूर्ण बनो, जैसा कि मैं हूँ, कुछ निःसार नहीं है। उसके सदृश विकास करने की हममें भी शक्ति है यह बात अक्षरशः सत्य है।

पतित अवस्था में रहना पाप है

मनुष्य यदि व्याधि, दरिद्रता और दुर्दैव ही का विचार करता रहे तो उसे ये प्राप्त होंगे और उसे ऐसा मालूम होने लगेगा कि मानो ये मेरे ही पास आ पड़े हैं फिर भी वह इनसे गहरा सम्बन्ध न करना चाहेगा—वह अपने उत्पन्न किए हुए इन पुत्रों से घबराता रहेगा और कहता रहेगा कि दुर्भाग्य से ये बलाएं मेरे सिर पर पड़ी हैं।

दरिद्रता एक नर्क है, जिससे इस समय के अंग्रेजों का कलेजा काँपता है—कार्लाईल।

किसी मनुष्य को यह अधिकार नहीं है—यह स्वत्व नहीं है यह हक यहीं है कि वह उसी लाचारी की दरिद्रता की, निर्धनता की, मूर्खता की हालत में पड़ा रहे, जिसमें वह रहता आया है। उसका आत्म-सम्मान कहता है कि वह ऐसी परिस्थिति से एकदम बाहर निकल आवे। उसका धर्म है-कर्तव्य है-फर्ज है-कि वह अपने को ऐसी स्थिति में रखे जो सम्मान-पूर्ण हो, जो स्वतंत्रता की मधुर सुगंध से सुवासित हो, जिसमें रहकर बीमारी के समय तथा आकस्मिक विपत्ति के समय वह अपने मित्रों को बोझ सा न हो पड़े और जो लोग उसके ऊपर आश्रित हैं उन्हें किसी तरह का कष्ट न हो।

डाक्टर ओरिसन स्विट मार्डन महोदय कहते हैं कि यदि आप अमेरिका के किसी धनिक से-लक्ष्मीपति से पूछेंगे तो वह कहेगा-'वे दिन मेरे लिए सबसे ज्यादा संतोषपूर्ण और आनन्दमय थे जब मैं दरिद्रता के पंजे से निकल कर समृद्धि के आनन्द-भवन में प्रवेश कर रहा था; जब मैं अपूर्णता और लाचारी से निकल कर पूर्णता के द्वार में प्रवेश कर रहा था; जब मुझे ऐसा मालूम होने लगा था कि कमतरता से निकल कर समृद्धि के विशाल प्रवाह की ओर मैं जा रहा हूँ और उस मार्ग में बाधा डालनेवाला कोई नहीं है'। वह गद्गद् हृदय होकर कहेगा वह समय मेरे लिए बड़ा सुखकर-बड़ा आनन्दप्रद—बड़ा संतोपदायक और बड़ा प्रोत्साहनदायक था। उस समय मुझे मालूम होने लगा था कि मेरा आत्म-विकास—आत्म सुधार हो रहा है। उस समय मैं सोच रहा था कि अब मुझे दिव्यानन्द पूर्वक मनोहर जंगलों में घूम कर प्रकृति देवी के स्वाभाविक सौंदर्य्य से अपने हृदय को गद्गद् कर सकूँगा और उसकी हरी भरी पोशाक और मनोहर छटा देखकर एकदम ही आनन्द और आनन्द के मीठे समुद्र में मग्न होकर अपने मित्रों को दरिद्रता के दुःखद पञ्जों से मुक्त करके उन्हें ऊँचा उठाऊँगा। सच है ऐसे मनुष्य को स्वयमेव मालूम होने लगता है कि मुझ में ऊँचे उठने की शक्ति है। मुझ में वह शक्ति है कि संसार में मैं अपना वजन पैदा कर सकता हूँ।' उसे इस बात का विश्वास हो जाता है कि "मेरे लड़कों को शिक्षा प्राप्त करने में अब मुझसा कष्ट न सहना पड़ेगा।" मतलब यह कि इस वक्त उसका कार्यक्षेत्र संकुचित परिधि से बहुत बड़े मैदान में परिणत होने लगता है।

इस बात के सैकड़ों प्रमाण हैं कि हम महान् और दिव्य वस्तुओं के लिए बनाए गए हैं न कि दरिद्रता के पंजे में फँसने के लिए। कमी और दरिद्रता मनुष्य की दैवी प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं पर कठिनाई इस बात की है कि हमें उस दैवी खजाने पर आधा विश्वास भी नहीं। हमें यह हिम्मत नहीं होती कि अपनी दैवी क्षुधा को तृप्त करने के लिए अपनी आत्मिक इच्छा को मुक्त हृदय से प्रकाशित करें और बिना हिचकिचाये उस पूर्णता की याचना करें जिस पर हमारा स्वाभाविक अधिकार है। हम क्षुद्र वस्तुओं की आकांक्षा करते हैं और उन्हें ही पाते हैं। इस तरह हम अपनी इच्छाओं को छिन्न-भिन्न कर देते हैं और उस दैवी ख़जाने को संकुचित कर देते हैं, जो हमारे लिए रक्षित रखा गया था। अपनी आत्मिक अभिलाषाओं की याचना न कर मानो हम अपने मनो-मन्दिर के उस द्वार को बन्द कर लेते हैं, जो महान्-दिव्य और उपयोगी वस्तुओं का प्रवेश-द्वार है इस तरह हमारा मानसिक क्षेत्र इतना संकुचित हो जाता है, हमारा आत्म-विकास इतना दब जाता है कि हमें क्षुद्रता और संकीर्णता के सिवा और कुछ भी दिखाई नहीं देता।

हम उस सृष्टिकर्ता परमात्मा की विवेचना नहीं करते जिसके विषय में लोगों की ऐसी धारणा है कि वह हमारी प्रार्थनाओं को याचनाओं को प्रदान करने से शक्ति-हीन हो जाता है। हमारा विश्वास है कि उसका यह स्वभाव ही है कि वह प्रदान करे और हमारी हार्दिक अभिलाषाओं को परिपूर्ण करे। हम यदि उसके पास से ज्यादा माँगते हैं, तो मत समझो कि उसके खजाने में कुछ कमी होती है। गुलाब का फूल सूर्य के पास प्रकाश

मांगने के लिए नही जाता। सूर्य्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह अपना प्रकाश खुले तोर से उसे तथा अन्य सब पदार्थों को बाँट- देता है। एक मोमबत्ती के जलते हुए यदि दूसरी मोमबत्ती जला दी जाय, तो उस पहली मोमबत्ती को कुछ हानि न होगी। मैत्री भाव रखने से हम अपने मैत्री भाव को एवं तत्संबंधी योग्यता को बढ़ाते हैं पर खोते कुछ नहीं।

यह जान लेना कि हम दैवी शक्ति के प्रवल प्रवाह को किस तरह अपनी ओर ला सकते हैं और उसका ठीक उपयोग कर सकते हैं, हमारे जीवन के एक अलौकिक रहस्य का ज्ञान कर लेना है। यदि मनुष्य को इस दैवी तत्व का ज्ञान हो जाय तो वह अपनी कार्य्य-संपादन शक्ति को हजारों गुना ज्यादा बढ़ा लेगा, क्योंकि फिर तो वह ऐश्वर्य्य-विभूति का सहयोगी और हिस्सेदार हो जायगा।

जब हम अनन्त से एकता करने लगते हैं, अपनी आत्मा को संस्कृत करने लगते हैं, जब हम अप्रामाणिकता, स्वार्थ और अपवित्रता को कूड़े-करकट की तरह अपने हृदय से निकाल कर फेंक देते हैं उस समय हमे इन दोषों से रहित शुद्ध परमात्मा के दर्शन होते हैं और हमें ईश्वर की श्रेश्रता दीखने लगती है। हम श्रेष्ठता को जानने लगते हैं; पवित्रता के उपासक हो जाते हैं।

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है जिसका अन्तःकरण शुद्ध निर्मल और पवित्र है।

अपने बंधु-भगिनियों से स्वार्थपूर्ण और नीच लाभ उठाने का विचार जब हमारी आत्मा से निकल जायगा, तव हम ईश्वर के इतने निकट पहुँच जायेंगे कि विश्व की तमाम अच्छी चीजें

हमारी ओर बहने लगेंगी, पर कठिनाई इस बात की है कि हम अपने कुकृत्यों और कुविचारों से उस दैवी प्रवाह के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं, जो हमारी आत्मा की ओर आ रही है। अपनी आँखों के सामने आनेवाला कोई भी दुष्ट कार्य्य काले स्याह परदे के समान है, अथवा यों कहिए कि वह हमारी आँखों का जाला है, जिससे हम ईश्वर को नहीं देख सकते, उसकी श्रेष्ठता का भास नहीं कर सकते। दुष्ट कार्य्य ईश्वर से हमें सदा अलग रखता है।

जब हम विशाल दृष्टि से देखना सीखेंगे, जब हम संकीर्णता का विचार करना छोड़ देंगे, जब हम अपने संकीर्ण विचारों से अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना छोड़ देंगे, तब हमें मालूम होगा कि वह पदार्थ जिसकी हम खोज कर रहे थे, वही हमारी खोज कर रहा है और वह हमें आधे रास्ते ही में मिल जायगा।

कभी इन बातों का रोना मत रोओ कि हमें अमुक चीज की कमी है, हमारे पास वे वस्तुएँ नहीं हैं, जो दूसरों के पास हैं, हम वह काम नहीं कर सकते जो दूसरे करते हैं। ऐसा करने से तुम अपने भविष्य को अन्धकार मय कर लोगे। जहाँतक तुम अपने दुर्दैव के विचारों में लगे रहोगे, जहाँतक तुम अपने निष्फल अनुभव पर आश्रित रहोगे वहाँ तक तुम्हारे अंदर में रही हुई आत्मशक्ति मुरझाई हुई रहेगी और वह तुम्हारे अभिलाषित पदार्थों को आकर्षित करने में नितान्त असमर्थ रहेगी। वह तुम्हारी कठिन दशा का कुछ भी उपाय न कर सकेगी।

हमारा मानसिक भाव–हमारा आदर्श–उस सत्य के समान होना चाहिए, जिसकी हम खोज कर रहे हैं।

समृद्धि के अंकुर पहले हमारे मन ही में फूटते हैं और फिर इधर उधर फैलते हैं। दरिद्रता का भाव रख कर हम समृद्धि को अपने मानसिक क्षेत्र की ओर कैसे आकर्षित कर सकते हैं? क्योंकि इस दुर्भाव के कारण वह वस्तु जिसकी हम चाह करते हैं एक पैर भी हमारी ओर आगे नहीं बढ़ाती। कार्य्य करना किसी एक चीज के लिए और आशा करना किसी दूसरी की—यह बात बहुत ही शोचनीय है। मनुष्य समृद्धि की चाहे जितनी इच्छा करे पर दुर्दैव के विचार समृद्धि के आने के द्वारों को बन्द कर देते हैं। सौभाग्य और समृद्धि, दरिद्रता एवं निरुत्साही विचारों के प्रवाह द्वारा नहीं आ सकते। उन्हें पहले मानसिक क्षेत्र में उत्पन्न करना चाहिए। यदि हम समृद्धिशाली होना चाहें तो पहले हमें उसके अनुसार अपने विचारों को बना लेना चाहिए।

क्यों आप एक विभिन्न श्रेणी में हैं? इसका कारण केवल यही है न कि आप अपने को ऐसा मानते हैं। यदि आप अपनी आत्मा में संकीर्णता देखते तो आप अपने आपको बेशक क्षुद्र मानिए पर याद रखिए ऐसा करने से आप अपने और समृद्धि के बीच में गड़हा खोदते हैं! यदि समृद्धि की ओर से निराश होकर आप अपने विचार प्रवाह को उसकी ओर नहीं प्रवाहित कर रहे हों तो समझ लीजिए कि वह हमेशा आपसे हवा बचाती रहेगी—कभी आपके पास न आयेगी।

किस नियम से आप उस चीज की आशा कर सकते हैं, जिनके लिए आपको विश्वास नहीं है कि वह प्राप्त होगी। किस दर्शनशास्त्र से आप यह बात सिद्ध कर सकते हैं कि

आप उन चीजों को प्राप्त कर सकेंगे, जिनके लिए :
पक्का विश्वास है कि वे आपकी नहीं हैं ?

संकीर्णता—सीमाबन्धन हम ही में है, जगत् पिता परमात्मा मे नहीं। वह चाहता है कि उसके पुत्रों को विश्व की सब अच्छी चीजें प्राप्त हों क्यों कि उसने इन पदार्थों की सृष्टि अपने पुत्रों ही के लिए की है। यदि हम उन्हें लेने में असमर्थ हो रहे हैं तो यह दोष हमारा है। इसका केवल मात्र कारण यही है कि हम अपनी आत्मा को संकुचित कर रहे हैं।

दरिद्रता में विश्वास करना ही संसार में सब से बड़ा पाप है

कुछ मनुष्यों का दृढ़ विश्वास है कि कुछ लोगों को तो अवश्य ही गरीब होना चाहिए। वे गरीबी ही के लिए बनाये गए हैं। पर हम कहते कि सृष्टिकर्ता परमात्मा ने मनुष्य के लिए जो ढाँचा बनाया है उसमें गरीबी, दरिद्रता, न्यूनता किसी की जगह नहीं रक्खी है। पृथ्वी पर गरीब आदमी नहीं होना चाहिए। पृथ्वी पर ऐसी विपुल सामग्री भरी हुई है, जिसे हमने शायद ही स्पर्श किया होगा। शोक की बात है कि समृद्धि के भण्डार में रहते हुए भी हम दरिद्र रहते हैं। इस का कारण यह है कि हम अपने विचारों को क्षुद्र और संकीर्ण किये हुए रहते हैं।

अब हमें इस बात का पता चलता जा रहा है कि विचार वह वस्तु है जो हमारे चरित्र को संगठित करता है। यदि हम भयपूर्ण और दरिद्रता के विचारों में रमण करते रहते हैं—यदि

हम दरिद्रतासे डरते रहें—यदि आवश्यकता के भय से कांपते रहे-तो दरिद्रता और भय के विचार हमारे जीवन-प्रदेश में जड़ जमालेंगे और उसके प्रभाव से हम एक ऐसे चुम्बक बन जावेंगे कि दरिद्रता और लाचारी अधिकाधिक परिमाण में हमारी ओर आकर्षित होकर आती रहेगी।

दयानिधि परमात्मा की इच्छा कदापि नहीं है कि हमें अपने उदर निर्वाह के लिए भी कठिन समस्या का सामना करना पड़े। हमारा अमूल्य समय केवल इसी झगड़े में लगा रहे, जीवनसुधार का हमें समय ही न मिले! जीवन हमें इस वास्ते दिया है कि हम उसकी पूर्णता का, सौंदर्य का विकास करें। हमारी सब से बड़ी अभिलाषा यह होनी चाहिए कि हम अपने मनुष्यत्व का विकास करें-हम अपने जीवन को सुन्दर और ऐश्वर्यशाली बनावें। केवल जड़ द्रव्य ही में अपना सारा जीवन खोने के बजाय मानवी गुणों को सङ्गठित करने में हम अपने समय का अधिक उपयोग करें।

निश्चय कर लो कि दरिद्रता के विचार से हम अपने मुँह को मोड़ लेंगे। हम केवल हठाग्रह से समृद्धि ही की आशा रक्खेंगे-हम केवल पूर्णता ही के विचार को अपने पास फटकने देंगे—ऐश्वर्यशाली आदर्श ही को अपनी आत्मा में जगह देंगे, जो कि हमारी स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल है निश्चय कर लो कि हमें सुख समृद्धि प्राप्त करने में ज़रूर सफलता होगी। इस तरह का निश्चय, आशा और अभिलाषा तुम्हें वह पदार्थ प्राप्त करायेगी, जिसकी तुम्हें बड़ी लालसा है। हार्दिक अभिलाषा में उत्पादक शक्ति भरी हुई है।

सच बात यह है कि हम अपने ही संसार में रहते हैं। हम

अपने ही विचारों के फल हैं। हर एक मनुष्य अपने विचारानुसार अपने संसार को बनाता रहता है। वह अपने आसपास के वायु-मण्डल को या तो समृद्धि, ऐश्वर्य और पूर्णता से सुवासित रखता है या दरिद्रा, कमी और अभाव के विचारों से उसे गंदा और निरादर पूर्ण कर देता है।

ईश्वर के पुत्र-मानवगण इसलिए नहीं बनाये गये कि वे इधर उधर व्यर्थ ही मारे मारे फिरें—पर वे इस वास्ते बनाये गये हैं कि आकांक्षा करें। ऊपर की ओर देखें न कि नीचे की ओर। वे इस वास्ते नहीं बनाये गये हैं कि पड़े पड़े दरिद्रता-गरीबी ही में सड़ा करें। पर वे इस वास्ते बनाये गये हैं कि महान् और श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करें। शांति अधिराज परमात्मा के पुत्रों के भीतर पूर्ण श्रेष्ठता, पूर्ण सौंदर्य, पूर्ण महत्ता और पूर्ण ऐश्वर्य मौजूद है। पर दरिद्रता के भाव ने—विचारों की संकीर्णता ने—हमें संकीर्ण बना रक्खा है। यदि हम जीवन के आदर्श को ऊँचा बनाये रखें—यदि हम अपने ऐश्वर्य्य के लिए बराबर दावा करते हैं तो अवश्य ही हमारा जीवन परिपूर्ण और ऐश्वर्य्यशाली हो जायगा। परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम गरीब रहें, पर हमारे भावों की संकीर्णता के कारण—समारे जन्मसिद्ध आदर्श में नीचता आजाने के कारण—हमारी ऐसी शोचनीय दशा हुई है। मनुष्य की रचना और परिस्थिति का विचार करने से इस बात के सैकड़ों प्रमाण मिलते हैं कि वह अनन्त रूप से उन महान् और दिव्य पयार्थों के उपभोग के लिए बनाया गया है, जिन्हें मैं समझताहूँ आजकल का कोई विरला ही भाग्यशाली प्राप्त करता और उनसे आनन्द उठाता होगा।

क्यों न हम महान् और उत्तम चीजों की आशा करें, जब कि हम में ईश्वरीय गुण रक्खे गये हैं—जब कि हम ईश्वर के पुत्र कहे जाते हैं विश्व में जो कुछ सौंदर्य्य एवं सुख समृद्धि है वह ईश्वर की है और हम अवश्य ही उसके हक़दार हैं। अपने मन के भाव को पूर्णतया अच्छे पदार्थों की ओर अभिमुख कर लेना उन्हें मन वचन काया से न्योता देकर बुलाते रहना यही उनकी प्राप्ति का राजमार्ग है।

अवश्य ही वहाँ कुछ गलती—भूल होनी चाहिए जहाँ राजाओं के राजा परमात्मा के पुत्र और पुत्रियाँ विश्व की महान्—और दिव्य पदार्थों को उससे उत्तराधिकार पाने पर भी—अवर्णनीय समृद्धि से युक्त समुद्र के किनारे रहने पर भी—घर के द्वारों पर ऐश्वर्य के बहते रहने पर भी—वे भूखों मरते हैं—अपनी पेट की ज्वाला को नहीं बुझा सकते।

क्या हमारे जीवन की अवस्थाएँ, क्या हमारी आर्थिक दशा, क्या हमारे मित्र तथा शत्रु, क्या हमारी ऐक्य दशा तथा विरोध सब ही हमारे विचारों के फल हैं। यदि हमारा मानसिक भाव दरिद्रता के विचारों में मिल जायगा—यदि हमें अभाव सूझता रहेगा तो हमारी परिस्थिति भी इन्हीं के अनुकूल बन जायगी। इसके विपरीत यदि हमारे विचार खुले, उदार और विशाल होंगे उनमें सुखसमृद्धि के विचार गूँजते रहेंगे और अभिलषित सुस्थिति को प्राप्त करने के लिए मन, वचन, काया से हम प्रयत्न करते

रहेंगे तो हमारी परिस्थिति भी हमारे मनोवांछित पदार्थों के अनुकूल बन जायगी। जो कुछ हम अपने जीवन में प्राप्त करते हैं, वह हमारे विचार द्वारों में होकर आता है और उसी के समान उसका रूप, रंग और गुण भी होता है।

यदि हम देखें कि कोई मनुष्य किसी असाध्य तथा लम्बी बीमारी और अपरिहार्य दुर्दैव के न होने पर भी वर्षों से ग़रीबी से सताया जा रहा है, तो हम समझ लेंगे कि उसके मानसिक भावों में कोई भूल अथवा विकार प्रवेश कर गया है, जो उसे सफल होने नहीं देता।

यदि हम अपनी अवस्था से असन्तुष्ट हैं, यदि हमको ऐसा मालूम होता है कि हमारा जीवन कठोर है—हम भाग्यहीन हैं—यदि हम अपने भाग्य को दोष देते रहते हैं, तो इस बात को समझ लीजिए कि यह सब हमारे विचारों का और बहुत छोटे आदर्श का प्रकृत परिणाम है और इसमें हमारे सिवा और कोई दोषी नहीं है।

सुसंगत विचार ही हमारे जीवन को ठीक करते हैं, शुद्ध विचार ही हमारे जीवन को शुद्ध करता है और समृद्धि युक्त तथा उदार विचार ही उत्साहपूर्ण प्रयत्न का सहयोग पाकर इच्छित फल की प्राप्ति कराता है। यदि हम पूर्णतया सकल श्रेष्ठता के दाता, अनन्त ख़ज़ाने के मूल पर तथा उस शक्ति पर जो हमें खाने को देती है—हमारी आकांक्षाओं को पूरी करती है, जो हमें अपनी दशा सुधारने के लिए प्रेरणा किया करती है—विश्वास करें तब हमें यह जान ही न पड़ेगा कि कमतरता क्या चीज़ है।

मनुष्य जाति में यही एक बड़ा रोग है कि उसका दैवी

खजाने पर यथेष्ट विश्वास नहीं। हमें चाहिए कि हम उस दैवी खजाने के साथ वही सम्बन्ध रक्खें जैसे बच्चा अपने पिता के साथ रखता है। बच्चा रोटी खाते समय यह नहीं कहता "मैं इस डर के मारे कि फिर मुझे खाने को न मिलेगा, यह रोटी नहीं खाता।" पर वह इस विश्वास और भरोसे पर कि, 'मुझे खाने की कमी नहीं है' सब कुछ खा लेता है।

हमें अपने सम्भाव्य पर आधा भी विश्वास नही रहता। यही कारण है कि जो कुछ हमें प्राप्त होता है वह बहुत ही क्षुद्र परिमाण में होता है। हम उस ऐश्वर्य पर अपना दावा नहीं करते जिस पर हमारा अधिकार है। यही कारण है कि अपूर्णता संकीर्णता अथच कृशता हमारे जीवन को प्राप्त होती है। हम उदारतापूर्वक किसी वस्तु की माँग नही करते। हम क्षुद्र वस्तुएँ पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। ईश्वर की इच्छा है कि हम सुख-समृद्धि युक्त जीवन व्यतीत करें—जो वस्तु हमारे लिए है वह विपुलता से हमारे पास रहे। कोई मनुष्य दुःखी और दरिद्री न रहे। आवश्यक वस्तुओं का अभाव मानव-स्वभाव के अनुकूल नहीं है।

विचारों की एकता और सफलता

दृढ़तापूर्वक विचार कर लो कि तुम्हारी उस वस्तु के साथ एकता है, जिसकी तुम्हें जरूरत है। तुम अपने मन, वचन और काया को उस वस्तु की ओर लगादो। उसकी प्राप्ति में तिल मात्र भी सन्देह मत रक्खो। तुम्हें उसके प्राप्त करने में सफलता अवश्य होगी—तुम उसे अवश्य आकर्षित कर सकोगे।

गरीबी हमारा मानसिक रोग है। यदि तुम इससे पीड़ित हो

यदि तुम इस रोग के शिकार हो तो अपने मानसिक भाव को बदल दो और दुःख दरिद्रता और लाचारी के विचार मन में लाने के बजाय सुख, समृद्धि ऐश्वर्य, स्वाधीनता और आनन्द के विचारों से अपने मानसिक क्षेत्र को सुशोभित करो। फिर यह देखकर तुम्हारे आश्चर्य का पार न रहेगा कि तुम्हारा सुधार—तुम्हारी उन्नति—कितनी जोरों से हो रही है।

हमें विजय—सफलता—पूर्णतया मन की वैज्ञानिक क्रिया से प्राप्त होता है। जो मनुष्य समृद्धिशाली—सौभाग्यशाली होता है उसका पूर्णतया यह विश्वास रहता है कि मैं समृद्धिशाली एवं सौभाग्यशाली हो रहा हूँ। उसे अपनी पैसा कमाने की योग्यता पर विश्वास रहता है। वह अपने व्यवसाय को सन्देहान्वित और शंकाशील मन से शुरू नहीं करता। वह अपने समय को गरीबी की बातें तथा विचारों में नहीं गँवाता। वह दरिद्रता से लड़खड़ाता हुआ नहीं चलता और न वह गरीब सी पोशाक ही पहनता है। वह अपने मुख को उस वस्तु की ओर फेरता है जिसके लिए वह कोशिश कर रहा है, तथा जिसकी प्राप्ति में उसका पूरा विश्वास और दृढ़ निश्चय है।

देश में ऐसे हजारों गरीब लोग हैं जो अपनी गरीबी से अर्द्ध सन्तुष्ट हो गये हैं और जिन्होंने उसके विकराल पंजों से निकलने का प्रयत्न ही छोड़ दिया है। अब चाहे वे कितना ही कठिन परिश्रम करें, उन्होंने तो अपनी आशा खो दी है—स्वाधीनता प्राप्त करने की प्रत्याशा नष्ट कर दी है।

बहुत से मनुष्य ऐसे होते हैं जो गरीबी के डर से अपने आपको गरीब बना लेते हैं।

दुःख और दरिद्रता के विचार आत्मघातक हैं

दुःख दरिद्रता के विचार रख कर कौन से तत्व से आप समृद्धि को उत्पन्न कर सकते हैं? आप की दशा आपके मानसिक भावों के-आपके आदर्श के-अनुकूल रहेगी। क्या हमारे आदर्श और क्या हमारे मानसिक भाव—ये हमारी आत्मा में पैठ जाते हैं यदि वे दरिद्रता के विचारों से ग्रस्त होंगे तो हमारी दशा भी वैसी ही होगी।

मान लीजिए कि एक लड़का है जो वकीली के लिए प्रयत्न कर रहा है; पर उसे आशा नहीं है कि इसमें उसे पूरी सफलता मिलेगी तो जरूर वह अपने प्रयत्न में असफल होगा। हम वही पाते हैं जिसकी हम आशा करते हैं। यदि हम किसी की आशा न करें तो हमें कुछ भी न मिलेगा। नदी अपने उद्गमस्थान से ज्यादा ऊँची नहीं उठ सकती। जो मनुष्य गरीब होने की पूरी अथवा आधी आशा रखता है वह धनवान् कभी नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने सौभाग्य-सूर्य की ओर मुँह करके सीधा खड़ा रहे। विजय और सुख पर प्रत्येक मानव प्राणी के स्थायी स्वत्व हैं।

कुछ लोग पैसा कमाना चाहते हैं पर वे अपने मन को इतना संकुचित रखते हैं कि वे उसे विपुलता से नहीं पा सकते।

वह मनुष्य जो समृद्धि की आशा रखता है, हमेशा अपने मनोमन्दिर में समृद्धि को उत्पन्न करता रहता है और उसकी आर्थिक इमारत को बनाया करता है।

हमें चाहिए कि अब से हम सुख समृद्धि की नई मूर्ति—नया आदर्श बनावें। क्या हमने बहुत दिनों तक दरिद्रता, दुःख और

दुर्भाग्य के मालिक शैतान की आराधना नहीं की ? अब हमें इसी विचार पर जम जाना चाहिए कि हमें हर एक चीज देने-वाला ईश्वर ही है। यदि हम उसके साथ तल्लीन हो जावें उससे निकटस्थ सम्बन्ध कर ले तो परमात्मा के अटूट भण्डार से हर चीज़ विपुलता से हमें प्राप्त होगी और हमें किसी प्रकार की कमी न रहेगी।

गरीब मनुष्य वह नहीं है जिसके पास थोड़ी-सी जायदाद है वा जिसके पास कुछ जायदाद नहीं; पर गरीब वह है जो दरिद्रता के विचारों से ग्रस्त है; जिसकी सहानुभूति में दरिद्रता झलकती है; जिसके विचारों में दरिद्रता की झलक दीख पड़ती है; जिसके गुण-ग्रहण की शक्ति में दैन्य का अभाव दीखता है; जो आत्म-पतन का अपराध करता है। वह मानसिक दरिद्रता, अर्थहीनता ही है जो हमें गरीब बनाती है।

कितने थोड़े लोग इस बात को जानते हैं कि मन के साह-सिक कार्य में कितनी गजब की शक्ति भरी हुई है। दृश्य संसार में प्रकट होने के पहले हर चीज़ मानसिक संसार में प्रकट होती है। यदि हम किसी पदार्थ को अपनी मानसिक सृष्टि में अच्छी तरह निर्माण कर सकेंगे तो दृश्य सृष्टि में भी हम उसे अच्छी तरह बना सकेंगे।

धनवान होने का असली रहस्य

कोई भी करोड़पति पहले मानसिक सृष्टि में समृद्धिशाली स्थिति को उत्पन्न करता है जिससे समृद्धि उसकी ओर प्रबल वेग से जा पहुँचती है। बड़े-बड़े समृद्धिशाली पुरुष अपने हाथ से बहुत कम काम करते हैं, पर वे विशेषतया अपने मन में समृद्धि

की इमारत को खड़ी करते हैं। वे कार्य्य कर स्वप्नों को देखते रहते हैं, वे अपने मानसिक प्रवाह को अनन्त शक्ति के महासागर की ओर प्रवाहित करते रहते हैं और अपने आदर्श-अपनी अभिलषा के अनुकूल फलों को उसमें में निकालते रहते हैं।

समृद्धि के नियमों को यथोचित रीति से पालन करने से जैसा प्रत्यक्ष लाभ होता है, वैसा कंजूसी करके एक-एक कौड़ी जोड़ने से नहीं होता। कंजूसी से हमारी आत्मा मलीन, संकीर्ण, एवं अनुदार हो जाती है और इससे हमें विशेष लाभ भी नहीं होता। हम अपने मनोयोग की ओर जाते हैं। यदि हम अपने मन को दुःख, दरिद्रता और लाचारी की ओर लगावेंगे तो हमें इन्हीं सी दशा प्राप्त होगी।

सौभाग्य और समृद्धि को प्रायः हम इसी मतलब में लेते हैं कि हर चीज जो हमारे लिए लाभदायक है हमें मिलती रहे। आत्मा को प्रकाशित करने वाली प्रत्येक वस्तु हमें विपुलता से प्राप्त होती रहे। उन चीजों का हमारे पास भण्डार रहे जो श्रेष्ट और अत्युच्च हैं। सौभाग्य—समृद्धि—उस हर पदार्थ का नाम है जो हमारे व्यक्तित्व हमारे अनुभव को वैभवशाली बनाता रहे।

सच्चा सौभाग्य—सच्ची समृद्धि—तो आत्मिक वैभव—आत्मिक पूर्णता का—आन्तरिक ज्ञान ही है।

कार्य और आशा

समृद्धि का आरम्भ पहले मन में होता है और जब तक मानसिक भाव उनके अनुकूल नहीं हो लेते तब तक उसकी प्रत्यक्ष सिद्धि होना असम्भव है। यह बात बहुत बुरी है कि काम करना किसी एक पदार्थ के लिए और आशा रखना किसी दूसरे की। जब तुम्हें पद पद पर असफलता दीखती है, तब बताओ कि विजयद्वार में तुम्हारा प्रवेश कैसे हो सकेगा?

बहुत से लोग जीवन को ठीक मार्ग पर नहीं लगाते। वे अपने प्रयत्न के अधिकांश भाग को निर्बल और शक्तिहीन बना देते हैं, क्योंकि वे अपने मानसिक भाव को अपने प्रयत्न के अनुकूल नहीं बनाते अर्थात् वे काम तो किसी एक पदार्थ के लिए करते हैं और चाहते हैं किसी दूसरे को। हाथ में लिये हुए कार्य के विपरीत मानसिक भाव रखने से, वे उस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। वे इस कार्य को इस निश्चय से हाथ में नहीं लेते कि इसमें हमें अवश्य सफलता और विजय प्राप्त होगी। यही कारण है कि उन्हें सफलता और विजय का आनन्द नहीं मिलता; क्योंकि सफलता और विजय के लिए दृढ़ निश्चय हो जाना ही मानो उसके लिए क्षेत्र तैयार करना है।

एक ओर तो हम धन की आकांक्षा करते रहते हैं और दूसरी ओर यह कहते रहते हैं कि क्या करें गरीब हैं, दरिद्र हैं।

इसका मतलब और कुछ नहीं केवल अपनी धन कमाने की योग्यता को कम करना है। ऐसे मनुष्यों के लिए यह कहना अनुचित न होगा कि ये जाना चाहते हैं तो पूर्व की ओर पर पश्चिम की ओर अपने पैरों को आगे बढ़ा रहे हैं।

ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो मनुष्य को उस दशा में सफलता लाभ करने में सहायता करे, जब वह अपनी तत्सम्बन्धिनी योग्यता-शक्ति पर सन्देह कर रहा हो और यों असफलता के तत्वों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा हो।

वे मनुष्य जो सफलता-विजय—प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें विचार भी इन्हीं बातों के करने चाहिएँ। उन्हें सुख, समृद्धि, उन्नति और सफलता के ही विचार करना चाहिए।

जिस ओर तुम अपना मुँह करोगे उसी दिशा को तुम जाओगे। यदि तुम दरिद्रता—कायरता की ओर मुँह करोगे तो तुम्हारी गति इन्हीं की ओर होगी। इसके विपरीत यदि इनकी ओर से अपना मुँह मोड़ लोगे—इन्हें धिक्कारोगे-इनका विचार करना छोड़ दोगे—इनकी बात को मुँह पर न लाओगे तो तुम्हारी उन्नति होने लगेगी-समृद्धि के आनन्द-प्रद भवन में तुम्हारा प्रवेश होने लगेगा।

बहुत से मनुष्य विपरीत भावना से—उल्टे इरादे से कार्य करते हैं, अर्थात उन्हें समृद्धिशाली होना जँचता है, पर उनके हृदय में यह विश्वास नहीं होता कि हम ऐसे कैसे हो जावेंगे। यही कारण है कि सफलता उनके लिए असम्भव-सी हो जाती है। सच है, हमारी दरिद्रता और अर्थहीनता के भाव ही ने—हमारे संशय और भय ही ने—हमारे आत्म-विश्वास की कमी ने—अनन्त

ऐश्वर्य के अविश्वास ही ने—हमें गरीब, दरिद्री और लाचार बना रक्खा है।

तुम गरीब सा आचरण मत करो जब कि तुम अपनी सारी शक्ति को पैसा कमाने में खर्च कर रहे हो। तुम्हें चाहिए कि तुम अपने मन का भाव ऊँचा और समृद्धि युक्त रक्खो। यदि तुम अपने आस पास के वायुमण्डल को बुरे विचारों से गंदा रक्खोगे, तो तुम्हारे मन में भी वैसा ही संस्कार जम जायँगे और कभी तुम अपनी ओर धन को आकर्षित नहीं कर सकोगे।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि भेड़ जितनी वार वें-वें करता है, उतनी ही बार वह अपने मुँह का ग्रास खो देता है। यही बात तुम पर भी घट सकती है। हर समय जब कि तुम अपने भाग्य को दोष देते रहते हो कि मैं गरीव हूँ, मैं वह नहीं कर सकता जो दूसरा करता है, मैं कभी धनवान् न होऊँगा—मुझ में दूसरों सी बुद्धि नहीं है—मेरी आशा और सफलता पर पानी फिर चुका—दैव मेरे विपरीत है अपने आप पर विपत्ति का पहाड़ गिराते हो और सुख शांति को लूटनेवाले शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के मार्ग को ज्यादा कठिन बनाते जा रहे हो; क्योंकि जितनी वेर तुम उनके विषय में विचार करोगे, उतने ही उनके संस्कार तुम्हारी आत्मा में बैठते जावेंगे।

ये विचार चुम्बक हैं, जो अपने सम पदार्थों को आकर्षित करते हैं। यदि तुम्हारा मन गरीबी और आधिव्याधि ही के विचारों में रमता रहेगा तो तुम्हें अवश्य ही गरीबी और व्याधि से तंग होना पड़ेगा। इस बात की संभावना नहीं हो सकती कि तुम जिस तरह के विचार रखते हो उनके परिणाम उन विचारों के

विपरीत हों; क्योंकि तुम्हारा मानसिक भाव ही उस इमारत का नमूना है, जो तुम्हारे जीवन में बनती है; तुम्हारी कार्य्यनिपुणता का आरम्भ पहले तुम्हारे अपने मन ही में होता है।

यदि तुम हमेशा क्षुद्र व्यवसाय—तुच्छ व्यापार ही का—विचार करते रहोगे, उसी के लिए तैयारी करते रहोगे, उसी की आशा लगाए रहोगे, और हमेशा झींखा करोगे कि क्या करें वक्त बड़ा नाजुक आ गया है, व्यापार मद्दा होता जा रहा है तो समझ लो कि इसका परिणाम तुम्हारे लिए बड़ा ही घातक होगा, व्यापार की उन्नति के सब द्वार तुम्हारे लिए बन्द हो जावेंगे। सफलता—कामयाबी—प्राप्त करने के लिए तुम चाहे जितना सिरतोड़ परिश्रम करो, पर यदि तुम्हारा विचार असफलता के भय से ग्रस्त होगया है तो समझ लो कि यह विचार तुम्हारे परिश्रम को बे काम कर देगा—तुम्हारे प्रयत्न को पंगु बना देगा। इससे विजय—सफलता पाना तुम्हारे लिए असम्भव हो जायगा।

इस बात का डर रखने से कि कहीं हम असफल—नाकामयाब—न हो जावें—हम तंगी में न आ जावें—हम लाचार न हो जावें, हजारों मनुष्य अपनी इष्ट सिद्धि से अर्थात् उन पदार्थों से जिनकी वे चाह करते हैं बिल्कुल कोरे हाथ रह जाते हैं। क्योंकि इस तरह के डर से वे अपनी शक्ति को पंगु बना देते हैं। फिर उन्हें सफलता कैसे प्राप्त हो सकती है?

आशावाद और निराशावाद

हमें चाहिए कि हरएक पदार्थ को ऐसे पहलू में देखें जो उज्ज्वल, आशाजनक और निश्चयात्मक हो। हमें विश्वास कर लेना चाहिए कि जो कुछ होगा अच्छा ही होगा। सत्य की

हमेशा विजय होगी। हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि सत्य असत्य पर विजयी होगा। हमें जान लेना चाहिए कि एकता और स्वास्थ्य ही सत्य है और विरोध और व्याधि असत्य है—मानवी स्वभाव के प्रतिकूल है। ऐसे दिव्य विचार रखने से हम आशावादियों की शुभ श्रेणी में आ जावेंगे। क्योंकि आशावादियों के ही ऐसे विचार होते हैं। इन्हीं विचारों से संसार में एक प्रकार का अलौकिक सुधार हो जाता है।

आशावाद मानव प्राणियों के लिए अमृत है। जैसे सूर्य से वनस्पति को लाभ होता है अथवा यों कहिए कि जीवन प्राप्त होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यों में जीवन शक्ति का संचार होता है। यह एक मनोसूर्य का प्रकाश है जो हमारे जीवन को बनाता है—सौंदर्य की अलौकिक छटा से उसे विभूषित करता है और उसका विकास करता है। मानसिक शक्तियाँ इस प्रकाश से वैसे ही फलती फूलती हैं जैसे सूर्य के प्रकाश से वनस्पतियाँ।

निराशावाद का परिणाम ठीक इसके उल्टा होता है। यह भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है—जो हमारी बढ़ती नहीं होने देता।

जो मनुष्य हर पदार्थ की अन्धकारमय बाजू को देखता है—जो हमेशा बुराई और असफलता ही के वचन मुँह से निकालता रहता है—जो केमल जीवन के अन्धकारमय एवं अप्रीतिकर अंश ही को देखता रहता है, उसकी राह दुःख और दारिद्र हमेशा देखते रहते हैं।

किसी पदार्थ में यह शक्ति नहीं है कि वह उस पदार्थ को खींचे जो कि उसके विपरीत गुणवाला है। हर पदार्थ अपने गुण

ही को प्रकाशित करता है, और उन्हीं चीजों को अपनी ओर आकर्षित करता है जो कि उसके समान गुण धर्म वाले होते हैं। यदि कोई चाहे कि मैं सुखी और समृद्धिशाली होऊँ तो उसे चाहिए कि वह सुख समृद्धि ही के विचार किया करे—इफरात के ख्याल से अपने मन को हरा भरा करता रहे—अपनी आत्मा को उदार बनाता जावे। जिसे गरीबी का भय है, उसके पीछे गरीबी भी हाथ धोकर पड़ती है।

यदि तुम सुख प्राप्त करना चाहते हो, तो दुःख के विचार को हटा दो; यदि तुम धन प्राप्त करना चाहते हो तो गरीबी के ख्याल को तिलांजलि दे दो। जिन पदार्थों से आप भय रखते हों, उनसे किसी तरह का अपना सम्बन्ध मत रखो। वे तुम्हारी उन्नति के—तुम्हारे विकास के—घोर शत्रु हैं। उनका समूल नाश कर दो। अपने मन से उन्हें निकाल दो। उन्हें भूल जाओ। आप अपने मनोमन्दिर में उन पदार्थों के विचारों को जगह दो जिनको आप चाहते हों; जिनकी प्राप्ति से आपकी आत्मा सन्तुष्ट और आनन्दित होती हो, फिर यह देखकर आपके आश्चर्य का पार न रहेगा कि वे पदार्थ जिनकी आप बाट जोह रहे थे आपकी ओर खिंचे हुए आ रहे हैं।

हम अपने कार्य्य के लिए—उद्देश के लिए-जैसा अपना मनोभाव बनाते हैं उसका उनके साथ अर्थात् उस कार्य और उद्देश्य के साथ गहरा सम्बन्ध हो जाता है। यदि आप यों झींखते हुए किसी काम पर जाते हों कि 'क्या करें मजबूरन ऐसा क्षुद्र काम करना पड़ता है, इसमें बड़ी ही परेशानी है, इससे हम कैसे तरक्की पा सकेंगे ? क्या भगवान ने एसा काम हमारे सिर रखकर जन्म

भर ही के लिए रूखी सूखी रोटी हमारे पल्ले बाँधी है ? क्या हम हमेशा ही कड़ी धूप में काम किया करेंगे ? क्या हमें कभी भी आराम न मिलेगा ? क्या हम हमेशा ही गरीबी में सड़ा करेंगे ?" तो निश्चय समझलो कि इस तरह के थोथे विचार तुम्हें उन्नति से बहुत दूर रक्खेंगे ? तुम ऐसी ही परेशानी की हालत में सड़ा करोगे।

इसके विपरीत यदि आप अपने भविष्य को प्रकाशमान देखते रहोगे, यदि आप यह विश्वास कर लोगे कि शीघ्र ही इस क्षुद्र काम से निकलकर हम उन्नति के शिखर पर पहुँचने वाले हैं, हम अपने क्षुद्र जीवन से निकल कर उस समुन्नत जीवन में जा रहे हैं, जहाँ सौन्दर्य, शान्ति और आनन्द भरे हुए हैं और यदि आपकी अभिलाषाएँ निर्दोष हैं और आप अपनी आँखों को अपने उस चरम उद्देश्य पर लगाए हुए हों, जिसके लिए आपको यह विश्वास है कि वह अवश्य ही सफल होगा और यदि आपको यह विश्वास है कि आप में वह योग्यता है जिससे आप उसे सफल कर सकते हों तो आपको सफलता ज़रूर प्राप्त होगी।

यदि हम अपने मन में यह निश्चय कर लें कि कभी न कभी हम अमुक कार्य को अवश्य ही पूरा कर सकेंगे—हम अपने उद्देश पर दृढ़ता से जमे रहेंगे और इस बात का पक्का भरोसा हो जाय कि कहीं भी किसी तरह हम उसे सफलतापूर्वक सिद्ध कर सकेंगे, तो हमारे मन में वह उत्पादन-शक्ति आ जायगी जो हमारे मनोवांछित फल को प्राप्त कराने में हमारी बड़ी सहायक होगी।

मैंने ऐसा एक भी मनुष्य नहीं देखा कि जिसको अपनी आत्मा में विश्वास होते हुए भी—हाथ में लिये हुए कार्य को पूरा

करने की योग्यता पर पूरा भरोसा होने पर भी—अपने उद्देश की ओर निरन्तर अपनी आँख रखते रहने पर भी—उसकी प्राप्ति के लिए उचित प्रयत्न करने पर भी—सफलता—विजय प्राप्त न हुई हो। उच्चाभिलाषा पहले आत्म-प्रेरणा के रूप में परिणत होती है और फिर सिद्धि के रूप में।

हमेशा इस बात का यत्न करते रहो कि तुम्हारे विचार उच्च और महत् बने रहें। जो कुछ तुम करना चाहते हो उसके लिए कभी संशय मत करो।

संशय बड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक-शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्ति-हीन कर देते हैं। तुम अपने हृदय पर हाथ रख कर अपने आपको यह सूचना करते रहो कि जिसकी जरूरत मुझे है वह मुझे अवश्य ही मिलेगा, यह मेरा अधिकार है और उसे प्राप्त करने मैं चला हूँ।

हमेशा अपने मन में ये विचार रक्खो कि हम सफलता के लिए—विजय के लिए—सुस्वास्थ्य एवं सुख के लिए—और परोपयोग के लिए बनाये गये हैं और हमें इनसे कोई विहीन नहीं रख सकता। इस तरह के आशामय उद्‌गारों को बार बार दोहराने की अपनी आदत डाल दो। अपनी अन्तिम विजय पर निश्चयात्मक विचार प्रकट करने की अपनी बान बनाओ, और इसका चमत्कारिक फल देखो कि आपका मनोवांच्छित पदार्थ किस तरह आपकी ओर खिंचा हुआ चला आ रहा है पर यहाँ एक बात का स्मरण रखो कि तुम्हारे उद्गारों में—तुम्हारे में—तिलमात्र भी संशय न घुसने पावे।

शक्तिसागर परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि मनुष्य

अपनी परिस्थिति के हाथ का कठपुतला वना रहे-अपनी आस-पास की दशा का गुलाम वना रहे—पर उसकी यह इच्छा है कि मनुष्य अपनी परिस्थिति को आप बनावें—अपनी स्थिति को आप उत्पन्न करे।

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारी सेविकाएँ हैं। जो कुछ हम उनसे चाहते हैं, वे हमें वही देती हैं। यदि हम उस पर विश्वास रक्खें, इनपर अवलंवित रहें, तो वे अपनी उमदा से उमदा चीजें हमें देंगी।

जिन लोगों की प्रकृतियाँ निषेधात्मक रहती हैं वे इस वात की राह देखा करते हैं कि देखें क्या होता है? ऊँट किस करवट वैठता है। उनमें यह शक्ति नहीं रहती है कि वे हर पदार्थ को अपने अनुकूल बना लें।

वह निश्चयात्मक प्रकृति ही है कि जिससे दुनिया के वड़े वड़े काम हुए हैं। इससे मनुष्य अपना मन-चाहा काम कर सकता है।

प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि बहुत से मनुष्य वाहरी प्रभाव से अपनी निश्चयात्मक प्रकृति निषेधार्थक प्रकृति में बदल देते हैं। वे अपने आत्म-विश्वास को खो देते हैं। उनका स्वशक्ति से विश्वास उठता जाता है क्यों कि वे लोगों के निराशाजनक वचनों से प्रभावित हो जाते हैं, लोगों से वे हमेशा अपूर्णता के विचार सुना करते हैं। लोग उन्हें कहा करते हैं कि तुम्हें अपने व्यवसाय का ज्ञान नहीं। तुम उस व्यवसाय के योग्य नहीं हो जिसे अभी तुम कर रहे सो। इससे उनकी प्राथमिक शक्ति मारी जाती है और फिर वे किसी कार्य को पहले जैसे उत्साह से

नहीं करते । वे अपनी निर्णय करने की शक्ति को खो देते हैं, किसी महत्वपूर्ण कार्य का निर्णय करने से डरते हैं । उनका मन ठिकाने नहीं रहता । इस तरह वे नेता होने के वदले अनुयायी हो जाते हैं ।

आत्मा की अलौकिक शक्ति

हमारी आत्मा में एक वड़ी अलौकिक शक्ति भरी हुई है, जिसका विवेचन हम नहीं कर सकते, पर जिसका अनुभव हमें होता है । वह हमारी आज्ञाओं को मानती ; , हमारे निश्चय को परिपुष्ट करती है ।

मान लीजिए कि यदि हम यह विचार करें–यह मान वैठें कि हम नाचीज़ हैं–तुच्छ हैं–क्षुद्र हैं—हीन कीड़े हैं, "हम दूसरों के समान नहीं हैं" तो हमारी आत्मा के रजिस्टर में ये सव वातें लिख ली जायँगी और उसका परिणाम यह होगा कि हम सच-मुच वैसे ही वन जावेंगे । यदि हम तंगी के कमज़ोरी के–अयो-ग्यता के–अकर्मण्यता के विचारों ही को प्रकट करते रहेंगे तो इनका प्रतिविम्व हमारी आत्मा में पड़ेगा, जो वड़ा ही अशुभ है।

इसके विपरीत यदि हम निश्चयपूर्वक यह मानें कि विश्व की तमाम अच्छी चीज़ों के हम अधिकारी हैं–उन पर हमरा स्वाभा-विक हक है और यदि हमें अपने ऐश्वर्य पर दृढ़ विश्वास है, हम दृढ़ता से इस वात की श्रद्धा रखते हैं कि हम अपने जीवनोद्देश को भली भाँति पूरा कर रहे हैं–यदि हमारा यह निश्चय है कि शक्ति मेरी है, स्वास्थ्य मेरा है आधि व्याधि, निर्वलता और विरोध से मेरा कोई सम्वन्ध नहीं है तो मानो हम अपने मन में ऐसी उत्पादक और निश्चयात्मक शक्ति को उत्पन्न कर रहे हैं जो हमारी

सब अभिलाषाओं को—सकल मनोरथों को—ऊँचे जीवनोद्देश को हरा भरा कर सफल करेगी; हमारा पतित दशा से उद्धार करेगी।

विचार दो तरह के होते हैं। एक वे जो हमारे शरीर को—हमारे मन को—हमारी आत्मा को—परिपुष्ट और पूर्ण करते हैं—उनमें दिव्यता लाते हैं—आनन्द, उत्साह और तेज की उनमें वर्षा करते हैं। और दूसरे वे जो हमारे शरीर को, हमारी आत्मा को गिराते हैं—उन्हें निर्बल और हीन करते हैं-दुःख, दरिद्रता, आधि व्याधि के दुर्भाव से उन्हें गन्दा करते हैं। जहां पहले तरह के विचार हमारे रक्षक हैं वहाँ दूसरे प्रकार के विचार हमारे भक्षक हैं।

हमारी विचार-शक्तियों में कितना बल है—कितना दृढ़ाग्रह है, इस बात से हम अपनी कार्य-सम्पादिका शक्ति का परिमाण जान सकते हैं। बहुत से मनुष्यों की विचार-शक्ति इतनी कमजोर इतनी निर्बल—होती है कि वे अपने मन को आवश्यक कार्य कर बल से सुसंगठित नहीं कर सकते। इससे वे संसार में अधिक कार्य नहीं कर सकते।

हम किसी मनुष्य से मिलते ही यह बात कह देंगे कि उसकी विचार-शक्ति प्रबल है या निर्बल। क्योंकि उसके मुँह से निकलने वाले शब्दों से इस बात का पता चल जायगा।

बहुत से मनुष्यों की विचार-शक्ति ऐसी प्रबल होती है कि दूसरों पर वे अपना प्रभाव तत्काल जमा लेते हैं। उनके दर्शनों से लोगों में नवीन जीवन का संचार होने लगता है। दुनिया अपने आप ऐसे मनुष्यों के लिए रास्ता कर देती है। संसार में वे शक्ति का प्रकाश करते हैं। संसार का वे संचालन करते हैं।

उनके शब्दों से संसार के बड़े-बड़े कार्य हो जाते हैं। क्योंकि लोगों में एक स्वाभाविक गुण रहता है कि वे उच्च आत्मा की आज्ञा पालन करने में आपका अहोभाग्य मानते हैं।

जब हम किसी सच्चे महात्मा से—दिव्य पुरुष से—मिलते हैं, चाहे उसकी और हमारी पहले जान पहचान न रही हो तो भी उसके दर्शनमात्र से हमें ऐसा मालूम होने लगता है मानो यह हमारे शरीर में एक प्रकार की अलौकिक भावना का—दिव्य जीवन का संचार कर रहा है। उस समय हमारे हृदय पर एक अद्भुत प्रभाव पढ़ने लगता है। उनके विषय में हमें यह तत्काल मालूम होने लगता है कि इनमें नेता होने की शक्ति मौजूद है। इनमें वह शक्ति विद्यमान है जो सृष्टि का संचालन कर सकती है। ऐसे पुरुष के लिए हमें विश्वास होने लगता है कि इसकी कार्यसफलता में कोई भी बाधा उपस्थित नहीं कर सकता। इसके विपरीत जब हम किसी संकीर्ण हृदय वाले मनुष्य से मिलते हैं तो उसके हृदय का हम पर निर्बल और निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है। उसको देखते ही हमें मालूम होने लगता है कि इसका अधःपतन हो चुका—यह अपने पथ पर प्रकाश नहीं डाल सकता। यदि तुम चाहते हो कि लोगों को हमारी शक्ति का परिचय मिले तो तुम अपनी शक्तियों का विकास करो।

सब विद्याओं में यह शिरोमणि विद्या है कि हम अपने जीवन को स्थायी सफलता और विजय से विभूपित करें और यह कार्य कठिन नहीं है, यदि हमारा जीवन ठीक तरह संस्कृत किया जाय।

यदि कोई ग्रेजुएट उक्त विद्या का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही

संसार में प्रवेश करता है, तो समझ लो उसका नाश—उसकी असफलता—बहुत दूर नहीं है। उसके संशय, उसके भय, उसकी आत्मविश्वास की न्यूनता—उसकी डरपोक और निपेधात्मक प्रकृति उसके मन को निपेधात्मक बनाकर उसकी निश्चयात्मक उत्पादक और स्वाभाविक शक्ति को सम्पूर्णतया नष्टकर देंगे और उसे बहुत ही बुरी स्थिति में ला पटकेंगे।

सारे संसार के दर्शन शास्त्र और भाषायें जानने से विद्यार्थी को यह जानना विशेष लाभदायक है कि मैं अपने मन को निश्चयात्मक रखकर किस तरह अपनी सर्वोच्च उत्पादक शक्ति की उन्नति करूँ।

प्राय: हम देखते हैं कि बहुत से कालेजों में उपाधिधारी ग्रेजुएट इस कारण असफल हो जाते हैं कि उन्होंने अपनी मानसिक प्रकृति को निषेधात्मक बना रक्खी है। हम समझते हैं कि असंस्कृत और अविकसित मानसिक शक्ति के रहते हुए और वर्षों तक शक्तियों को संस्कृत करना और अपनी कमजोर और लूली प्रकृति को वैज्ञानिक रीति से सुसंगठित करना कहीं अधिक श्रेयस्कर है; क्योंकि ऐसा करने से हम कालेज के पठन-पाठन में भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त कर सकते हैं और अपने भावी संसार को सफलता प्राप्त करा सकते हैं और अपने भावी संसार सफलतामय और सुखमय बना सकते हैं।

निश्चयात्मक विचारों का प्रभाव

निश्चयात्मक विचार से निर्माण-शक्ति का विकास होता है, जो कि अन्य सब मानसिक शक्तियों से विशेष महत्वपूर्ण है। यदि आपका मन निषेधात्मक प्रकृति की ओर झुक रहा है—

यदि आप में किसी कार्य के आरम्भ करने की शक्ति का अभाव है और आप चाहते हों कि हममें निर्माण-निर्मित शक्ति का विकास हो तो इसका अच्छा उपाय यही है कि आप अपने मन को उपरोक्त दुष्प्रकृति से हटाकर हर वस्तु की ओर निश्चयात्मक दृष्टि से देखिए—अपने मन को उत्पादक शक्ति की ओर झुकाइए। यह बात उस दशा में भी हो सकती है, जब आप वाह्य कार्य से निवृत्त होकर आराम कर रहें हैं। निषेधात्मक विचार हमेशा कमजोरी को पैदा करने वाले हैं। सचमुच यह बहुत अच्छी बात है कि हम अपने मन को कुछ समय तक बाह्य प्रपञ्चों से निवृत्त रक्खा करें—समय-समय पर उसे आराम लेने दें। निषेधात्मक मन और निवृत्त मन में बड़ा फरक है। जहाँ निषेधात्मक मन दोषपूर्ण है, वहाँ निवृत्त मन निर्दोष है।

हम अपने मनोक्षेत्र में जैसे बीज बोते हैं, वैसे ही वृक्ष उगते हैं। यदि हम उसमें दुःख, दरिद्रता, द्रोह, वैर, विरोध के बीज बोयेंगे तो फल भी इन्हीं के निकलेंगे। और यदि हम उसमें सुख, सन्तोष, समृद्धि, ऐक्य, प्रेम, दया और सहानुभूति के विचार बोएँगे तो फल भी इन्हीं से मीठे और सुमधुकर निकलेंगे।

विचार कर लो-मन, वचन और काया से इस बात को मान लो-कि अब भी हम वैसे ही मनुष्य हैं जैसे कि हम होना चाहते हैं; जैसा कि हमारा आदर्श है। हम कमजोर नहीं, निर्बल नहीं, दरिद्र नहीं, पर शक्तियुक्त समृद्धियुक्त और महान् आत्मा हैं। ऐसा करने से थोड़े ही दिनों में आपको मालूम होगा कि आपके आदर्शों की सिद्धि बड़ी शीघ्रता के साथ आपकी आत्मा में हो रही है-उन आदर्शों से आपका चरित्र परिपुष्ट हो रहा है।

हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमें ऊंचा चढ़ावें और हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमारी आत्मा में दिव्यता लावें। हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो विकास पर दिव्य प्रकाश डालें। हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमारी निर्माण-शक्ति को तेज करें और हमारी अकर्मण्यता और दुःख दारिद्र्य का नाश करें।

जिस समय भूमि की, वायुमण्डल की, सूर्य के प्रकाश की, और वर्षा की रासायनिक शक्ति पौधों और पेड़ों पर अपना रासायनिक प्रभाव डालना छोड़ देती है, तभी से उनके नाश का सूत्रपात होता है। उनमें वे नाशकारी कीटाणु घुसने लगते हैं जो उनके नाश के कारण होते हैं। इसी तरह मनुष्य में जब उत्पादक शक्ति का—उस शक्ति का जो उसके आत्मा मन और शरीर को सुसंगठित करती है—आविर्भाव होना बन्द हो जाता है, तब उसकी दशा भी ठीक इन्हीं पौधों जैसी होने लगती है—नाशक तत्व उसको खाने लगते हैं।

जब मनुष्य अपने मन के भाव को सुनिश्चित कर लेता है, तब उसमें दूसरे लोगों की बुरी विचार-प्रेरणा से बचने की शक्ति आ जाती है। जैसे तुम किसी ऐसी स्थिति में रखे गये जहाँ तुम्हें बुरे विचार सुनने को मिलते हैं—चहुँ ओर से बुरे ही बुरे दृश्य तुम्हारी नज़र में पड़ रहे हैं, ऐसी दशा में यदि तुमने अपने मन को उस शक्ति से सम्पन्न कर रक्खा हो जो तुम्हें इनके कु-प्रभावों से बचाती रहे, तो तुम इनके विघातक पंजों से रक्षा पा सकते हो।

इसके विपरीत यदि हम अपने मनोभाव को बुराई के अनु-

कूल बनावें, यदि हम उसे बुराई का ग्राहक बनावें, यदि हम अपने मन से उसको प्रोत्साहन दें, उसका आदर करें, तो यह हम पर अपना जबरदस्त प्रभाव जमाना शुरू कर देगा।

यदि हम अपने मन को अपने उद्देश्य की ओर झुकाए रखें यदि हम अपने जीवन-प्रवाह को और अपनी आत्मिक शक्तियों के स्रोत को अपने चरमोद्देश्य की ओर बहावें—तो हमें वह अलौकिक साधन प्राप्त होगा, जिससे हम अपने इष्ट की सिद्धि कर सकेंगे।

विरोध को उत्पन्न करने वाला विचार हमारे परिश्रम को पंगु कर देता है। यदि हम कार्य-सम्पादन-शक्ति को उत्पन्न करना चाहते हैं, तो हमें तल्लीनता, एकता, मानसिक-शान्ति और विचार स्वातन्त्र्य को उत्पन्न करना चाहिए। इसी बात को हम दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि हमारा विचार-प्रवाह जीवन नाशक होने के बजाय जीवनप्रद होना चाहिए। वह मानसिक प्रवाह जो धैर्य से भरा हुआ है आत्म-विश्वास से पूर्ण है, मानो विद्युत शक्ति युक्त मानसिक बल है जो सफलता और विजय को हमारी ओर आकर्षित करता है।

बहुत से मनुष्य जो असफलता और पराजय के पंजे में फंसे हुए हैं वे आसानी से उससे अपने आपको मुक्त कर सकते हैं, यदि वे अपने मन से इस तरह के विचारों को हटा लें। अपने मन को भय, चिन्ता, दारिद्य, आधिव्याधि से साफ करना और उसे प्रबल, आशाजनक और उन्नति विचारों से भरना—यह भी एक उत्कृष्ट विद्या है।

हमारे मानसिक भावों का—हमारी आशाओं का—हमारी

कीर्ति का, हमारी सफलता से, घनिष्ठ सम्बन्ध है। दूसरे लोग हमें कैसे गिनते हैं, इस बात से भी हमारी सफलता का सम्बन्ध है। यदि दूसरे मनुष्य हमारा विश्वास न करते हों—यदि वे हमें निर्बल और भीरु मानते हों—तो समझ लेना चाहिए कि हमारा मानसिक प्रकाश मन्द है—हमारी मानसिक शक्ति कमजोर और निर्बल है और हम महत्व के पद पर न पहुँच सकेंगे।

जो मनुष्य विजयी जीवन व्यतीत करता है—संसार में विजयी होकर घूमता है—उसमें और उस मनुष्य में जो दास होकर–परतन्त्र होकर–संसार में रहता है, बड़ा फर्क है।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट थियेडर रुजवेल्ट जैसे महानुभावों की, जो चहुँ ओर अपनी शक्ति का प्रकाश फैलाते हैं, आप उन लोगों से तुलना करेंगे जो डरपोक हैं, निर्बल हैं, दासत्व भाव रखने वाले हैं, जिनका प्रभाव दुनिया पर बहुत कम पड़ता है, तो आपको दोनों का फर्क मालूम हो जायगा। संसार उस मनुष्य का–उस वीर का–सम्मान करता है–आदर करता है–पूजा करता है जो दास नहीं पर विजयी होकर निकलता है, जो दुनिया को इस बात का विश्वास करा देता है कि विजय अवश्यम्भावी है।

अपनी शक्ति पर विश्वास लाना ही संसार में उसका प्रकाश करना है। यदि तुम्हारे मानसिक भाव में शक्ति की स्फूर्ति नहीं होती है तो दुनिया तुम्हें शक्तिशाली के पद से सम्मानित नहीं करती है।

कुछ लोगों को इस बात का आश्चर्य होता है कि समाज में वे इतने तुच्छ क्यों गिने जा रहे हैं; क्यों उनका महत्व नहीं बढ़ता?

इसका कारण यही है कि वे अपने आप को विजयी नहीं मानते, न विजयी सा आचरण ही करते हैं।

वे अपने मन में विजय के उत्साही विचारों का प्रवाह नहीं बहाते। वे हमेशा निर्बलता ही के भाव को उत्पन्न करते हैं। वहाँ तक कोई मनुष्य प्रभावशाली नहीं हो सकता जहाँ तक कि शक्ति के रहस्य का वह ज्ञान प्राप्त न कर ले। निश्चयात्मक प्रकृतियुक्त मनुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं। वीरों ने पहले मानसिक विजय प्राप्त की है और फिर सांसारिक।

हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों के मन को विजय क विचारों से भर दें। उन्हें समझा दें कि तुम्हारा जीवन ही विजय के लिए है—जीवन सफलता प्राप्त करने के लिए है। हमें उन्हें समझा देना चाहिए कि विजयी को ही संसार में स्थान मिलता है। विजयी ही की धाक से संसार में बड़े बड़े परिवर्तन हो जाते हैं। इसके विपरीत निर्बल को संसार में स्थान नहीं मिलता अत्याचारों से बचने की शक्ति न होने के कारण उस पर बड़े बड़े अत्याचार होते हैं। जगह जगह वह ठोकरें खाता है, घोर अपमान सहता है। अथवा दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि विजय ही जीवन है और पराजय मृत्यु।

युवा पुरुष को संसार में प्रवेश करते समय यों नहीं कहना चाहिए कि "मैं विजय—सफलता—प्राप्त करना चाहता हूँ। पर मुझे अभी यह विश्वास नहीं है कि मैं उनके लिए कहाँ तक योग्य हूँ। जिस व्यवसाय में लगा हुआ हूँ, उस में पहले ही इतने लोग लगे हुए हैं कि उन्हें ही पूरा खाने को नहीं मिलता। बहुत से लोग बेकार हो रहे हैं। मैं समझता हूँ कि मैंने सख्त गलती की

है। पर मैं शक्तिभर अपने कार्य्य को अच्छा करने की कोशिश करूँगा; कुछ तो अच्छा बुरा फल निकलेहीगा"।

सच बात यह है कि लोग, जो कुछ हम हैं, उसी से हमारा वज़न गिनते हैं न कि जो कुछ हम कहते हैं उससे। हमें अपने सत्य पर प्रकाश डालना चाहिए। हम मन चाही बातें बना सकते हैं, पर जो कुछ हमारे मानसिक प्रकाश की प्रभा उन पर गिरेगी, उसी से वे हमारे प्रभाव की कीमत करेंगे क्योंकि यही हमारा सत्य है। चाहे तुम कितनी ही चिकनी चुपड़ी बातें बनाओ, पर इससे तुम अपने विषय में दूसरे मनुष्य के विचारों में परिवर्तन नहीं कर सकते। यदि तुम्हारे हृदय में द्वेष और प्रतिहिंसा के विचार गूँज रहे हैं—यदि तुम्हारा अन्तःकरण पर-जलन से जल रहा है; यदि तुम्हारे मन में निर्बलता घुसी हुई है तो दूसरे मनुष्य को तुम्हारे मन के ये सब कुभाव फौरन मालूम हो जावेंगे। हम अपने शब्दों में दूसरों को धोखा दे सकते हैं, पर तब तक हम अपनी मानसिक प्रभा को नहीं बदल सकते जब तक कि हम अपना सारा ही मानसिक प्रभाव न बदल डालें।

ज़रा उस मनुष्य की शोचनीय दशा की ओर आँख उठाकर देखिए जो यों कहता रहता है "हे समृद्धि! तू मुझसे दूर रह। मेरे पास मत आ। अवश्य ही मैं तुझे प्राप्त करना चाहता हूँ, पर ईश्वर ने तुझे मेरे लिए नहीं सृजा। मेरा जीवन बहुत ही लाचार है। यद्यपि मैं चाहता हूँ कि मुझे वे सब अच्छी वस्तुएँ प्राप्त हों, जो भाग्यवान को प्राप्त हैं, पर मैं आशा नहीं करता कि वे मुझे प्राप्त होंगी।"

जिस मनुष्य के इस तरह विचार होते हैं, समृद्धि और ऐश्व-

र्य्य उसके पास फटकते तक नहीं। जिनके मन में भय और संशय रहता है वहाँ ऐश्वर्य्य का प्रवेश नहीं हो सकता।

पर समय आ रहा है जब कि हम लोग उत्पादक शक्ति से अपने मन को भर देंगे और तब हमारा जीवन ऐश्वर्य्य से परिपूर्ण हो जायगा।

(४)

आत्म-विश्वास

वह पशुपालक सफलता मिलने की कैसे आशा कर सकता है, जो भयङ्कर और जंगली जानवर के पींजरे में शुरू ही में भय और संदिग्ध मन से प्रवेश करता है। कोई यों सोचता हुआ पिंजरे में घुसता है कि "मैं जंगली जानवरों को वश में लाने की कोशिश करूँगा, पर निश्चय रूप से यह विश्वास नहीं करता कि वास्तव में मैं ऐसा कर सकूँगा। अफ्रिका के जंगलों से जंगली शेर को पकड़ लाने की कोशिश करना, मनुष्य के लिए घातक कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। हाँ, ऐसे मनुष्य हैं जो ऐसे भयङ्कर कार्य्य को कर सकते हैं, पर मुझे सन्देह है कि शायद ही मैं ऐसे काम में सफलता करूँ।

यदि मनुष्य इस प्रकार के निर्बल, संदिग्ध और भयपूर्ण विचारों से जंगली जानवर का सामना करे तो इसमें तनिक मात्र भी सन्देह नहीं कि वह जानवर उसकी हड्डी हड्डी को चबा जायगा। ऐसे समय तो अविचल साहस और धैर्य ही उसकी रक्षा कर सकते हैं। ऐसे मनुष्य को चाहिए कि पहले उसे अपनी आँख से वश में लावे। आँख में उसके वह भाव झलकना चाहिए जो चित्ताकर्षक, हृदयग्राही, निडर और निश्चयात्मक हो, क्योंकि जहाँ उसकी आँख में ज़रा भी भय का, भीरुता का भाव झलका कि समझ लीजिए उसकी जान गई।

इसी प्रकार जीवन-संसार में मनुष्य तब तक सफलता-विजय प्राप्त नहीं कर सकता, जब कि उसके मनमें यह विश्वास न हो ले कि जिसके लिए मैं काम कर रहा हूँ उसे मैं प्राप्त करता जा रहा हूँ।

हम व्यापार में प्रवेश करने की इच्छा रखनेवाले उस नवयुवा से सफलता की किस प्रकार आशा रख सकते हैं जिसका शुरू ही में ऐसा संदिग्ध मन होता है कि "मैं व्यापार में सफलता प्राप्त कर सकूँगा या नहीं"। कभी किसी तरह किसी को सफलता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि सफलता पर उसका हार्दिक विश्वास न हो ले—जब तक कि उसका यह दृढ़ निश्चय न हो ले कि एक दिन मैं बहुत बड़ा व्यापारी हो जाऊँगा। मनुष्य उसी काम को ठीक तरह कर सकता है—उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है—जिसकी सिद्धि में उसका हार्दिक विश्वास है।

वह नवयुवा कैसे धनवान हो सकता है, जिसका विश्वास नहीं है कि मैं धन पैदा कर सकूँगा, जो ऐसा मानता है कि थोड़े ही मनुष्यों के भाग्य में धन बदा है ज्यादा आदमी गरीब रहते हैं और मैं उनमें से एक हूँ।

वह मनुष्य कैसे विद्या प्राप्त कर सकता है, जिसकी दृष्टि में निराशा का भाव छाया हुआ है—जो हमेशा यों भीखा करता है कि "हाय! क्या करूँ? मैं चाहता हूँ कि मैं लिखूँ पढ़ूँ। पर परमात्मा ने मुझे निःसहाय उत्पन्न किया है, मुझे किसी तरह का सुभीता नहीं है; न मेरे पास पैसा है और न मेरा कोई सहायक ही है। ऐसी बुरी स्थिति के कारण मैं लाचार हो रहा हूँ। इसी से विद्या—शिक्षा—प्राप्ति के द्वार मेरे लिए बन्द हो गये हैं।"

वह युवा किस तरह ऊँचे पद पर पहुँच सकता है, जिसका ऐसा ख्याल है कि मैं उक्त पद के योग्य नहीं हूँ।

मैंने बहुत से ऐसे नवयुवकों को देखा है, जिनमें कोई वकील कोई वैद्य और कोई व्यापारी होना चाहता था। पर उनकी इच्छा शक्ति इतनी निर्बल थी, उनका निश्चय इतना ढीला था कि पहली कठिनाई ही ने उन्हें अपने उद्देश्य से चल-विचल कर दिया— उनके पैर फिसला दिये। ये अपने काम को ठीक तरह शुरू न भी करने पाये थे कि निर्बल निश्चय ने उन्हें उससे अलग कर दिया। मैं कहता हूँ कि उनकी दिशा बदलने में एक छोटी-सी चीज़ ने कमाल किया।

मैं ऐसे भी बहुत से नवयुवकों को जानता हूँ कि जिन्होंने अपने व्यवसाय को निश्चित करने में इतने उत्साह और शक्ति से काम लिया था कि कोई उन्हें अपने उद्देश्य से हटा न सका। क्योंकि उन्होंने मन, वचन और काया से इस बात को मान लिया था कि हमारा उद्देश्य हम से अलग नहीं। वह हमारे शरीर का एक विशेष और महत्त्वपूर्ण अंग है। यदि हम अविचल साहस द्वारा सम्पादित किये हुए उन बड़े-बड़े कार्यों का उनके कर्त्ताओं से विश्लेषण करें, तो आत्म-विश्वास ही सब से प्रधान गुण निकलेगा। वह मनुष्य अवश्य ही सफलता प्राप्त करेगा— आगे बढ़ेगा—ऊँचा उठेगा—उन्नति-पथ पर अग्रसर होगा जिसको अपनी कार्य-सम्पादन शक्ति पर विश्वास है—जो मानता है कि मुझ में यह योग्यता है, जिससे मैं उस कार्य को अवश्य ही पूरा कर सकूँगा; जिसको मैंने हाथ में उठाया है। इस तरह के विश्वास का कार्य कर और मानसिक परिणाम केवल उन्हें

लोगों पर नहीं होता जो ऐसा विश्वास रखते हैं, पर उन लोगों पर भी होता है जो उनके पास उठते बैठते हैं तथा उनसे सम्बन्ध रखते हैं।

जब मनुष्य को मालूम होने लगता है कि मैं प्रभुता प्राप्त करता जा रहा हूँ—ऊँचा उठता जा रहा हूँ—तभी वह आत्म-विश्वास-पूर्ण बातें करने लगता है, तभी वह अपनी विजय पर प्रकाश डालता है, तभी वह भय और शंका पर जय प्राप्त करता है। संसार, विजयी पर विश्वास लाता है। संसार उस मनुष्य का विश्वास करता है, जिसके चेहरे पर विजय के भाव झलकते हैं।

हम उन लोगों का स्वभाव ही से विश्वास करने लगते हैं, जो अपनी शक्ति का प्रभाव हम पर डालते हैं। बिना आत्म-विश्वास के वे ऐसा नहीं कर सकते। वे उस हालत में हम पर प्रभाव नहीं डाल सकते, जब कि उनका मन, भय और शंकाओं से भरा हुआ रहता है। कुछ मनुष्यों में थोड़ी-सी ऐसी अलौकिक शक्ति होती है कि उनके दर्शन मात्र से ही हमारे हृदय पर अपने आप उनका आध्यात्मिक प्रभाव पड़ने लगता है। हमें उनमें एक अद्भुत प्रकार की दिव्यता दिखने लगती है। वे हमारे विश्वास को अपनी ओर खींच लेते हैं। हम उनकी शक्ति पर विश्वास करने लगते हैं। ऐसा क्यों न हो, जब कि वे अपनी शक्ति पर निरन्तर दिव्य प्रकाश डाला करते हैं—उसे अधिकाधिक उज्ज्वल बनाते रहते हैं।

आपने अवश्य ही ऐसे बहुत से लड़कों को देखा होगा जो शिक्षा और योग्यता के लिहाज से समान होते हुए भी कोई तो अपने उद्देश्य की ओर वीरता और धीरता पूर्वक पैर उठाते जाते

हैं और कोई इसी बात की प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कोई अन्य मनुष्य हमारे लिए मार्ग ढूँढ दे। आप जानते हैं कि दुनिया को इस बात की फुरसत नहीं है कि वह आपकी योग्यता की ओर ताका करे, वह देखेगी इस बात को कि आप अपने उद्देश्य की ओर किस गति से जा रहे हैं।

जितना आप अपनी योग्यता पर अविश्वास करेंगे, जितना आप भय और शंका को अपने हृदय में स्थान देंगे, उतने ही आप विजय से—सफलता से दूर रहेंगे। चाहे हमारा पथ कितना ही कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय क्यों न हो पर हमें चाहिए कि हम कभी अपने आत्म-विश्वास को—मानसिक धैर्य को—तिलांजली न दें। हमारी शंकाएँ और भय जैसे दूसरों के विश्वास को नष्ट करते हैं, वैसे अन्य कोई पदार्थ नहीं। बहुत से मनुष्यों की असफलता का कारण यह है कि वे अपने निराशाजनित भाव ही को प्रोत्साहन देते रहते हैं और अपने पास उठने बैठने वाले लोगों से ऐसी ही निराशामय प्रेरणा किया करते हैं।

यदि तुम अपने आपको पतित समझोगे—यदि तुम समझोगे कि हम सामर्थ्य हीन मनुष्य हैं—हमारा कोई महत्व नहीं—तो दुनिया तुम्हें ऐसा ही समझेगी। वह तुम्हारा कोई महत्व नहीं समझेगी। वह तुम्हारी आवाज की कुछ कीमत न गिनेगी।

मैंने कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसने अपने आपको तुच्छ, हीन और बेकाम समझते हुए कोई महान् कार्य किया हो। जितनी योग्यता का हम अपने आपको समझेंगे उतना ही महत्व-पूर्ण काम कर सकेंगे।

यदि आप बड़े-बड़े पदार्थों की आशा करते हैं—उनकी माँग

करते हैं—और अपने मनोभाव को विशाल बनाये हुए हैं तो आपको बड़ी ही ऊँचे दर्जे की सफलता प्राप्त होगी।

जैसे तुम अपने आप को गिनोगे, जैसे तुम्हें अपनी योग्यता पर विश्वास होगा, जैसे तुम्हें अपनी उन्नति का महत्व मालूम हो रहा होगा—तुम संसार के लिए अपने आपको जैसे उपयोगी और वज़नदार गिनोगे, वैसा ही भाव तुम्हारे चेहरे पर और तुम्हारे आचार-विचार पर दीखने लगेगा।

यदि तुम अपने को मामूली आदमी मानोगे तो तुम्हारे चेहरे पर भी ऐसा ही भाव दीखने लगेगा। यदि तुम अपने आपका सम्मान करोगे तो तुम्हारा चेहरा इस बात की गवाही दे देगा। यदि तुम अपने आपको गरीब और नाचीज़ समझोगे तो खूब समझ लो तुम्हारे चेहरे पर कभी भाग्यवानी की प्रभा न चमकेगी—गरीबी ही की झलक तुम पर झलका करेगी। जो कुछ गुण तुम अपने आप में प्रकट करते हो उनका अंश उस प्रभाव में भी रहता है जो तुम दूसरों पर डालते हो।

जिन गुणों को आप प्राप्त करना चाहते हो उन्हीं गुणों को यदि आप अपने मानसिक भवन में पैदा करते रहोगे तो धीरेधीरे ये गुण आपके होने लगेंगे और इनका प्रकाश आपके चेहरे पर चमकने लगेगा। यदि आप चाहते हैं कि हमारे मुख-मण्डल पर दिव्यता का भाव झलके तो पहले आप अपने हृदय में वैसे भावों को उत्पन्न कीजिए। यदि आप चाहते हों कि हमारे मुख-मण्डल और आचार-व्यवहार में उच्चता का भाव झलके तो इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने विचारों में उच्चता लावें।

हमारे कार्य की नींव हमारे आत्म-विश्वास पर लगी हुई है।

"हम कार्य कर सकते हैं" इस विचार में बड़ी अद्‌भुत शक्ति भरी हुई है।

जिस मनुष्य में पूरा आत्म-विश्वास है वह इस तरह की गड़बड़ी में नहीं पड़ता कि मैं ठीक पथ पर हूँ कि नहीं, मुझमें कार्य्य सम्पादन की योग्यता है या नहीं। उसे अपने भविष्य के लिए किसी प्रकार की चिंता नहीं रहती।

जो मनुष्य आत्म-विश्वास से सुरक्षित है, वह उन चिंताओं एवं फिक्रों से बरी रहता है, जिनसे दूसरे मनुष्य बहुत दबे हुए रहते हैं। उसके विचार और कार्य्य उक्त बलाओं से मुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्त करते हैं। अथवा दूसरे शब्दों में यों कहिए कि उसे कार्य्य और विचार की स्वाधीनता मिल जाती है, जो उच्च कार्य्य सम्पादन-शक्ति की प्राप्ति के लिए बहुत आवश्यक है।

किसी महान् साहसिक कार्य्य के लिए स्वाधीनता की बड़ी ही जरूरत है। जिस मनुष्य का मन भय, चिन्ता, और शङ्का से तलमला रहा है, वह कभी कोई महान् कार्य्य नहीं कर सकता। प्रभावशाली मस्तिष्क कार्य के लिए पूर्ण स्वाधीनता की बड़ी आवश्यकता है। शङ्का और सन्देह हमारी मानसिक एकाग्रता में बाधक होते हैं—जो एकाग्रता हमारी कार्य्यकारिणी शक्ति का रहस्य है। आत्म-विश्वास—आत्मश्रद्धा किसी भी कार्य का मूल है। जीवन-व्यवसाय की प्रत्येक शाखा में इससे अद्‌भुत प्रकाश गिरता है। जिस आत्म-विश्वास—आत्मश्रद्धा के—द्वारा मनुष्यों ने बड़े बड़े साहसिक कार्य्य किये हैं, बड़ी बड़ी विघ्न बाधाओं का सामना कर उन पर विजय प्राप्त की है, जिसके द्वारा मनुष्यों ने विपत्तियों के

पहाड़ों को तोड़ डाला है उस विश्वास में कितनी अद्भुत शक्ति भरी हुई है, इसका अनुमान कौन लगा सकता है ?

विश्वास ही से हम अपनी शक्ति को दूना कर लेते हैं और अपनी योग्यता को बढ़ा लेते हैं।

एक हट्टे कट्टे और मजबूत मनुष्य में से जब आत्म-विश्वास उठने लगता है तभी से उसके पैर फिसलने शुरू हो जाते हैं विश्वास ही बड़ी चीज़ है, जो हमें उस दिव्यता का दर्शन कराता है जो हमारे भीतर भरी हुई है। विश्वास ही वह पदार्थ है जो ईश्वर से हमारा ऐक्य सम्बन्ध कराता है। विश्वास ही वह पदार्थ है जो हमारे हृदय-कपाटों को खोल देता है, और विश्वास ही वह चीज़ है कि अनन्त से मिला देता है जिससे अनन्त शक्ति, अनंत ज्ञान, अनन्त दर्शनों का हमें अनुभव होने लगता है। हमारा जीवन महान् है या साधारण, उच्च है या क्षुद्र, यह बात हमारी अन्तरदृष्टि और विश्वास की शक्ति पर निर्भर है। बहुत से मनुष्य अपने विश्वास और श्रद्धा पर विश्वास नहीं लाते, क्योंकि वे इस बात को नहीं जानते कि वह क्या वस्तु है। वह यह नहीं जानते कि विश्वास ही हमारी आत्मरक्षा की ध्वनि है। यह एक आध्यात्मिक कार्य्य-शक्ति है। यह एक ज्ञान है जो उतना ही सच्चा है जितना इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान। विश्वास व श्रद्धा हमारे चित्त को ऊँचा उठानेवाले हैं। इन्हीं का अद्भुत प्रभाव हमारे आदर्श पर गिरता है। वे हमें ऊँचा उठाते हैं। और उस दिव्यता—सफलता के दर्शन कराते हैं जिनके लिए ये हमारी आत्म-प्रतीति करा रहे थे। ये ही सत्य और बुद्धि के प्रकाश हैं। मेरी समझ में बच्चों को आत्म-विश्वास से हटाना और उन्हें यह

कहना कि तुम्हारा कोई महत्व नहीं—तुम नाचीज हो—तुम वह नहीं कर सकते यह भी एक अपराध है।

माता पिता और अध्यापकगण इस बात को बहुत कम जानते हैं कि बच्चों का मन कितना कोमल होता है और उनके सामने इस तरह के साहसहीन वचनों के कहने से उन पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि संसार में जो दुःख, दरिद्रता और असफलता दीख रही है वह अधिकांश में हीन प्रेरणाओं ही का फल है। डाक्टर ल्यूथी जो न्यूयार्क की पाठशालाओं के फिजिकल डाइरेक्टर हैं, कहते हैं कि "हमारी पब्लिक पाठशालाओं के बहुत से विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के सदमे से अकाल ही में काल के ग्रास बन जाते हैं। परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का कारण आखों की कमजोरी, खराब दाँत, पौष्टिक भोजन न मिलना बताया जाता है। बच्चे हमारे कहे हुए मार्ग पर नहीं चलते। वे यह नहीं जानते कि हम क्यों इतने अपूर्ण हैं? वे तो अपनी सफलता से दुःखी व उदास हो जाते हैं उनका साहस टूट जाता है, उनका मन बेतौल हो जाता है। हर साल में इसी कारण बहुत से विद्यार्थी आत्म-हत्या कर लेते हैं।" लड़के ही क्यों! विश्वास-पतन का बुरा फल जानवरों तक पर गिरता है। वह घोड़ा जो दौड़ की शर्त में सबसे आगे निकलने वाला है कभी शर्त का इनाम न पायगा यदि उसका विश्वास नष्ट कर दिया जायगा—शाबाशी के शब्दों से उसे आश्वासन न दिया जायगा। जो लोग घोड़े आदि जानवरों को पालते हैं सब से पहले उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे हमेशा उनके विश्वास को बढ़ाते रहें। विश्वास ही से हमारी शक्ति का विकास

होता है। विश्वास ही से हमें वह क्षमता प्राप्त होती है, जिससे हम अपनी योग्यता को वढ़ा सकें। इसी से समय पर बड़े बड़े चमत्कारिक कार्य्य हुए हैं। जो कोई तुम्हारे आत्म-विश्वास को वढ़ाता है वही मानो तुम्हारी शक्ति को वढ़ाता है।

संसार में जो मनुष्य बड़े बड़े काम करते हैं, उन सब में ऊँचे दर्जे का आत्म-विश्वास होता है। अपनी शक्ति पर, अपनी योग्यता पर, अपने कार्य्य पर, बल पर, उनका पूरा पूरा विश्वास होता है।

हमें चाहिए कि हम निरन्तर अपने आत्मविश्वास पर जमे रहें, उसे किसी तरह ढीला और कमजोर न होने दें। हमें इस बात का पूरा पूरा विश्वास होना चाहिए कि जो जो कार्य्य हमने हाथ में लिये हैं, उन्हें हम अवश्य ही पूरा करेंगे—उन्हें अवश्य ही हम अन्त तक पहुँचावेंगे। संसार में जिन लोगों ने बड़े बड़े अद्भूत कार्य किये हैं, आत्म-विश्वास ही के तत्व को पकड़ कर वे चले हैं। यदि आप संसार के उन महान पुरुषों की जीवनी का अवलोकन करेंगे, जिन्होंने संसार की सभ्यता को उँचा चढ़ाया है; तो आपको मालूम होगा कि उन्होंने जिस समय अपने कार्य का आरम्भ किया था, उस समय वे बहुत गरीब थे और बहुत वर्ष उनके लिए इतने अन्धकारमय गुजरे कि उनमें उन्हें अपनी सफलता का कोई भी चिन्ह न दीख पड़ा। पर वे इस दृढ़ विश्वास के साथ काम करते रहे कि कभी न कभी हमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी—हमारे मार्ग पर प्रकाश गिरेगा। इसी तरह के आशामय और विश्वासपूर्ण विचार से कैसे कैसे अद्भुत आविष्कार हुए हैं? क्या आप जानते हैं कि पहले इन

आविष्कारों के कर्ताओं को कैसी कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ा है ? क्या आपको यह मालूम है कि बहुत वर्ष तक उन्हें सफलता का कोई चिन्ह ही न दीख पड़ा, बहुत वर्ष उनके लिए अन्धकारमय गुजरे; पर उन्होंने अपनी आशा को नहीं छोड़ा, विश्वास को तिलांजलि न दी और अपने मनादेश पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे। अन्त में उन्हें प्रकाश मिला। वे सफल हुए। वर्षों का परिश्रम सफल हुआ। यदि वे अपनी आशा को छोड़ देते तो उन्हें यह प्रकाश कभी नहीं मिलता। कभी वे अद्भुत आविष्कार कर संसार को अचम्भे में न डाल पाते।

यह उन्हीं महान् आत्माओं का प्रताप है कि आज हम तरह तरह के आराम भोग रहे हैं, बिना तकलीफ़ के घंटों में सैकड़ों मील चले जाते हैं, आकाश की हवा खा लेते हैं, अपने इष्ट मित्रों के पास मिनटों में सुख या दुख का संदेशा भेज सकते हैं। इस महान् आत्माओं के पथ में विपत्ति के पहाड़ के पहाड़ आये, पर उन्होंने वीरता पूर्वक उन्हें तोड़ा। इन्हें निरुत्साह करने में—अपने पथ से च्युत करने में—लोगों ने कोई बात उठा न रखी, पर उन्होंने किसी की बात पर कान न दिया वे अपने मार्ग पर आगे बढ़ते ही गये; और बिना किसी की सहायता और सहानुभूति के उन्होंने वह अद्भुत काम किया जिसे देख कर दुनिया दंग रह गई।

हर काम उसी दशा में अच्छा होता है, जब कि विश्वास का प्राधान्य रहता है। विश्वास ही हमें उस मार्ग को बताता है जो हमें अपने संभाव्य तक पहुँचा देता है। विश्वास ही कार्य का बल है। वह हमें हाथ में बड़े कार्य्य उठाने से नहीं रोकता,

क्योंकि हम में वह शक्ति का एक ऐसा झरना देखता है, जिसके द्वारा सब कुछ कार्य हो सकता है।

आज तक कोई मनुष्य विश्वास के तत्व को ठीक तरह समझ न सका। वह क्या वस्तु है जो मनुष्य को अपने कार्य्य पर दृढ़ता पूर्वक जमा लेती है? वह क्या पदार्थ है जिससे मनुष्य निराशामय अन्धकार में रहते हुए भी आशा के प्रकाश की झलक देखा करत्ता है? वह क्या पदार्थ है जो मनुष्य को विपत्ति सहने में धैर्य्य देता है? वह क्या पदार्थ है, जो दुःख में भी मनुष्य को आनन्द के सुख-स्वप्न दिखाता है? वह क्या पदार्थ है जो दरिद्रता के पंजे में फँसे हुए मनुष्य को आश्वासन देता रहता है? वह क्या पदार्थ है जो मनुष्य के हृदय को उस समय छिन्नभिन्न होने से बचाता है जब कि वह कौड़ी कौड़ी से मुहताज हो जाता है, और उसके इष्ट मित्र तक उसकी ओर से मुँह मोड़ लेते हैं? वह क्या पदार्थ है जो लाखों विपत्तियों के गिरने पर भी धीरता-पूर्वक खड़ा रहने का उसे बल देता है? दुनिया उन वीरों की ओर देखकर दंग रह जाती है, जिन्होंने दुनिया में सब कुछ खो दिया है, पर उस विश्वास को मजबूती से पकड़े हुए हैं कि हम उस कार्य्य को अवश्यमेव पूर्ण करेंगे, जिस पर हमने अपना अन्तःकरण लगाया है।

विश्वास ही वह चीज है, जो हमें जोर से कहती है कि अपने कार्य्य की ओर पैर उठा दो। वही हमारी आत्मा है, वही हमारी आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि है, वही हमारे मार्ग का पथ प्रदर्शक है, वही हमारी विघ्न-बाधाओं पर जय प्राप्त कर हमारे पथ को साफ करती है।

दुनिया में जो बड़े बड़े आविष्कार हुए हैं—नई नई बातें निकली हैं—अद्भुत कार्य हो रहे हैं—सब विश्वास ही के फल हैं

उस नवयुवक के भविष्य की कुछ चिंता नहीं जिसके हृदय में विश्वास ने जड़ पकड़ ली है। आत्म-विश्वास में वह ताक़त है जो हज़ार विपत्तियों का सामना कर उन पर पूरा पूरा विजय प्राप्त कर सकती है। यही गरीब मनुष्य का मित्र है और यही उसकी सबसे अच्छी पूँजी है। हमने देखा है कि द्रव्यहीन पर आत्म-विश्वासी मनुष्यों ने दुनिया में गजब के काम किये हैं, जब कि बहुत से धनवान मनुष्य विश्वासहीनता के कारण बड़ी बुरी तरह असफल हुए हैं, वे कोई मार्के का काम नहीं कर सके हैं। यदि हमें विश्वास है कि हम बड़े बड़े कार्य्य कर सकेंगे दुनिया को फेर देंगे; हम बहुत कुछ कर सकेंगे—यदि हमें इस बात का विश्वास होगा कि हम में एक दैवी तत्व मौजूद है—ईश्वर ने हम में कोई नीच तत्व नहीं रक्खा है—हम में पूर्णता भरी हुई है-- तो हमारे हाथ से दुनिया के बड़े बड़े कार्य होंगे।

जब कि मनुष्य राजकुमार है अर्थात् राजराजेश्वर ईश्वर का पुत्र है; जब कि दैवी रक्त उसके नस नस में बह रहा है; जब कि वह दैवी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है; तो क्यों न उसे अपने इस जन्मसिद्ध अधिकार पर धैर्य और विश्वास पूर्वक दावा करना चाहिए ?

बात यह है कि हम लोग अपने सद्गुणों को पूरी तरह नजर में नहीं रखते। इसी से हम उसका ठीक विकास नहीं कर सकते। इसी से दैवी भाव हमारे चेहरे पर नहीं झलकता।

हम देखते हैं कि बहुत से मनुष्य सदा ही गरीब बने रहते हैं

समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते। इसका कारण यही है कि वे अपने आपको हीन समझते हैं—उन्हें इन सद्गुणों की पहिचान नहीं होती—जो उनकी आत्मा में रहे हुए हैं। यदि आप भारत की नीच जातियों पर दृष्टि डालेंगे तो आपको मालूम होगा कि शताब्दियों से नीच वातावरण में पलने कारण वे इस बात को साफ भूले हुए हैं कि हम भी मनुष्य हैं—हम में भी वे ही दिव्य गुण मौजूद हैं, जो अन्य मनुष्यों में हैं। हम में भी वही शक्ति है जो दुनिया के बड़े बड़े काम कर सकती है—हम भी मनुष्य होने के कारण वे ही अधिकार रखते हैं जो अन्य मनुष्य भोग रहे हैं और आत्म-गौरव—आत्म-सम्मान—के हम भी वैसे ही पात्र हैं जैसे अन्य मनुष्य।

वे समझे हुए हैं कि ईश्वर ने हमें जन्म से ही ऐसा दीन बनाया है। हमारी योनी नीच रक्खी है, पर वे इस बात को नहीं जानते कि ईश्वर की नजर में मनुष्य मात्र एकसा है। मनुष्य जैसा कर्म करता हैं वैसा ही वह बन जाता है। हर मनुष्य को अच्छे कर्म कर ऊँचा उठने का अधिकार है। पर ये बेचारे शताब्दियों से अत्याचार सहते आये हैं। अतएव वे मनुष्योचित अधिकार को भूल गये हैं। वे ईश्वर ही को दोष देकर बैठ जाते हैं। ऊँचा उठने का प्रयत्न नहीं करते, अतएव हमेशा दीन दशा में ही पड़े रहते हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने बड़ौदे में अपनी आंखों देखा है कि बहुत से ढेढ़, चमार, भंगी, जो पशुओं से भी बदतर समझे जाते थे, शिक्षित होकर अपने आत्म-गौरव को समझने लगे हैं। वे अब इस बात को मानने लगे हैं कि हमें भी ऊँचा उठने का हर हालत में हक है।

इसी से बड़े बड़े ओहदों पर काम कर रहे हैं। इन्होंने अपने आप को नीच समझना छोड़ दिया। कई लोगों ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय देकर डंके की चोट इस बात को सिद्ध कर दिया है कि बुद्धि और प्रतिभा के ठेकेदार केवल ब्राह्मणादि उच्च जाति वाले ही नहीं हैं अन्य में भी वह वैसे ही विकसित हो सकती है जैसे ब्राह्मणों में। शीघ्र ही वह दिन आने वाला है—शीघ्र ही वह प्रभात होने वाला है, जब इन हीन माने जाने वाले अत्याचार-पीड़ित मनुष्यों के अलौकिक प्रकाश की ओर सारा जगत् टकटकी लगाकर देखेगा और अपने किये हुए अत्याचार पर पश्चात्ताप करेगा। देर केवल इस बात की है कि वे अपने को मनुष्य ख्याल करने लगें।

आत्मविश्वास और सफलता

चाहे हम इस बात को मानें या न मानें, पर यह बात सच है कि हम अपने आत्मविश्वास से पृथक नहीं हो सकते। जैसा हमारा आत्म-विश्वास है उससे बढ़कर हम कोई कार्य्य नहीं कर सकते।

यदि हम अपने आत्म-विश्वास को दृढ़ करते रहें—यदि हम इस बात को मानते रहें कि हम में ऊँची शक्ति और योग्यता मौजूद है, तो इससे हमारी मानसिक शक्तियों पर बड़ा ही उदार और दिव्य प्रभाव पड़ेगा।

यदि मनुष्यों में सबसे ज्यादा किसी बात की कमी है तो वह आत्म-विश्वास ही की है।

बहुत से मनुष्य ऐसे पाये जाते हैं कि जहाँ उनमें दूसरी

शक्तियाँ बहुतायत से मिलती हैं, वहाँ आत्म-विश्वास की उनमें बड़ी ही कमी रहती है। बहुत से मनुष्य जो असफल हो रहे हैं, वे फिर सफलता प्राप्त कर सकते हैं यदि वे अपनी इस शक्ति को ठीक तरह संस्कृत और प्रबल करें।

आप किसी डरपोक, शङ्काशील मनुष्य पास बैठा कर हमेशा यह पाठ पढ़ाइए कि "तुम अपनी आत्मा में विश्वास करना सीखो। तुम में वह शक्ति मौजूद है जो दुनिया के बड़े बड़े काम कर सकती है। तुममे वह योग्यता मौजूद है जिससे समाज में तुम अपना वजन उत्पन्न कर सकते हो।" आप उसके आत्म-विश्वास को इस तरह पुष्ट करते रहें फिर आप-को यह बात मालूम होने लगेगी कि उसका साहस किस तेजी से बढ़ रहा है—उसकी मानसिक शक्तियों में किस तरह नया जीवन आ रहा है।

जैसे हम अपने आपको मानेगें वैसा ही आदर्श हमारी आत्मा का बनेगा। हो नहीं सकता कि जैसा हम अपने आपको मानते हैं उससे हम ज्यादा बड़े आदमी बन जावें। यदि किसी प्रतिभाशाली मनुष्य को भी यह विश्वास करा दिया जाय कि वह अति क्षुद्र है, नाकुछ हैं तो उसकी गति भी नीचता—क्षुद्रता की ओर होने लगेगी। तबतक वह गिरता ही जायगा, जबतक कि वह फिर अपने आप को बलवान न गिनने लगे, जबतक कि वह अपने आपको बड़ा न मानने लगे। मनुष्य की योग्यता चाहे जितनी बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो, पर फल तो उसे उतना ही मिलेगा, जितनी योग्यता का वह अपने आपको समझता होगा। अल्प बुद्धिवाला आत्म-विश्वासी उस बल-बुद्धिसम्पन्न मनुष्य से कहीं

अधिक कार्य्य कर सकता है जिसे अपनी आत्मा में विश्वास नहीं है।

मेरी समझ में हीन और क्षुद्र प्रकृति से रक्षा पाने का इससे और कोई दूसरा उत्तम उपाय नहीं है कि हम अपने आत्म-महत्व को बढ़ाते रहें—हम मानते रहें कि संसार में हमारा भी कुछ महत्व है। इससे हमारे आत्मा की सब शक्तियाँ एकत्रित होकर हमारे आदर्श को पूरा करने में लग जावेंगी, क्योंकि हमारे जीवन का यह एक नियम है कि वह हमारे उद्देश्य का अनुकरण करता है।

आप अपना और दैवी सम्भावनाओं का उन्नतिशील और अत्युच्च आदर्श खड़ा कीजिए और इस आदर्श को सिद्ध करने के लिए जी-जान से लग जाइए, जरूर आपको सफलता प्राप्त होगी।

हमारी बहुतसी मानसिक शक्तियाँ चाहे जितनी प्रबल क्यों न हों, पर यदि उनका संचालन अविचल आत्म-विश्वास द्वारा न किया जायगा, तो उनका विशेष उपयोग नहीं होगा। मानसिक शक्तियों पर आत्म-विश्वास का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, जो मनुष्य को ऊँचा उठावे, जो मनुष्यों की हीन प्रकृति से रक्षा करे, जैसा कि दृढ़ आत्म-विश्वास है। मानवी सभ्यता में आत्म-विश्वास ही बहुत ऊँची शक्ति मानी गई है। मानवी कार्य्यों में इस शक्ति की गणना सब से पहले की गई है। अधिक क्या कहें, इसी दिव्य शक्ति के द्वारा मनुष्य जगदात्मा के ऐक्य का सुखानुभव तक करने लगता है। आत्म-विश्वास हमारी दूसरी शक्तियों को भी

बड़ा प्रोत्साहन देता रहता है। आत्म-विश्वास की जितनी अधिक मात्रा हम में होगी, उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनंत शक्ति से गहरा होता जायगा।

संशय ही हमारी कार्य्य-सम्पादन-शक्ति को पंगु करनेवाला है। कार्य्य करने के पहले मनुष्य का यह विश्वास होना ही चाहिए कि मैं इस कार्य्य को अवश्य कर सकूँगा। जहाँ तक संशय का लेश भी उसमें बना रहेगा, वहाँ तक वह अपने कार्य में पूरी सफलता न पा सकेगा। वह मनुष्य जिसका उद्देश्य आत्म-विश्वास और अभिलाषा से भरा हुआ है, तब तक चैन नहीं पा सकता, संतोष प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि वह उसे पूरा न कर ले। अवश्य ही ऐसा मनुष्य अद्भुत सफलता प्राप्त करेगा, चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ उसके मार्ग में बाधा क्यों न डालती रहें।

मैं जानता हूँ कि जिन लोगों ने संसार में अद्‌भुत सफलता प्राप्त की है, वे हमेंशा इसी बात को मानते रहे हैं कि हमारा पासा हमेशा सीधा ही पड़ेगा; कभी उलटा न पड़ेगा। अपने उद्देश्य का मार्ग चाहें जितना कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय उन्हें दीखता हो, पर वे इस बात की दृढ़ आशा और विश्वास रखते हैं कि हमें अपने उद्देश्य पर पहुँचने में जरूर सफलता प्राप्त होगी। इसी तरह आशामय मनोभाव रखने से वे सफलता के तत्वों को अपनी ओर खींचते रहते हैं।

हमारी शक्तियाँ वैसाही काम करेंगी, जैसा कि हम उन्हें हुक्म देंगे। वे स्वभावतया उन्हीं पदार्थों को उत्पन्न करेंगी, जिनकी चाह हम उनसे करेंगे। यदि हम उनसे बहुत कुछ माँगा

करें और यह आशा रखें कि वे हमें अवश्य सहायता देंगी तो ज़रूर वे हमारे मनोरथों के सफल होने में सहायक होंगी।

हमारी मानसिक शक्तियाँ, हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य पर, निर्भर करती हैं। वे हमारी कार्य-कर इच्छा-शक्ति के पूर्ण-तया आधीन हैं। अतएव यदि हमारी इच्छा-शक्ति पोची और कमजोर होगी तो हमारी मानसिक शक्तियों का कार्य भी वैसा ही होगा। जहाँ हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य्य में कमजोरी आई कि हमारी कार्य्य-सम्पादन-शक्ति में भी कमजोरी आ जायगी।

मेरा विश्वास है कि मनुष्य के जीवन के लिए इससे और कोई अच्छी बात नहीं है कि वह हमेशा यह मानता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा होगा। जो कुछ कार्य्य मैं हाथ में लूँगा उसमें अवश्य ही मुझे सफलता प्राप्त होगी।

बहुत से मनुष्य यह दुराशा धर कर कि हमें कभी सफलता प्राप्त न होगी, दैव हमारे विपरीत है, अपने मुँह सफलता को जबाब दे देते हैं। उनका मानसिक भाव सफलता-विजय के अनुकूल नहीं होता। वे सफलता के परमाणुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। असफलता और विजय के भाव पहले मन ही में उत्पन्न होते हैं। यदि हमारा मन शंकाओं से भरा हुआ होगा, तो इसका परिणाम भी वैसा ही निराशा-जनक निकलेगा। विजय को प्राप्त करने के लिए अविचलित श्रद्धा की अत्यंत आवश्यकता है।

बहुत से मनुष्यों की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही विजय की ओर झुकी हुई रहती है—वे विजय ही विजय के स्वप्न देखा करते हैं।

उनकी दृष्टि में सफलता ही की झलक पड़ा करती है। उनकी आदत ही होती है कि वे विजय—सफलता के विश्वास ही से किसी कार्य को शुरू करते हैं और वे उसमें अद्भुत सफलता पा जाते हैं।

विघ्न बाधाओं का ख्याल और सफलता

बहुत से मनुष्यों के नाकामयाब होने तथा अच्छे अवसरों के रहते भी मध्यम स्थिति में पड़े रहने का कारण यह है कि वे अपने मार्ग की विघ्न-बाधाओं ही का ख़्याल करते रहते हैं।

इससे उनका दिल टूट जाता है। साहसिक कार्य करने के वे योग्य नहीं रहते। उनकी उपज शक्ति नष्ट हो जाती है। उनका मन निषेधात्मक होजाता है। आशा और आत्म-विश्वास ही वे पदार्थ हैं जो हमारी शक्तियों को जागृत करते हैं और हमारी उपज-शक्ति को दुगुना तिगुना बढ़ा देते हैं।

जिस मनुष्य को चहुँ ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीखा करती हैं उसका आत्म-बल कमजोर हो जाता है। वह किसी महान् कार्य्य को नहीं कर सकता। उसके मस्तिष्क से किसी नये आविष्कार की सृष्टि नहीं हो सकती। क्योंकि उसकी उपज-शक्ति पर निराशामय काला पड़दा पड़ा रहता है। वह इस मनुष्य की संकीर्ण दृष्टि के कारण अलग नहीं हो सकता। यदि हम किसी ऐसे मनुष्य को देखें जो महान कार्य कर रहा है, तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह अपने मार्ग पर आने वाली विघ्न-बाधाओं का बड़ी वीरता के साथ सामना कर रहा है।

नेपोलियन की जीवनी से आपको मालूम होगा कि जब इस महावीर के मार्ग में आल्पस् का पर्वत पड़ा तब उसके

साथियों ने कहा कि अपनी सेना इस दुर्भेद्य पर्वत को कैसे लांघ सकेगी। इस पर नेपोलियन ने हँस कर कहा कि इसमें मार्ग बना दिया जायगा। बस फिर क्या देर थी! काम शुरू कर दिया गया। आल्पस में मार्ग बना दिया गया। फौज के जाने का रास्ता खुल गया। क्या कोई मनुष्य यह कहने में हिचक सकता है कि यह सब उस वीर के साहस और आत्म-विश्वास ही का परिणाम था।

हमारी समझ में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है, जो अपने आदर्श को पूरा करने के लिए तन, मन, और धन, से लग जाता है—मन, वचन, काया को एक कर डालता है—जो दावे के साथ कह सकता है कि असफलता—पराजय कोई चीज़ ही नहीं है उसे विजय—सफलता पर पूरा आत्म-विश्वास होता है।

यदि हमें यह विश्वास है कि हम बड़े बड़े कार्य्य कर सकेंगे क्योंकि हम में यह योग्यता है जिससे महान् कार्य्य सम्पादन किये जा सकते हैं, तो हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

परप पिता परमात्मा ने श्रद्धा और विश्वास को इसलिए उत्पन्न किया है कि वे हमें गिरने से बचाने के लिए हमारा बाहु पकड़ें, हमें मुसीबत के समय धैर्य और आश्वासन देते रहें। मनुष्य के लिए ये उतने ही काम के हैं, जितने तूफान के वक्त नाविक के लिए दिग्दर्शन यन्त्र। जिस तरह घोर तूफान के समय भी नाविक को इस यन्त्र के कारण इस बात का आश्वासन रहता है कि चाहे जितना तूफान क्यों न हो, समुद्र में चाहे जितना अन्धकार क्यों न छा गया हो मैं इस यन्त्र के द्वारा

दिशा का पता लगाकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच सकूँगा। उसी तरह जिस मनुष्य को पूरा आत्म-विश्वास है उसे इस बात का गुमान रहता है कि चाहे जितने मुसीबत के पहाड़ मेरे रास्ते में क्यों न आवें, पर मुझ में वह शक्ति है कि मैं उनमें अपना रास्ता बना सकूँगा।

दुनिया उस मनुष्य के लिए स्वयं रास्ता कर देती है, जो शक्ति-शाली, आत्म-विश्वासी और दृढ़ाग्रही है। जो इस बात को जानता है कि संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं—ऐसी कोई विपत्ति नहीं जो मेरी शक्ति का सामना कर सके। कायर मनुष्य ही इनसे डर सकता है—रास्ते में इन्हें पाकर पथ-भ्रष्ट हो सकता है। पर मैं तो इन पर पूरी पूरी विजय पा सकता हूँ।

उत्तरदायित्व—जिम्मेदारी—अपने सिर लेने से मत घबराइए। इस बात का पक्का इरादा कर लीजिए कि जो उत्तरदायित्व हमारे सिर पड़ेगा, उसे हम दूसरे मनुष्यों से कहीं ठीक निभाएँगे। मेरी राय में यह एक बड़ी भूल है कि हम अपने वर्तमान उत्तरदायित्व से यह ख्याल कर बरी होने की कोशिश करते हैं कि आगे हम योग्य बन कर ऐसे उत्तरदायित्व को अपने सिर पर ले लेंगे। मान लीजिए—आपको कोई पद मिलता है-जो जिम्मेदारी का है, आप उसे लेने से घबराते हैं। आप चाहते हैं कि इसे फिर लेंगे अभी नहीं—तो कहिए इसमें आपको क्या लाभ होगा? यदि आप उसे ग्रहण कर लेंगे और सुचारु-रूप से चलाते रहेंगे तो धीरे धीरे आपकी आदत में यह बात परिणत हो जायगी और आपको उसकी तनिक भी झुँझलाहट न मालूम पड़ेगी। आपको तनिक भी बोझ मालूम न पड़ेगा। और इससे

आपकी ऊँचे पद को ग्रहण करने की योग्यता बढ़ जायगी— सहज स्वभाव से आप जबरदस्त जिम्मेदारी के काम को कर सकेंगे।

जो वस्तु आपके लिए परम हितकर है, चाहे वह कितनी ही कठिन एवं अप्राप्य क्यो न मालूम होती हो, आप उसे प्राप्त करने के लिए निश्चय कर लीजिए। जरूर वह आपको प्राप्त होगी। इस तरह के निश्चय से आपका मनुष्यत्व बढ़ेगा।

महानता की आकांक्षा करने से मत डरिए। खुले दिल से इस तरह की आकांक्षाएँ करते जाइए। जरूर आपमें वे शक्तियाँ विकसित होकर सहायता करेंगी, जिन की आपको स्वप्न में भी कल्पना न थी।

महानता की महत्वाकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है, वे जागृत हो जाती हैं।

आप अपने आपको हमेशा सौभाग्यशाली ख्याल कीजिए। ऐसा करने की आदत डाल लीजिए। फिर देखिए कि इसका क्या प्रभावशाली फल निकलता है। आप इस बात की आदत डाल लीजिए, जिससे आप जीवन के प्रत्येक अनुभव से श्रेष्ठता ही की आशा रख सकें। लोगों को आप इस बात का विश्वास करा दीजिए कि वे आपको सौभाग्यशाली समझें—उनका ख्याल हो जाय कि हर कार्य्य में आपको यश मिलेगा।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट थिओडर रुजवेल्ट की लोगों में ख्याति हो चुकी थी कि जिस काम को वह हाथ में लेते हैं, उसमें यश पाते हैं। इस तरह की ख्याति से इन महानुभावों को बड़ा ही लाभ हुआ। महाशय रुजवेल्ट की यह ख्याति

थी कि वे राज्य के मामले में बड़े ही कुशल हैं—अद्वितीय हैं। उन से बड़ी बड़ी आशाएँ की जा सकती हैं। वे चाहे जो कुछ करते हों—चाहे जिस मार्ग पर जा रहे हों पर लोगों का विश्वास रहता था कि वे अवश्य ही विजयी होंगे। इस तरह के आशा मय विचारों प्रभाव से महाशय रूजवेल्ट की कार्य्य-सम्पादन-शक्ति को बड़ी सहायता मिलती थी। उनकी इच्छा-शक्ति इस तरह की दिव्य सहायता पाने से खिल उठती थी। उन्हें विश्वास हो उठता था कि परम पिता जगदीश्वर ने महान् कार्य्य करने ही के लिए मुझे उत्पन्न किया है। सृष्टिकर्त्ता का उद्देश्य यह है कि मैं महान् कार्य्य करूँ। देश की सुख, समृद्धि और सभ्यता के बढ़ाने में लग जाऊँ। मेरे ही हाथों यह कार्य्य होना है।

कहना होगा कि उनको आत्म-श्रद्धा ने देश के विश्वास को अपनी ओर खींच लिया। उनकी सुकीर्ति की मनोहर सुगंध आज अमेरिका राष्ट्र के हृदय को आनन्द के हिलोरे खिला रही है। जितना तुम अपने इस आत्म-विश्वास को बढ़ा लोगे कि जो कुछ हम चाहते हैं, वह हम कर सकेंगे, उतनी तुम्हारी कार्य-कर योग्यता बढ़ती जायगी। आप बड़प्पन का ख्याल कीजिए, आप जरूर बड़े होंगे।

कार्य्य और आशा

देखा जाता है कि बहुत से मनुष्य योग्यता के रहते हुए भी अपने सारे जीवन में बहुत ही कम काम कर सकते हैं; क्योंकि वे बड़ी बुरी तरह निराशाजक प्रेरणाओं के शिकार बन जाते हैं। जब वे किसी काम में हाथ डालते हैं, तभी से असफलता के चिन्ह उन्हें दीखने लग जाते हैं, लाचारी ही के विचार उनके मनमें ज्यादातर आने लगते हैं, इसीसे उनकी कार्य-कर शक्ति मारी जाती है।

मैं अभागा हूँ। परमात्मा ने मुझे भाग्य-हीन ही पैदा किया है—दैव मेरे विपरीत है—इस तरह की खराब प्रेरणाओं का जैसा भयङ्कर परिणाम हो जाता है, वैसा किसी दूसरी बातों से नहीं होता। हमें जानना चाहिए कि भाग्य हमारे मानस क्षेत्र में ही छिपा है। वह किसी तरह मनोक्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। हम ही हमारे भाग्य के कर्त्ता विधाता हैं। हम में वह शक्ति है कि हम अपने भाग्य पर पूरी तरह शासन कर सकते हैं।

हम देखते हैं कि एक ही गाँव में जहाँ बहुत से मनुष्य यह रोना रोया करते हैं कि हमारी परिस्थिति अनुकूल नहीं है, हमें किसी प्रकार की सुविधाएँ नहीं हैं, वहाँ वैसी ही अवस्थाओं के दूसरे मनुष्य उन्नति करते जाते हैं और दुनिया में अपना वज़न बढ़ाते जाते हैं।

उस मनुष्य के लिए क्या किया जाय जिसका ख्याल ही ऐसा है कि मैं अभागा ही जन्मा हूँ। मुझे सफलता—विजय प्राप्त नहीं हो सकती। असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है, जितना बबूल के काटों से गुलाब के पुष्प का निकलना।

जब मनुष्य गरीबी के—असफलता के—विचारों से बहुत हैरान हो जाता है; जब केवल ये ही विचार उसके मगज़ में घूमा करते हैं; तो उसके मन पर इन्हीं विचारों का सिक्का जम जाता है, जिसका परिणाम उसके लिए बहुत बुरा होता है। ये विचार उसके मनोरथों को सिद्ध नहीं होने देते।

हम अपने भाग्य पर बहुत आरोप लगाया करते हैं, जो कि वास्तव में हमारे ही विचारों का फल है। हम देखते हैं कि बहुत से लोग बड़ी योग्यता के न होने पर भी उन्नतिशील दिखाई देते हैं, जब कि हम योग्यता के होते हुए भी असफलता के बड़ी बुरी तरह शिकार बन जाते हैं। हम केवल यह सोच कर बैठ जाते हैं कि दैव उन्हें मदद कर रहा है, विधाता ने उनके भाग्य में सौभाग्य-शाली होना लिखा है, पर हमारे भाग्य वैसे तेज़ नहीं, दैव हमारे विपरीत है, क्या करें ? वे इस बात को नहीं सोचते कि उनका भाग्यशाली होना और हमारा कमनसीब होना, यह सब अपने अपने विचारों का फल है।

हम यह नहीं जानते कि हम अपने विचारों का किस तरह संचालन करें। हम अपने विचारों पर बराबर अधिकार नहीं रखते। हम अपनी आत्मा पर अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी कराने के लिए ज़ोर नहीं देते। हमें चाहिए कि हम अपने

आपको दिव्य और अलौकिक प्रकाश में देखें। हमें चाहिए कि हम अपने आपको सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानें और यह दावा करते रहें कि अनन्त शक्ति—अनन्त वीर्य—हमारी आत्मा में मौजूद है। अपने आपको दिव्य मानने से आप मत डरिए, क्योंकि यदि जगत-कर्ता परमात्मा ने आपको बनाया है तो जरूर आप में उसकी दिव्य शक्ति—दिव्य गुण—मौजूद हैं। जरूर आपका ईश्वरीय शक्ति पर अधिकार है।

आकांक्षाओं के अनुकूल प्रयत्न करते रहना और आचरण करना, इस बात में सचमुच एक अजीब तरह की उपज-शक्ति भरी हुई है।

मसलन् यदि आप तन्दुरुस्त रहना चाहते हैं तो तन्दुरुस्ती के ख्याल को इफरात से अपने मन में आने दीजिए। उसके मार्ग में किसी तरह की रोक मत कीजिए। आप तन्दुरुस्ती का भाव रखिए, बातें तन्दुरुस्ती की कीजिए। दावा कीजिए इस बात का कि उस पर हमारा स्वाभाविक हक है।

यदि आप समृद्धिशाली होना चाहते हैं तो समृद्धि के विचारों को बहुतायत से अपने मनोमन्दिर में आने दीजिए। कभी इस बात को मत सोचिए कि समृद्धि के विपरीत गुण रखनेवाली कोई वस्तु हमारे मन में प्रवेश कर जायगी। अपने मानसिक भाव को—अपने आचरण को समृद्धि के अनुकूल बना लीजिए आप समृद्धिशाली, उन्नतिशील मनुष्य सा बर्ताव कीजिए, उसके समान पोशाक पहनिए, उसके समान अपने विचारों को बना लीजिए। जरूर आपको सफलता प्राप्त होगी। समृद्धि के तत्व आपकी ओर खिंच आवेंगे।

जैसे बनना चाहो वैसे ही विचारों से हृदय को भर दो

यदि आप शूर वीर और बहादुर होना चाहते हैं तो आप निर्भयता के—बहादुरी के ख्यालों ही को अपने मन में आने दीजिए। निश्चय कर लीजिए कि हम किसी बात से न डरेंगे। कोई हमें डरपोक नहीं बना सकता। यदि आप डरपोक हैं, बात बात में आपको शङ्का होती है और आप इस तरह की कायरता को छोड़ना चाहते हैं तो अब इस बात का ख़्याल कर लीजिए कि हम मनुष्य हैं, कायर जन्तु नहीं, हमें डर किस बात का ? डर हमारे सामने आ नहीं सकता। हमारी रचना ही परमात्मा ने ऐसी की है कि उसमें भय के तत्व ही नहीं रखे हैं; हम दुनिया में महान साहसिक काम करने के लिए बनाये गये हैं। इस तरह के विचारों की रोजमर्रा पुनरावृत्ति कीजिए और फिर देखिए कि वीरता के कैसे कीमती जोहर आपकी आत्मा में पैदा होते हैं।

यदि आपको माता पिता यह कहें कि तुम मन्दबुद्धि हो, डरपोक हो तो इस बात से साफ इन्कार कीजिए। कभी ऐसी बातों का असर अपने पर मत होने दीजिए। हृदय से इस बात का विश्वास करते रहिए कि हम मन्दबुद्धि नहीं—हम क़ायर नहीं। हमारे अन्दर वह योग्यता है, वह साहसिकता है, जिससे हम बड़े-बड़े कार्य्य कर सकते हैं, दुनिया हमारे कामों को देखकर दंग रह जायगी।

इस निश्चय से कि जो हम चाहते हैं, हम वह कर सकेंगे, जितना आप अपने आत्म-विश्वास को बढ़ावेंगे, उतनी ही आपकी योग्यता बढ़ेगी।

लोग आपके बाबत चाहे जो ख्याल करें पर आप इस विचार पर जमे रहिए कि जो कुछ आप करना चाहते हो, वह आप कर सकोगे, जो आप होना चाहते हो वह आप हो सकोगे।

आपको यह बात न भूलना चाहिए कि आत्म-प्रेरणा(Self-suggestion)में बड़ी शक्ति भरी हुई है। आप हमेशा इस तरह का आचरण रखिए। इस तरह से वर्तिए कि जिससे स्वयमेव आपकी मानसिक प्रेरणा विजय, वृद्धि, उन्नति और उच्चता के लिए स्फुरित हुआ करे। लोगों में आपकी वाह वाह हो जाना कि आप उन्नति के मार्ग पर बढ़ी तेजी से अग्रसर हो रहे हैं—आप महापुरुष होते जा रहे हैं—समाज में वजन प्राप्त कर रहे हैं—क्या कुछ कम बात है ?

जब आप किसी मनुष्य से मिलते हैं, तो तत्काल आपके मानसिक भावों का प्रभाव उसपर पड़ने लगता है। यदि आप में कुछ प्रभाव भरा हुआ होगा तो वह उस पर पड़े बिना किसी तरह न रहेगा। यदि वह आप में यह बात देखेगा कि आपकी प्रवृत्ति उच्चता की ओर लग रही है—आप बड़े मनुष्य होने वाले हैं—दिन दिन आप उन्नति कर रहे हैं, तो उसका यह ख्याल जरूर हो जायगा कि आप होनहार हैं।

कभी आप अपने आपको नीच, दीन, दुःखी दरिद्री, ख्याल मत कीजिए। कभी यह बात मत मान बैठिए कि हम निर्बल, अकर्मण्य और रोगग्रस्त हैं। आप अपने को हमेशा पूर्ण और साङ्गोपाङ्ग खयाल कीजिए। कभी आप इस विचार को मत फटकने दीजिए कि हमें असफलता का सामना करना पड़ेगा।

दुःख दरिद्रता और असफलता उस मनुष्य के पास कभी नहीं फटक सकती, जिसने अपनी प्रकाशमय बाजू को देख लिया है—जो दैवी तत्वों में तन्मय रहता है। यह तो उन्हीं के पल्ले पड़ती हैं जिन्होंने अपनी दैवी तत्वों में तन्मयता नहीं प्राप्त की है, जिन्होंने अपनी शक्तियों का विकास नहीं किया है।

इस बात को जोर के साथ मानते रहिए कि संसार में हमारे लिए जगह है और हम उस पर अधिकार करेंगे। और अपनी आत्मा को ऐसी शिक्षा दीजिए जिससे वह महान् आशा रखना सीखे। आप अपने चाल-चलन-आचार-विचार—से कभी इस बात को मत प्रकट कीजिए दुनिया में हम क्षुद्र कामों ही के लिए बनाये गये हैं। आप अपनी प्रकृति को निश्चयात्मक् रखने का मुहावरा डालिए—आप हमेशा सुख-समृद्धि के विचारों के प्रवाह को अपने मन में बहाइए—जरूर ये आपको संसार में योग्य स्थान दिलवाएँगे।

विचार ही शक्ति है। हम और हमारी अवस्थाएँ विचारों के फल हैं। हम अपने विचारों के बाहर नहीं जा सकते।

किसी महापुरुष ने कहा है—"मानवी कर्तव्य बस इस बात में समा गया है कि पहले यह जान लेना कि हम क्या होना चाहते हैं और फिर निरन्तर उसी का विचार किया करना।" सेण्ट पाल नामक सुप्रसिद्ध साधु ने शुद्ध विचार के तत्व को बखूबी समझ लिया था। वह इस बात को जान गया था कि जो आदर्श निरन्तर हमारे मन में रहते हैं, वे ही हमारे चरित्र को सङ्गठित करते हैं—वे ही हमारी आत्मा को सुश्रृंखलित करते हैं, इसीसे उसका उपदेश बड़े अच्छे विचारों से भरा हुआ है।

वह यह है "जो कुछ सत्य है, जो कुछ प्रामाणिक है—जो कुछ न्यायपूर्ण है—जो कुछ प्रेममय है अर्थात् जिसमें श्रेष्ठता और उच्चता विद्यमान है, उसी का विचार करो।"

"उसी का विचार करो" यह कहने से सेण्टपाल का यह उद्देश नहीं है कि तुम उन बातों को मन में केवल इधर-उधर घुमाया करो, पर उन पर अपनी स्थिति को कायम करो-मनोमन्दिर में उनकी नींव जमा दो। तब तक उनका पीछा मत छोड़ो जब तक कि वे तुम्हारी आत्मा में परिणत न हो जावें—ठीक तरह बैठ न जावें—जब तक कि वह तुम्हारी—आत्मा का एक विशेष अङ्ग न बन जावे। यदि हम बुरे विचार पर स्थित रहेंगे, तो हम में बुराई ही पैदा होगी। यदि हमारी आत्म-प्रेरणायें हीन और अशुद्ध होंगी तो हम भी हीन बन जावेंगे। सेण्ट पाल ने इस बात को अच्छी तरह जान लिया था कि जिन पदार्थों पर हम अपनी स्थिति कायम करते है, जिनका हम मनन करते हैं, वही पदार्थ हमारी मानसिक माला में गुंथ जाते हैं।

मैं चाहे जो करूँ, पर मैं अपने विचारों के बाहर नहीं जा सकता। मैं अपने विचारों ही के वायुमण्डल में रहता हूँ। मेरे आदर्श मेरे सिर के आस पास हमेशा चक्कर लगाया करते हैं—आत्म-प्रेरणाओं का मुझपर हमेशा असर हुआ करता है।

यदि मेरे विचार संकीर्ण हैं तो मैं संकीर्ण-संसार के परिसर से बाहर नहीं जा सकता। यदि मेरे विचार दुष्ट, उदासीन और असहिष्णु हैं तो मैं कभी उदार और श्रेष्ठ संसार में नहीं रह सकता! मैं उसके सच्चे आनन्द को नहीं लूट सकता और मुझे यह अधिकार नहीं है कि संकीर्ण विचारों के रखते हुए मैं यह

दावा करूँ कि मुझे श्रेष्ठ संसार में स्थान मिले। यह दावा करना ठीक वैसा ही है, जैसे बबूल का पेड़ रोप कर आम के मीठे फलों की आशा करना।

यह बात सच है कि हम अपने ही उत्पन्न किये वायुमण्डल में रहते हैं पर उसके साथ साथ यह बात भी असत्य नहीं है कि हम अपने विचार-परिवर्तन द्वारा उसे बदल सकते हैं। जिस तरह के हमारे विचार होंगे—जैसे हमारे विचारों का गुण होगा—वैसा ही और उसी गुण वाला वायुमण्डल हमारे आस-पास बना रहेगा।

अब यह बात भली भांति सिद्ध हो चुकी है कि जो मनुष्य बुरी आदतों के शिकार बन चुके हैं, वे अपने आपको बखूबी सुधार सकते हैं, यदि वे सुधरने का निश्चय करके अपने विचारों में परिवर्तन करना शुरू कर दें—यदि वे मन, वचन और काया से इस बात को मान लें कि अब हम बुरी और हीन आदतों से कोई वास्ता नहीं रक्खेंगे। शराबखोरी आदि सब व्यसनों से अब हम सदा के लिए अपना सम्बन्ध तोड़ देंगे।

मैं नहीं समझता कि आप अच्छी कार्य-सम्पादन-शक्ति को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, जब कि क्लेश, भय, चिंता; अनुत्साह आपके आन्तरिक शक्ति को नोच नोच कर चबा रहे हैं। आप इन शत्रुओं से अपने मन को मुक्त कीजिए अन्यथा आप में यह कुछ भी बाकी न छोड़ेंगे—सब खा जावेंगे!

द्वेष ने हजारों जीवों का नाश कर दिया है। मानवी मन में द्वेष जैसी भयंकरता उत्पन्न करता है, वैसी दूसरा कोई नहीं करता। इस भयंकर राक्षस ने संसार का कितना संहार किया है।

इसी के प्रभाव से बड़े बड़े बुद्धिमान् एवं प्रतिभा-सम्पन्न मनुष्यों का जीवन मिट्टी में मिल गया है। इसी ने संसार में रक्त की नदियाँ बहाई—भाई भाई में तलवारें चलवाईं—राष्ट्र के राष्ट्र गारद कर दिये। उन लोगों के हाथ से भी इस दुष्ट ने कैसे कैसे अत्याचार करवाये, जिसका मन इसके आक्रमण के पहले बड़ा ही शुद्ध और निर्मल था।

तुम उन विचारों को अपने मन से बाहर निकाल दो, जो तुम्हारे मन को बुरे मालूम होते हैं। क्या चिंतापूर्ण विचार, क्या दुष्ट विचार, क्या भयपूर्ण विचार ये सब तुम्हारी उपजशक्ति को पंगु बनानेवाले हैं।

छाती पर हाथ ठोक कर इस बात को कहो कि हम में योग्यता, बल और कार्यसम्पादन-शक्ति भरी हुई है। ये शक्तियाँ हमारी मानसिक-शक्ति को बड़ा ही अपूर्व लाभ पहुँचाने वाली हैं इसी तरह के विचार से—इसी तरह के आदर्श से—मनुष्य बलवान बनता है।

अपने जीवन के दुःखमय अनुभवों को भूल जाओ। कभी उन्हें याद मत करो; क्यों कि इससे तुम्हारी उपज-शक्ति मारी जाती है—तुम्हारी प्रतिभा का विनाश होता है। तुम अपने जीवन के सुखमय अनुभवों को याद करो, इससे तुम्हारे मस्तिष्क की शक्ति खिल उठेगी। तुम्हारी प्रतिभा-शक्ति को अपूर्व प्रोत्साहन मिलेगा। परवाह मत करो इस बात की कि लोग तुम्हारे विषय में क्या ख्याल रखते हैं, तुम अपने मन में यह बात कहते रहो "मुझमें वह शक्ति है—वह योग्यता है—वह कार्य सम्पादन का बल है—कि मैं दुनिया में अपूर्वता प्रकट कर

सकता हूँ। दूसरे बड़े लोगों के समान मैं भी हो सकता हूँ। संसार में ऐसा कोइ पदार्थ नहीं है, जो मेरी मानसिक शक्ति को भंग कर सके—जो मेरी कार्य संपादन-शक्ति का नाश कर सके। मैं दुनिया में अपनी अपूर्वता का संदेश फैलाउँगा। दुनिया में मैं उस रोशनी का प्रकाश करूँगा जिससे कि वह अन्धकार में से निकल जावे और प्रकाश की ओर उसकी गति हो जावे। ईश्वर ने मेरी बनावट ही में वह तत्व रक्खा है, जिससे मैं इन महान् कार्य्यों को कर सकूँगा। दूसरे मनुष्य जो आन्तरिक प्रकाश को प्रकाशित करने में हिचकते हैं, इसका कारण यह है कि उन्हें इस बात का विश्वास नहीं रहता कि अनन्त शक्ति—परमात्मा—के हम अंश हैं—हम में अपूर्व योग्यता भरी हुई है—हमारी कार्य-संपादन-शक्ति बहुत अद्भुत है, पर मुझे तो इस बात का कारण ही दिखाई नहीं पड़ा कि मैं दुनिया में अपना सन्देशा सुनाने के क्यों योग्य नहीं हूँ ?

जब आपको मालूम हो कि उदासी का परदा हम पर पड़ा चाहता है, जब आपको ऐसा मालूम हो कि नीच विचार हमारे पास आना चाहते हैं, जब आपको ऐसा मालूम हो कि हमारा मन बेकाबू हो रहा है, आप नीचे लिखे अनुसार किया कीजिए।

आप एकदम काम करना बन्द कर दीजिये और घर से बाहर निकल कर किसी शान्त जगह में चले जाइए। हो सके तो किसी ऐसी जगह में चले जाइए जो शान्त और प्राकृतिक सौन्दर्य्य से विभूषित हो। वहाँ एकचित्त होकर इस बात का विचार कीजिए कि अब मैं अपने मन से उन कुविचारों को

देश-निकाला देता हूँ जो कि मेरी मानसिक एकाग्रता में विघ्न डालते हैं और मेरे मन को ठिकाने नहीं रहने देते। उस समय आप केवल उन पदार्थों का जो सुन्दर आनन्दपूर्ण और एकाग्रता के सूचक हों, ध्यान कीजिए। ऐसी ही वस्तुओं का वहाँ मनन कीजिए। वहाँ आप यह निश्चय कर लीजिए कि अब हमारे मन में आनन्द-परिपूर्ण विचारों ही का प्रवाह रहेगा। उदासीनता के विचार मेरे पास फटकने तक न पावेंगे।

दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि आप किसी प्रशान्त स्थान में निश्चय कर लीजिए कि हम उन गुणों का विकास करेंगे जो सच्चे मनुष्यत्व के द्योतक हैं। इस बात को विश्वास-पूर्वक मनन करते रहिए कि संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो उस महापुरुष को प्राप्त न हो, जिसने अपनी शक्तियों का पूर्ण रूप से विकास किया है। परमात्मा ने हमें इसलिए बनाया है कि हमसें दिव्य शक्तियों का विकास हो—किसी तरह की कमी और अपूर्णता न रहे। इस तरह के दिव्य विचारों के समुद्र में अपने मन को हिलोरे देते हुए आप अपने मकान पर जाइए। खुली हवा में सानन्दित होकर विजय की सफलता के श्वासोच्छ्वास लीजिए और फिर अपने काम पर लौटिए और उस सफलता का मज़ा चखिए जो ऐसा करने से आपको प्राप्त होगी। मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ कि आप अपने में दिव्य-शक्ति और नवजीवन का संचार होता हुआ देख कर आश्चर्यचकित हो जावेंगे।

मेरे एक मित्र है जिन्हें उपर्युक्त क्रिया से बड़ा लाभ पहुँचा

है। जब कभी उन्हें मालूम होता था कि मेरे हाथों से इच्छानुसार काम नहीं हो रहा है, मेरी बुद्धि भ्रमित होती जाती है, मेरी निर्णय-शक्ति का ह्रास हो रहा है, तब वे अकेले किसी निर्जन, शांत और सुन्दर वन में चले जाया करते थे और हृदयपूर्वक ये उद्गार निकालते थे।

"हे नवयुवक! अब तुम्हें उस मार्ग पर जाने की आवश्यकता है, जो उन्नति के द्वार तक पहुंच रहा हो। अभी कुछ पहले तुम्हारे जीवन की मधुरता ना रही थी, तुम्हारा आदर्श गिर रहा था। तुम अपनी गरीबी की हालत से बेपरवाह थे। तुम कुछ भी अच्छा नहीं कर रहे थे। तुम यह नहीं जानते थे कि इ। तरह की निश्चेष्टता और आलस्य से तुम्हारी कार्य्यसम्पादिका शक्ति पर बड़ा ही गहरा घाव लगता है। अच्छे अच्छे अवसरों को तुम हाथ से खो देते थे, क्योंकि तुम उन्नति के पथ पर नहीं थे।"

"अब तुम्हें अपने आदर्शों को साफ करने की ज़रूरत है, क्योंकि उन पर जंग जमता जा रहा है। तुम सुस्त होते जा रहे हो। हर एक की आसानी तुम चाहने लगे हो। याद रक्खो कोई मनुष्य उस आदमी को नहीं मानता जो अपनी शक्तियों को व्यर्थ खोता है, अपने आदर्श को गिरने देता है, अपनी महत्वाकांक्षा को मुरझाने देता है। पर हे नवयुवक! अब से मैं तुम पर तब तक नजर रक्खूँगा, जब तक कि तुम अपने ठीक राह पर न आ जाओ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसा किये बिना तुम्हारा ध्यान अपने ध्येय पर पहुँचना असम्भव है।

तुम में वह योग्यता है जिससे तुम वर्तमान समय से बहुत अच्छा काम कर सकते हो। आज रात को तुम इस दृढ़-निश्चय से कार्य्य आरम्भ करो कि नित्य ही ज्यादा सफलता प्राप्त होगी; तो तुम्हारे लिए विजयी होना कोई बड़ी बात नहीं। तुम्हारा जीवन विजय के लिए है। निश्चय कर लो कि आज का दिन तुम्हारे लिए विजय का दिन होगा। तुम अपने आपको कार्य्य में लगादो। अपने मानसिक जालों को बाहर निकाल कर फेंक दो—उसे बिलकुल साफ कर डालो और केवल अपने उद्देश्य का—अपने ध्येय का—मनन करो।

तुम अपने हाथ से एक भी अवसर मत जाने दो। उसे धर कर पकड़ लो। उसका अच्छा उपयोग करो। जितना लाभ तुम उससे खींच सकते हो, खींच लो।

बहुत से मनुष्य रोया करते हैं कि क्या करें हमारे ग्रह अच्छे नहीं हैं; पर वे यह नहीं जानते कि हमारी सफलता हम से प्रकट होती है न कि हमारे ग्रहों से! वही आदमी मार खाता है, जो अपने को कमजोर समझता है। वही आदमी क्षुद्र है जो अपने को क्षुद्र और हीन मानता है—जो यह मानता है कि संसार के सर्वोत्कृष्ट पदार्थ दूसरों के भाग्य में लिखे हैं, मेरे में नहीं। दुनिया उसी की रहती है, जो उस पर विजय पाता है। अच्छे पदार्थों के स्वामी वे ही हो सकते हैं जो अपनी शक्ति से उन्हें प्राप्त करते हैं।

जिस मनुष्य ने यह शक्ति प्राप्त कर ली है कि वह अपने मन को उन्हीं विचारों से भरे जो ऊँचे उठाने वाले हों, आशा-पूर्ण हों, आनन्दमय हों; वही संसार में बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है।

ऐसे मनुष्य मानसिक विष को फैलाते हुए दीख पड़ते हैं। ऐसे मनुष्यों के लिए मालूम होने लगता है मानो उन में मानसिक विष फैलाने ही की प्रतिभा काम कर रही है। वे अपने से मिलने जुलनेवाले हरएक मनुष्य के मन में अन्धकारमय और निराशा-जनक विचारों ही का प्रवाह चलाते रहते हैं। अपनी उदासी की अन्धकारमय छाया वे हर मनुष्य पर गिराते रहते हैं। उनका विश्वास रहता है कि परमात्मा ने उनके लिए आनन्द उत्पन्न किया ही नहीं, उदासी का परदा उनके अन्तःकरण से किसी तरह नहीं हट सकता, निराशा उनके पल्ले बँधी हुई रहती है।

पर यह सब खामोखयाल है। कोई मनुष्य दुःखी और दरिद्री होने को नहीं जन्मा है—कोई दुनिया में उदासी का अन्धकार फैलाने के लिए—दूसरों के आनन्द को मिटाने के लिए—नहीं जन्मा है! परम पिता परमात्मा की इच्छा है कि हम सब उसके पुत्र खूब आनन्द में मग्न रहें—खुशमिजाज रहें—मस्त रहें।

तुम्हें इस बात का अधिकार ही नहीं है कि मुँह पर घोर उदासी एवं खिन्नता की मुद्रा दर्शाते हुए—मानसिक विष फैलाते हुए—भय, शंका, अनुत्साह और निराशा के कीटाणु फैलाते हुए—मानव समाज में विचरण करो। जिस तरह किसी के शरीर को चोट पहुँचाना तुम्हारे अधिकार के बाहर है, उसी तरह उक्त बात भी तुम्हारे अधिकार की सीमा में नहीं। तुम्हें यह अधिकार नहीं कि तुम इस तरह दूसरों के सुखों पर भी पानी फेरो—उनकी आनन्दमय प्रकृति पर उदासी का काला परदा डालो।

देखा जाता है कि बहुत से उदासी—निराशा की खिन्न मुद्रा

(६)

उदासीनता से हानि

जो मनुष्य खुशमिजाज़ है, जिसकी प्रकृति आनन्दमय है, जो हमेशा आनन्द-समुद्र में लहराता रहता है, भारी से भारी विपत्ति आ पड़ने पर भी जिसकी मुस्कुराहट बराबर बनी रहती है, घोरातिघोर दुःखों के आक्रमण करने पर भी जिसके मुख-मण्डल पर हास्यरेखा बराबर झलका करती है- वह इस तरह की आनन्दमय प्रकृति से खुश मिजाज़ से केवल अपने आप ही को फायदा नहीं पहुँचाता है, पर उस मनुष्य को भी जीवन की मधुरता का अनुभव कराने में सहायक हो पड़ता है, जिसका धैर्य, आशा और भरोसा ही नष्ट हो गया है। क्या हम उस मनुष्य को बहादुर नहीं कह सकते—वीर की सम्माननीय उपाधि से विभूषित नहीं कर सकते जिसके मुख-मण्डल की हास्यरेखा उस समय भी नहीं मिटती जब उसके जीवन का हरएक पासा उलटा ही पड़ता रहता है। हर बात उसके विपरीत होने लगती है। ऐसे मनुष्य के लिए हम जरूर यह कह सकते हैं कि उसका निर्माण जड़ प्रकृति पर विजय पाने-के लिए किया गया है; क्योंकि साधारण मनुष्य इस तरह की अलौकिक वीरता नहीं दिखा सकता।

अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध मि० कार्लाइल महोदय का कथन है- " कुछ मनुष्य केवल दरिद्री होने की शक्ति ही में धनी होते हैं।"

को लिए हुए घर के कोनो में बैठे मक्खियां मारा करते हैं। वे उदासीन विचारों को बड़े आदर के साथ—बड़े सम्मान के साथ बुलाते रहते हैं—वे अपनी दरिद्रता और दुर्भाग्य ही का बार बार विचार किया करते हैं—वे जब देखो तब अपने कष्टों की यन्त्रणाओं की—बात छेड़ा करते हैं। हर मनुष्य से वे यही कहते रहते हैं कि क्या करें हम कमनसीब हैं, ईश्वर ने हमारे भाग्य में सुख नहीं लिखा, हमारा भाग्य फूटा हुआ है, दैव हमारे विपरीत है। उनकी मुख मुद्रा की ओर देखने से साफ मालूम होता है कि मानों उन पदार्थों से उन्होंने अपना गहरा संबन्ध जोड़ लिया है, जो उनके जीवन की मधुरता का नाश कर रहें हैं, उनके उन्नति के मार्ग में कांटे बिछा रहे हैं। इस तरह वे हमेशा अनजान में इस तरह के घोर निराशामय विचारों की जड़ अपने मन में जमाते जाते हैं।

मैं एक मनुष्य को जानता हूँ जो कि उदासीन और निराशाजनक विचारों की बलि पड़ चुका था। उसकी स्वाभाविक वृत्ति कुछ ऐसी हो गई थी कि जहां वह जाता था, वहां उदासी के निराशा के, वायु-मण्डल को अपने साथ फैलाता जाता था। जो मनुष्य उसकी ओर देखता था, उसके चेहरे पर भी उदासी छाये विना नहीं रह सकती थी। उसके औदासिन्य-परिपूर्ण मुद्रा की ओर देखने से मालूम होता था मानों समस्त संसार का दु:ख, विपत्ति इसी के सिर आ पड़ी है। उसके सम्मुख हँसना और आनन्द की बातें करना मानों दूसरे मनुष्य के लिए भी कठिन जान पड़ता था। चाहें जितने उत्साह-परिपूर्ण और आनन्दमय होकर आप उसके सामने जाइए, उसकी खिन्न मुद्रा

और निर्जीव बातचीत आपके मन पर खिन्नता का परदा डाल देगी। जब कभी मैं उसके पास जाता हूँ, तब मुझे मालूम होने लगता है कि मानों मैं सूर्य के तेजोमय आकाश से निकल कर घोर अन्धकार की ओर जा रहा हूँ।

परम पिता परमात्मा ने इस सुमनोहर पृथ्वी पर हमें इस लिए उत्पन्न किया है कि हम हमेशा खुशमिजाज़ रहें—मस्त रहें, आनन्द के समुद्र में लहराते रहे न कि उदास और खिन्नमुद्रायुक्त रहें।

महात्मा एमर्सन ने कहा है—"आनन्दी और उत्साही मुद्रा ही हमारी मानसिक उन्नति और सभ्यता की परमावधि है। सदा उस मनुष्य की ओर देखकर, जिसके मुख-मुद्रा पर अलौकिक प्रकाश चमक रहा है—अपूर्व शान्ति झलक रही है—दैवी आनन्द अपना प्रकाश फैला रहा है—हमारे मन में कैसे दिव्य भावों का उदय होता रहता है। ऐसे मनुष्य की ओर निहार कर स्वभाव से ही हमें मालूम होने लगता है कि मानों उसका परम तत्वों के साथ संबन्ध है—उसकी दिव्यता खिल रही है—परमात्मा से उसका निकटस्थ संबंध हो रहा है। जहाँ जहाँ वह जाता है, वहाँ स्वभाव ही से आनन्द, उत्साह और आशा की वर्षा करता जाता है। पर हाय! ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत कम होती है।

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए जगह नहीं जो उदास, खिन्न और निराश है। कोई मनुष्य उसके साथ रहना नहीं चाहता। हर मनुष्य उसकी हवा बचाने की कोशिश करता है।

उदासी और निराश मन बीमारी को बढ़ाने में सहायक हो

पड़ता है, क्योंकि वह हमारी उस शक्ति को नष्ट करता है, जो आधिव्याधि को हमारी ओर आने से रोकती है।

आत्म-पतन और उदासीनता जैसी भयङ्कर चीज दूसरी कोई नहीं।

अहा! जब एक आनन्दी और आशापूर्ण आत्मा, किसी ऐसी जगह जाती है जहाँ उदासी, अनुत्साह, निराशा छाई हुई है, तब वह अपने मसखरे स्वभाव—आनन्द-प्रकृति और हास्य से वहाँ आनन्द, आशा और उत्साह का मनोहर आभास फैलाता है। वहाँ बैठी हुई खिन्न मुद्राओं को इसके दर्शन मात्र से अलौकिक सुख का अनुभव होने लगता है—उदासी की जगह उनके मुख-मण्डल पर आनन्द और हास्य-भाव झलकने लगता है।

बहुत से मनुष्य विजयद्वार तक पहुँचने में असफल हो जाते हैं, इसका कारण यह है कि वे अपने मनोविकारों को वश में नहीं कर सकते। वे उनके गुलाम बने रहते हैं।

मनुष्य की यह एक स्वाभाविक प्रकृति है कि वह खिन्न और उदास मनुष्यों की संगति को टालना चाहता है; हमारी प्रवृति उन्हीं मनुष्यों की ओर झुकती है जो खुश मिजाज और आनन्दप्रिय होते हैं।

देखा गया है कि कुटुम्ब में केवल एक निराश और उदासीन मनुष्य के होने से सारा का सारा कुटुम्ब दुःखी और निराश मालूम होने लगता है। ऐसा मनुष्य अपने साथ साथ दूसरों को भी दुःखी और निराश बनाने का अपराध अपने सर लेता है।

ऐसे मनुष्य को खुद तो आनन्द लूटना दूर रहा दूसरों के आनन्द में भी वह कंटक-रूप हो जाता है।

मुझे स्मरण है कि एक मनुष्य खिन्नता की बीमारी से बड़ी बुरी तरह पीड़ित था। जब एकाएक उसके सामने किसी आकस्मिक उद्वेग का आवरण आ जाता था, तब उसका चेहरा बिलकुल ही बदल जाता था। वह पहचाना ही न जा सकता था। घोर चिन्ता के चिन्ह उसके मुख पर दृष्टिगोचर होने लगते थे। ऐसे समय वह कोई काम नहीं कर सकता था उसके मित्र उससे हवा बचाने लगते थे। मानसिक बीमारी की घोर व्यथा उसके मुखमण्डल पर छाई रहती थी।

क्या यह कुछ कम हृदय-द्रावक बात है कि एक बलवान और शक्तिशाली मनुष्य, जो कि दुनिया में बड़े बड़े काम करने के लिए बनाया गया है—संसार में अद्भुत शक्ति का प्रकाश करने के लिए जिसका जन्म हुआ है—वह इस तरह की निराशामय और औदासिन्य-परिपूर्ण स्थिति का गुलाम बना रहे जो हमारे जीवन-प्रकाश पर काला स्याह परदा डालती है। जो मनुष्य हजारों मनुष्यों का नेता बनने का सामर्थ्य रखता है—जो मनुष्य सैकड़ों मनुष्यों को किसी बड़े काम में लगा देने की शक्ति रखता है, उस मनुष्य का इन मानसिक भूतों के लिए पंजे में पड़ जाना, सचमुच कितनी खेद की बात है।

दुनिया में हमें ऐसे ऐसे मनुष्य दीख पड़ते हैं जिनकी महत्वाकांक्षा बहुत बढ़ी हुई होने पर भी, जिन के हाथों से बहुत मामूली काम होते है। इसका कारण यही है कि वे खिन्न और निराश रहते हैं।

वह मनुष्य जो अपने मन का गुलाम बना हुआ रहता है, कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता। मैं एक बुद्धिमान मनुष्य का जानता हूँ, जिसके लिए मेरा विश्वास है कि यदि वह अपने मनोविकारों के वलि न पड़ा होता तो दुनिया में बड़े बड़े काम करता। उसका स्वभाव ही कुछ विचित्र ढ़ंग का था। जब उसे अच्छी लहर आ जाती थी, तब तो वह बड़ा आशावादी बन जाता था और उन्नति की बातें करने लगता था। और जब आकस्मिक उद्विग्नता का आक्रमण उस पर हो जाता था, तब वह अपने को एकदम गिरा लेता था—निराशा में डूबा जाता था–अपनी सब आशाओं और आधारों को खो देता था।

अनुत्साह हमारी निर्णय-शक्ति को मलिन करता है। भय के दबाव में आकर मनुष्य चाहे जैसी मूर्खता का काम करने लगता है। किस मार्ग पर जाना, क्या करना इस बात को बताने में जब बुद्धि जवाब दे दे—जब तुम बड़ी गड़बड़ी और भय में पड़े हो, तब कुछ देर ठहर कर अपने चित्त को शान्त करो—स्थिर हो जाओ और फिर विचार करो, तुम्हें रास्ता जरूर मिलेगा।

जब तक आप किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते, जब तक कि आपके मन में भय, शङ्का और निराशा बनी हुई है, जब तक आपका मस्तिष्क भय और चिंता से परिपूर्ण है; तब तक किसी बात का निर्णय करने में मत लगिए। तुम अपनी राहों को तब ही सोचो जब तुम्हारा मस्तिष्क ठण्डा और शान्त हो। जब मन में डर रहता है, तब मानसिक शक्तियाँ

बिखरी हुई रहती हैं और हम एकचित्त होकर किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते।

बहुत से मनुष्य संसार में उन्नति नहीं कर सकते, इसका एक कारण यह भी है कि, वे महत्वपूर्ण बातों का तब विचार किया करते हैं, जब उनका मन भटकता हुआ रहता है और उसमें भय तथा शङ्का बनी रहती है।

उसी समय मनुष्य को अपने मन और मस्तिष्क को स्थिर और शान्त करने की विशेष आवश्यकता है, जब वह किसी आपद तथा गड़बड़ी में पड़ा हो। ऐसी दशा में जब हमें मालूम हो कि हम पर भय और आपद अधिकार जमा रहे हैं, तब हम किसी महत्वपूर्ण बात का निर्णय ही न करें। तुम पहले अपनी दशा को सुधार लो। इसका अच्छा उपाय यह है कि उस गड़-बड़ी को अपने मन से निकाल कर स्थिर करो। अपने आप पर तुम अपना अधिकार कर लो—अपने मन को समतोल कर लो, तब तुम्हारा मस्तिष्क इस योग्य हो जायगा कि वह चाहे जिस बात का निर्णय ठीक तरह कर सकेगा। पर इस बात का सदा सर्वदा स्मरण रक्खो कि व्यथित और गड़बड़ में पड़े हुए मन से किसी महत्वपूर्ण बात का निर्णय मत करो।

परम पिता परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम मानव-गण अपने मनोविकारों के गुलाम बने रहें, पर उसकी यह इच्छा है कि—हम अपने मन को अपने काबे में रक्खें—जो चाहें सो विचार उसमें आने दें—हम उस पर शासन—राज्य करें।

सुसंस्कृत मस्तिष्क के लिए यह बात बहुत सम्भव है कि वह उदासीनता—उद्विग्नता—के आक्रमण को एकदम रोक सके, पर

खेद की बात है कि हम लोग आनन्द उत्साह और आशारूपी सूर्य की किरणों को आने देने के लिए अपने मनोमन्दिर के द्वारों को खुले नहीं रखते। हम अपने मनोमन्दिर को केवल अन्धकार ही से पूर्णतया भर लेते हैं. इसीसे हमारी उदासीनता—उद्विग्नता—नष्ट नहीं होने पाती, संसार हमें अन्धकारमय दीखने लगता है।

मेरी राय में सब विद्याओं की शिरोमणि विद्या यह है कि हम अपने मन को साफ करना सीखें। मन को भद्दी वस्तुओं से हटाकर सुन्दर और सुमनोहर वस्तुओं की ओर जमाना—विरोध से हटा कर ऐक्य में उसे लगाना—मृत्यु के विचारों से हटा कर दिव्य जीवन के रहस्य में उसे लगाना—बीमारी के खयालों से हटा कर आरोग्य के मोठे विचारों में उसे सुखस्नान कराना, यह एक बहुत बड़ी बात है। ऐसा करना कोई सहज काम नहीं, पर मनुष्य के लिए यह सम्भव जरूर है। विचारों को ठीक ठीक रूप देने की इसके लिए बड़ी आवश्यकता है।

यदि तुम उन कुभावनाओं के लिए, जो तुम्हारी सुखशान्ति को लूटने वाली हैं, अपने मनोमन्दिर को बन्द किये रक्खोगे, तो धीरे धीरे यह हालत हो जायगी कि इनका रूख भी तुम्हारी ओर न हो सकेगा।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे मनोमन्दिर से अन्धकार निकल जावे तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को प्रकाश से प्रकाशित कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से विरोधभाव निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन क ऐक्य

के विचारों से भर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से असत्य निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को सत्य के विचारों से परिपूर्ण कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से कुरूपता निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को सौंदर्य के विचारों से परिपूर्ण कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से अपूर्णता निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को पूर्णता के विचारों से भर लें। परस्पर विरुद्ध विचार एक साथ ही मन पर काबू नहीं चला सकते। इस से आप अपने हितैषी विचारों ही को अर्थात् ऐक्यता सत्य और सौंदर्य्य के विचारों ही को अपने मन में क्यों नहीं लाते?

हमें चाहिए कि अपने मन से अप्रीतिकर, अस्वास्थ्यकर और मृत्यु के विचारों को हटाने का मुहाविरा कर लें। मन को इन कुविचारों से बिलकुल साफ कर अपना कार्य आरम्भ करें। हमें चाहिए कि हम अपनी मनरूपी गेलरी से काम, क्रोध, मान, माया लोभ और द्वेष के विचारों को हटाकर शुद्ध, सात्विक दया और सहानुभूतिपूर्ण विचारों को जगह दें।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट एक बड़े ही प्रतिभा-शाली और योग्य व्यक्ति समझे जाते हैं। संसार की सभ्यता पर प्रभाव डालने की उनमें शक्ति है। पर किसी काम को शुरु करने से पहले वे अपने विवेक से पूछ लेते हैं कि मैं अमुक कार्य करूँ या नहीं। "हां" का उत्तर मिलने पर ही वे अपने कार्य को शुरू करते हैं। क्योंकि वे इस बात को जानते हैं कि जिस काम को

करने में मन वचन, और विवेक ठीक तरह से स्वीकार कर लेते हैं, वह काम अच्छा होता है।

जब कभी तुम्हें ऐसा मालूम हो कि चिन्ताजनक विचार तुम पर अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं; उदासी का तुम पर आक्रमण हुआ चाहता है, तब तुम स्थिर, शांत और तन्मय होकर अपने हृदयकेन्द्र से इस तरह के विचारों के उद्गार निकालो। अहा! मैं मनुष्य हूँ—मेरी आत्मा दिव्य है—निर्दोष है—अनन्त शक्तियाँ गुप्त रूप से उसमें विद्यमान हैं। वह सुख, शान्ति, आनन्द और पूर्णता का आगार है। भला, ऐसी दशा में वहां दुःख, चिन्ता, रोग, शोक का क्या काम! पर मुझे कमजोर देखकर ये मुझपर अधिकार जमाना चाहते हैं, आज से मैं सँभल जाता हूँ। आज से मैं आत्मिक शक्तियों को प्रकाशित करने में यत्नवान होता हूँ। इससे हे मानव जाति के शत्रुओ! तुम मेरे मन से निकल जाओ, नहीं तो मैं जबरदस्ती तुम्हें निकाल दूँगा मेरी शक्ति के सामने अब तुम किसी तरह नहीं ठहर सकते, क्योंकि अब मैं सच्चा मनुष्य बनना चाहता हूँ। तुम्हारा ठौर ठिकाना निर्बल अज्ञानी ही के यहाँ लगेगा। मैं देखता हूँ कि सच्चे मनुष्यों के सम्मुख तुम्हारी शक्ति बेकाम हो जाती है।

यदि नेपोलियन औरग्रेन्ट अपने मनोविकारों के वश में रहते तो क्या वे सारे यूरोप को हिला सकते थे? यदि लिंकन अपने मनोविकारों के वश में रहा होता तो क्या वह एक किसान के घर में जन्म लेकर इतनी तरक्की कर सकता था? कभी नहीं।

हमारे कहने का मतलब यह है कि हमेशा अपनी आत्मा को सुख के—आनन्द के—संतोष के मीठे समुद्र में हिलोरे लिवाते

रहो। हमेशा मस्त रहो। दुःख, चिंता, और शोक को अपने मन से भुला दो। प्रकृति के सौंदर्य को—ईश्वर की अपार लीला को देखकर आनन्दित होते जाओ। जहाँ देखो वहाँ सुख ही के स्वप्न देखो। विपत्ति में भी सुख ही को देखो, हमेशा खुशमिजाज़ रहो। उदासी, दुःख चिंता, पर विजय पाने का सहज और सरल उपाय यही है। आनन्द—अलौकिक आनन्द—स्वर्गीय आनन्द—दैवी आनन्द के दिव्य प्रवाह में तन्मय रहो—अपनी आत्मा को उसकी ओर अभिमुख करो। कभी मुँह चढ़ा हुआ मत रक्खो। हमेशा हास्य की मधुर रेखा से अपने मुख-मण्डल की दिव्यता बढ़ाते रहो। बस यह उदासीनता पर विजय पाने का राजमार्ग है।

---

(७)

दैवी तत्व से एकता

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक प्रोफेसर शेलर महोदय ने कहा था कि वर्तमान शताब्दी का सब से बड़ा आविष्कार यह है कि विश्व के प्रत्येक पदार्थ में एकता का होना है—संपूर्ण जीवन में समानता का होना है।

सब विश्व में एक ही तत्व काम कर रहा है—एक ही जीवन, एक ही सत्य वर्तमान है। हम सब उस दैवी प्रवाह की ओर जा रहे हैं, जो ईश्वर तक जाता है। इस तरह का मनोभाव रखने से हमें एक प्रकार का अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त हो जाता है; हमारे मन का भय नाश हो जाता है।

जब हम विश्व के इस महा प्रभावशाली और जीवनप्रद दैवी तत्व का आत्मानुभव करने लगेंगे, तब हमारे जीवन में अलौकिक परिवर्तन होने लगेगा। वह एक नया रूप धारण करने लगेगा।

हम उसी परम तत्व के अंश हैं—हम उससे अलग नहीं हैं—जो गुण ईश्वर में हैं वे हमें भी बखूबी प्राप्त हो सकते हैं; क्योंकि हम उसी के तो अंश हैं, हम पूर्ण और अमर हो सकते हैं; क्योंकि पूर्ण परमात्मा से ही हमारी उत्पत्ति है, इत्यादि बातों का अनुभव करते रहने से हमारा जीवन एक प्रकार की अपूर्व अलौकिकता से परिपूर्ण हो जायगा। महान् आनन्द, महान् संतोष से वह भर जायगा।

इस बात को हमेशा मानते रहने से, कि अनन्त जीवन से हमारी एकता है, मैं और परम पिता एक ही हूँ; हमें अपूर्व धैर्य, आश्वासन और निश्चय प्राप्त होता है। हमारा विश्वास हो जाता है कि हम आकस्मिकता और किस्मत के गुलाम नहीं हैं हम उनको संचालन करनेवाले हैं—हम उनके स्वामी हैं।

जितना हम दैवी तत्व से एकता का संबंध जोड़ेंगे—जितने हम अपने परम पिता परमात्मा में तन्मय होवेंगे, उतना ही हमारा जीवन शान्तिमय, आश्वासनपूर्ण और उत्पादकशक्ति-युक्त होगा।

सेन्ट पाल महोदय कहते हैं-"मेरा विश्वास है कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गीय दूत, न सिद्धान्त, न शक्ति, न वर्तमान पदार्थ, न भविष्य में उत्पन्न होने वाले पदार्थ, न ऊँचाई, न गहराई, मतलब यह कोई भी पदार्थ हमें ईश्वरीय प्रेम से जुदा नहीं कर कर सकता।"

"तुम अपने आत्मा के सत्य को पहचानो, वह सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।"

सेन्ट पाल के उपरोक्त वचन का एक एक शब्द हमारी मनो-माला में ग्रथित करने योग्य है। सेन्ट पाल जैसा विश्वास रखने से हम भय, शङ्का, चिन्ता आदि के पंजे से अवश्य ही मुक्त हो जावेंगे।

जब मानव जाति को यह ज्ञान हो जायगा कि सर्व शक्तिमान् परमात्मा से उनकी एकता का सम्बन्ध है, तब उसके सब भय शङ्काएँ नष्ट हो जायँगी।

जहाँ मन को दैवी तत्व की थोड़ी सी झलक दीख गई। जहाँ उसे यह मालूम होने लगा कि अनन्त से मेरी एकता है;

फिर वह किसी चीज़ से न डरेगा, क्योंकि उसे इस बात का विश्वास हो जायगा कि सर्व शक्तिमान् परमात्मा मेरे साथ है, फिर मुझे डर किस बात का है ?

जितने ही हम ईश्वर के परम तत्त्व के पास होंगे, उतने ही हम पदार्थों के अटूट भण्डार के पास होंगे । जब हमें अलौकिक परम शक्ति का अनुभव होने लगेगा; जब हमें उस शक्ति का ज्ञान हो जायगा जो हमारे हाड़माँस वाले शरीर के पीछे रही हुई है, जब हमें मालूम होने लगेगा कि ईश्वर के हम बहुत पास हैं, तब हमारी शक्ति में अवश्य ही एक प्रकार की दिव्यता आ जायगी

यदि हम शक्ति के आन्तरिक दैवी प्रवाह की ओर खुले तौर से अपने मनोमन्दिर के द्वारों को खोल दें, तो हमारे जीवन में कितनी अलौकिक शक्तियों का विकास होगा, इसका अनुमान भी इस वक्त लगाना कठिन है ।

आज हम क्यों कमज़ोर और अकर्मण्य हो रहे हैं, इसका कारण यही है कि हम अपने कुविचार और असदाचरण के कारण आत्मा की इस अलौकिक शक्ति की ओर से अपने मनोमन्दिर के द्वारों को अपने हाथ से बन्द कर लेते हैं । जहाँ तक मनुष्य असदाचरण में प्रवृत्त है, वहाँ तक वह सच्ची शक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ।

जब जब मनुष्य कोई बुरा काम करता है, असदाचरण में प्रवृत्त होता है, तब तब वह अपनी शक्ति के बल को घटा लेता है। इस तरह बहुत से मनुष्य न्याय और प्रेम से नाता तोड़ कर ईश्वर से भी अपना नाता तोड़ लेते हैं । प्रत्येक कुकृत्य उस

तार को तोड़ देता है, जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है।

जब जब हम बुरा काम करते हैं, जब जब हम सत्य से विचलित होते हैं, जब हम कभी नीचता और बेईमानी का काम करते हैं, तब तब हम सर्वशक्तिमान् परमात्मा की दिव्य सत्ता से अपने आपको अलग कर लेते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि सब प्रकार के भय, शंकाएँ और सन्देह हम पर बुरी तरह अधिकार कर हमें अपना शिकार बना लेते हैं। ईश्वरीय सत्ता से अलग होने पर हमारी दशा उस निःसहाय बालक की सी हो जाया करती है, जो घोर अन्धकार में अकेला छोड़ दिया गया है और बिलखता हुआ इधर उधर बड़े दुःख से घूम रहा है।

मानव जाति अब इस बात को जानने लगी है कि उसकी शक्ति, उसकी विजय, उसका सुख उसी परिमाण में होगा जिस परिमाण में कि वह सकल शक्ति का सागर—अखिल सुखों का भण्डार-परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा।

जितने दुःख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं, उसका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्न भाव रखते हैं।

जिस समय हमें ऐसा मालूम होने लगता है कि सकल पदार्थों के उद्गम परमात्मा से हमारा सम्बन्ध टूट गया, उसी समय से भय और अनिश्चितता से हमारा मन व्याप्त हो जाता है। हमें ऐसा मालूम होने लगता है कि मानो हम निःसहाय हो गये हैं। हमें पद पद पर भय होने लगता है। कमज़ोरी

हमारे शरीर की नस नस में फैल जाती है। भय, चिन्ता और खिन्नता इस बात के साक्षात् प्रमाण है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा से हमारा नाता टूट गया—अनन्त जीवन से हमारा ऐक्य सम्बन्ध न रहा और मूल सिद्धान्त से हमारा विरोध हो गया।

अनन्त शक्ति परमात्मा से जितना हम अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे, उतनी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी क्योंकि शक्ति वहीं से आती है।

पूर्ण प्रेम भय का नाशक है क्योंकि पूर्ण प्रेम अनन्त जीवन परमात्मा और हमारे बीच के भिन्न भाव को नाश करता है।

जब हम आध्यात्मिक जीवन का अनुभव करने लगते हैं—जब हमें पूरी तौर से यह निश्चय होने लगता है कि ईश्वर से हमारा फिर सम्बन्ध जुड़ रहा है, तब हमारी सब विपत्तियाँ रफूचक्कर होने लगती हैं—हमारे पाप और बीमारियाँ, शान्त होने लगती हैं।

जब हमारा ईश्वर के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो जाता है कि चहुँ ओर हमें वही वही दीखे, तब हमारी कमजोरी, संकीर्णता, भीरुता, संदेह आपने आप हममें से निकल जाते हैं और हमें पूर्ण निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है, जिसका उद्गम खास परमात्मा से है।

मनुष्य ईश्वर से जितना अपना सम्बन्ध जोड़ेगा, उतना ही वह अपनी आत्मा में जीवन, सत्य, सौन्दर्य के तत्वों का विकास करेगा। उसकी आत्मा नव शक्ति—नव धैर्य के सञ्चार से हरी भरी होकर खिल उठेगी।

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा; और

इन सबके मूल परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा। वह मनुष्य कभी महान् नहीं हो सकता। जो केवल अपनी वर्तमान शक्ति ही पर निर्भर रहता है और दैव: तत्त्व का ज्ञान नहीं करता।

मनुष्य अपनी ठीक ठीक शक्ति को जब तक नहीं प्राप्त कर सकता, जब तक कि वह इस बात को मन, वचन और कार्य से न समझ ले कि विश्व के महान् तत्व का मैं एक अंश हूँ।

सत्य ही हम हैं। भूल हमारी आत्मा का स्वभाव नहीं; ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है; प्रेम, न्याय, सत्य, सौन्दर्य के हम तत्त्व हैं; इस बात को हृदयपूर्वक मान लेने से हमें अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है; निर्मलता के हमें दर्शन होने लगते हैं; धैर्य हमें प्राप्त होता है। आत्मा आध्यात्मिक भवन पर बहुत ऊँची चढ़ जाती है।

जितने हम परम तत्त्व में पूर्ण तन्मय रहेंगे, उतना ही जीवन और स्वास्थ्य-प्रवाह हमें प्राप्त होगा, जिससे कि हमारी सब आधिव्याधि शान्त हो जायगी। यही अर्थात् ईश्वर के साथ ज्ञानपूर्वक सम्बन्ध जोड़ना ही सब प्रकार की चिकित्सा का—स्वास्थ्य का—सुख समृद्धि का—रहस्य है। ऐसा कोई स्थायी सुख संयोग नहीं, ऐसी कोई स्थायी तन्दुरुस्ती नहीं, ऐसा कोई सच्चा सुख नहीं जो अनन्त जीवन के बाहर हो। यदि हम ज्ञान-पूर्वक अनन्त जीवन के दिव्य प्रवाह में अपने शारीरिक और मानसिक दिव्य सुख को ठीक तरह स्थिर रख सकें तो यही मानव जाति के कल्याण का परम रहस्य है।

इस तरह की आत्म-स्थिति हो जाने पर वृद्धता हम पर अधिकार न चला सकेगी। फिर हमें इस बात का अनुभव ही

नहीं होगा कि बुढ़ापा क्या चीज़ है; क्योंकि दिन प्रति दिन बूढ़े होने के बजाय हम में अधिकाधिक यौवन का दिव्य प्रवाह बहने लगेंगे। दिन प्रति दिन हमारे शरीर में यौवन के जोशीले खून का प्रवाह ज्यादा जोर से बहने लगेंगे। दिन प्रति दिन हम कल्याण मार्ग की ओर ज्यादा जोर से पैर उठाने लगेंगे।

प्रेम की शिक्षा

थोड़े ही दिनों पूर्व न्यूयार्क में एक प्रदर्शनी हुई थी, जिसमें एक घोड़े ने बड़े ही अद्भुत काम कर दिखाये थे। उस घोड़े के अद्भुत कामों ने दर्शकों को एकदम आश्चर्य में डाल दिया था। उसके स्वामी का कथन है कि इसके कोई पांच ही वर्ष पहले इस घोड़े में बुरी आदतें पड़ी हुई थीं। वह बहुत ही भटकता था—लात मारता था और काटता भी था। अब उसने अपनी पूर्व आदतों को छोड़ दिया है। अब वह तुरंत हुक्म माननेवाला, नम्र हो गया है। अब वह पदार्थों की गिनती कर सकता है, बहुत से शब्दों का उच्चारण कर सकता है और उनके अर्थ भी बता सकता है।

सचमुच यह घोड़ा प्रायः हर चीज़ को सीखने योग्य मालूम पड़ता था। पाँच वर्ष के दयापूर्ण शिक्षण ने इसके स्वभाव को एकदम पलट दिया। अच्छे बर्ताव से घोड़ों जैसे जानवरों के स्वभाव पर भी बड़ा ही अद्भुत प्रभाव होता है। चाबुक मारने तथा धमकाने से उतना किसी प्रकार का सुधार नहीं हो सकता। उलटी इनसे उसकी आदतें खराब होती हैं। इस घोड़े का पालक कहता है कि इन पाँच वर्षों में मैंने एक भी चाबुक उसे नहीं मारा था।

मैं एक स्त्री को जानता हूँ जो कई बच्चों की माता थी। वह कभी अपने बच्चों को मारती पीटती न थी। लोग उसे कहते थे कि तुम अपने बच्चों को बिगाड़ दोगी। तुम उनको सुधार न कर सकोगी क्योंकि प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं। पर पीछे उन्हीं लोगों को यह देखकर कि उन लड़कों के चरित्र ऊँचे हो गये हैं, अचम्भित होना पड़ा। उन लड़कों में मनुष्यत्व का सच्चा आदर्श देख कर उन्हें अपनी पूर्व भूल पर पश्चात्ताप करना पड़ा। उनके स्वभाव के अपूर्व विकास को देख कर उन्हें यह बात ठीक जँचने लगी कि प्रेमपूर्ण बर्ताव ही से वास्तव में बच्चों का पालन पोषण किया जाना चाहिए।

प्रेम ही सब की अद्भुत चिकित्सा है–प्रेम ही जीवनप्रद है। प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही हमारी व्यथाओं को शमन करने-वाला है-प्रेम ही जीवन को वास्तविक आनन्द का देनेवाला है।

हम लोगों को ये बातें कब सिखाई जायँगी कि आरोग्य का मूल तत्व प्रेम ही है। प्रेम ही आरोग्य के निदान—परमात्मा से हमारा मेल कराता है। जहाँ प्रेम का सुखद साम्राज्य है वहाँ काम, क्रोध, द्वेष, लोभादि दुर्गुण तो फटकने भी नहीं पाते। प्रेम ही शांति है प्रेम ही सुख और आनंद है।

प्रेम ही सबसे बड़ा शिक्षक है—प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति कर्ता है। जो कुछ हमारे सुख पर वज्रघात करता है प्रेम ही उसका नाशक है—प्रेम ही असन्तोष रूपी महान् व्याधि की रामबाण औषधि है। प्रेम ही द्वेष, मत्सर, ईर्षा आदि दुर्गुणों का उपशामक है। दया के सामने जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है,

वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सामने बुरे मनोविकारों का नाश हो जाता है।

माता ही बच्चे के जीवन को सुसंगठित करती है और वही उसके भाग्य की विधात्री भी है। माता बच्चे को कान्ति में सूर्य के समान, विद्या बुद्धि में बृहस्पति के समान, दया धर्म में दयासागर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के समान, वीरता में महावीर नेपौलियन के समान बना सकती है। माता ही से बालक संसार का पाठ पढ़ते हैं। माता ही से बालक प्रेम, दया, सहानुभूति और निःस्वार्थता का सेवक सीखते हैं। विकलता से रोता हुआ बच्चा माता के ज़रा से पुचकारने मात्र से शान्त हो जाता है। माता का प्रेम पूर्णशब्द बच्चे में प्रेम का अंकुर स्फुटित करता है।

उस बच्चे का भविष्य कितना शोचनीय, कितना गिरा हुआ होगा, जिसके कोमल मन में शुरू ही से बुरे बुरे विचार—भयपूर्ण कल्पनाएँ—दुष्ट विचार ठूँस दिये जाते हैं। उसके कोमल मन को पापपूर्ण कथाओं और अश्लीलता से मलीन कर दिया जाता है। पाठक! आप ही सोचिए कि ऐसी दशा में उसके भावी सुधार की कैसी आशा की जा सकती है। अवश्य ही उसका भविष्य महा भयङ्कर और अनिष्टकर होगा।

इस के विपरीत जो बालक पवित्रता विशुद्धता और सुशिक्षा के वायुमण्डल से पाला पोसा जाता है और जिसका कोमल मन सत्य, सौंदर्य और प्रेम के उदार विचारों से भरा जाता है, उसके सुख और उन्नतिशील भविष्य की कल्पना कीजिए। इन दोनों

वालकों के मिलान करने से क्या आपको यह मालूम न होगा कि जहाँ एक प्रकाश की ओर गति कर रहा है, वहाँ दूसरा अन्धकार की ओर।

जिस वालक का मन शुरू ही से, द्वेष, मत्सर, ईर्षा और वदला लेने के कुविचारों से भर दिया जाता है, उस वालक के लिए यह आशा करना दुराशा मात्र है कि भविष्य में वह उच्च जीवन व्यतीत करेगा।

इसके विपरीत जो वालक हमेशा सत्य, प्रेम, सौंदर्य और उच्च चरित्र की वातें सुना और देखा करता है और इन्हीं से सम्बन्ध रखनेवाली वातें जिसे सिखाई जाती हैं, उसका भविष्य वड़ा प्रकाशमान होता है।

यदि हम अपने वच्चों का हित चाहते हैं उनका कल्याण चाहते हैं उनकी भावी उन्नति चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम विजय के, सफलता के सुख के और उन्नति के प्रकाशमय विचार ही उनके सामने प्रकट किया करें। उनके कोमल मन को इसी तरह के आशामय और उत्साहपूर्ण विचारों से हरा भरा और प्रफुल्लित किया करें। ऐसा करने से हम उनके जीवन पर एक प्रकार का अलौकिक और अद्भुत प्रभाव डालते हैं। इस तरह के भावों से उनके मन को प्रभावित करने का परिणाम यह निकलेगा कि वे तव तक असफल और दुःखी न हो सकेंगे, जव तक कि वे उक्त प्रभाव से विपरीत आचरण न करने लगें। वच्चे के मन को हमेशा खुश रक्खो। सत्य से उसे भर दो जिससे किसी तरह की वुराई और भूल उसमें प्रवेश न कर सके।

वच्चों के सामने उनके ऐवों को—कमजोरियों को—प्रकट

करते रहना बहुत ही बुरा है । बच्चों के कोमल मन पर इस तरह की हीनता और निर्बलतासूचक बातों का बहुत ही बुरा असर पड़ता है । बच्चों को उनके ऐबों और कमजोरियों की याद दिलाने के बजाय यदि उनका मन श्रेष्ठता, सौंदर्य और सत्य के विचारों से भरा जावे तो मेरी राय में बड़ा ही ऊँचे दर्जे का लाभ हो । बच्चों के मन में प्रेम, सहानुभूति, पवित्रता और उच्चता की प्रेरणाएँ करते रहने से थोड़े ही समय में बच्चों का मन एक अद्भुत प्रकार के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा । उसके मन की दशा कुछ ऐसी विचित्र हो जायगी कि बुरे तत्व फिर उसके पास फटकने तक न पावेंगे । फिर उसका मन दिव्य प्रकाश से सौंदर्य से, दैवी प्रेम से इतना लबालब भर जायगा कि बुराई के तत्व उसके सामने आते ही नष्ट भ्रष्ट हो जावेंगे ।

बच्चे के आत्म विश्वास को हमेशा हरा भरा रखने की कोशिश करना चाहिए । हमेशा उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए । उसको यह विश्वास करा देना चाहिय कि वह ईश्वर का पुत्र है; अतएव उसके अनन्त ऐश्वर्य, अनन्त खजाने का वह अधिकारी है ।

बहुत से लड़के —खासकर वे जो कि स्वभावतः ही कोमल मन वाले हैं—डरपोक और शंकाशील हैं, यह वहम करने लगते हैं कि शायद हममें बुद्धि की न्यूनता है । ऐसे लड़कों को अपनी योग्यता पर भी विश्वास नहीं रहता और वे बहुत जल्दी अनुत्साहित तथा निराश हो जाते हैं । अतएव बच्चे के आत्मविश्वास को नष्ट करना—उसके मन पर निराशा का पड़दा फेंकना

बड़ा ही भयंकर पाप है; क्यों कि आशाजनक शब्दों की तरह निराशाजनक शब्द भी बच्चे के कोमल मन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं, जिसका कुफल बच्चों को आजन्म भोगना पड़ता है।

बड़े ही दुःख की बात है कि बहुत से माता-पिता इस बात को नहीं जानते कि बच्चे का मन कितना कोमल होता है और निराशा तथा उपहासजनक वचनों का उनके मन पर कितना बुरा प्रभाव होकर उनका सर्वनाश हो जाता है। बच्चों को तो शाबासी, प्रशंसा और उत्साह ही की आवश्यकता है। इन्हीं से उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। यही उनके लिए पुष्टिकर औषधि का काम देते हैं। हमेशा उन्हें भला-बुरा कहते रहने से—दोष देते रहने से—उनके स्वभाव पर बुरा असर होता है। उनकी प्रकृति बिगड़ जाती है। मेरी समझ में बच्चों के सामने हमेशा उनके दोष निकालते रहना—हमेशा उन्हें धमकाते रहना, उन्हें यह दुर्वचन कहते रहना कि तुम नालायक हो, बुद्धिहीन हो, भाग्यहीन हो, संसार में कभी तुम तरक्की नहीं कर सकते—भारी दुष्टता है।

बच्चे को नित्यप्रति यह कह कर कि तू मूर्ख है—मन्दबुद्धि है—सुस्त है—बेकाम है—तू कोई काम नहीं कर सकता—तुझमें न बुद्धि है, न शारीरिक पराक्रम ही है। इससे तू कुछ नहीं कर सकता। इस तरह के पोचे और सत्वहीन विचारों से माता-पिता सहज ही में बच्चे की निर्माण शक्ति को कितनी नष्ट कर देते हैं—उसके उपज-शक्तियुक्त मन को कितना बेकाम कर देते हैं। दुर्भाग्य से यह बात ठीक तरह आज-कल के माता-पिता नहीं जानते।

मैं एक लड़के को जानता हूँ, जिसमें स्वाभाविक योग्यता अच्छी है पर जो बड़े ही कोमल मन का और डरपोक है। यही कारण है कि उसकी उन्नति की गति बहुत धीमी है। उसके माता-पिता और शिक्षक ने यह कह कर कि वह मूर्ख और मन्द-बुद्धि है, उसके प्रकाशमान भविष्य को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। यदि इस लड़के की जरा भी प्रशंसा और वाहवाही की जाती, इसे ज़रा भी उत्साह दिया जाता, तो भविष्य में यह बहुत बड़ा आदमी बनता, क्योंकि बड़ा आदमी बनने के लिए जिस सामग्री की दरकार होती है, वह उसमें भरी हुई थी। पर अपने माता-पिता तथा शिक्षक से ऐसे ही ऐसे पोच विचारों को निरन्तर सुनते रहने के कारण उसका यह विश्वास हो गया था कि मेरी बुद्धि उज्ज्वल नहीं—मेरी ज्यादा तरक्की हो नहीं सकती।

अब यह बात हम लोगों को मालूम होने लगी है कि उत्साह और प्रशंसा से बच्चा जैसा सुधरता है, वैसा धमकाने और मारने पीटने से नहीं सुधरता। उत्साह और शाबासी देने से बच्चा आश्चर्यजनक उन्नति करता हुआ मालूम होने लगता है। हर्ष की बात है कि कोई कोई माता-पिता अब इस महान् हितकर तत्व को समझने लगे हैं, पर भारत के दुर्भाग्य से ऐसे माता-पिताओं की संख्या उँगली पर गिनने लायक भी नहीं है।

हम देखते हैं कि विद्यार्थीगण अपने उन शिक्षकों के लिए चाहे जो करने को तैयार हो जाते हैं, जो शिक्षक कृपालु, विचारशील और खुशमिज़ाज होते हैं। ऐसे शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का बर्ताव अच्छा रहता है। हमारी समझ में विद्यार्थी और अध्यापक के बीच में किसी तरह की कुभावना न

होनी चाहिए। होनी चाहिए केवल सद्भावना, जिससे कि अध्यापक को भी इस बात का यश मिल जावे कि इसने विद्यार्थियों के जीवन को ठीक सुधार दिया और विद्यार्थियों का भावी जीवन सुखमय बना दिया।

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों के स्वेच्छाचार से बहुत तङ्ग आ जाते हैं, पर वे यह नहीं जानते कि यह बात शीघ्र मिटाई जा सकती है। जवानी के जोश में प्रायः ऐसा हो जाया करता है। उस समय उनमें जीवन और उत्साह-शक्ति भरपूर भरी हुई रहती है, जिससे वे शांत नहीं रह सकते। इधर दौड़ना उधर कूदना आदि कई तरह के फरफंद ही वे किया करते हैं। बिना हाथ पांव हिलाए उनसे बैठा नहीं जाता। पर हाँ, इस बात की माता-पिता को विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि इस तरह फरफंद करते करते उनकी प्रवृत्ति कहीं दुष्कृत्यों में न चली जावे। मेरी समझ में माता-पिता प्रेमपूर्ण बर्ताव से उन्हें अपने वश में ठीक तरह ला सकते हैं।

अपने बच्चों को आदर्श मनुष्य बनाने का प्रयत्न कीजिए; उन्हें पशु मत बनाइए। उनपर प्रेम कीजिए। अपने घर को अपनी पूरी शक्ति खर्च करके खूब आनन्दमय बनाइए और अपने बच्चों को वैसी स्वतंत्रता दे दीजिए जिससे किसी तरह की बुराई पैदा न हो और वे अपना मानसिक विकास कर सकें। आप खेल कूद में आनन्द क्रिया में अपने बच्चों का उत्साह बढ़ाइए। उनके आनन्द में बाधक मत होइए। बहुत से माता-पिता स्वास्थ्य कारी खेल खेलने से, आनन्द क्रीड़ा करने से उन्हें

रोक कर उनके बचपन के आनन्द को बहुत बुरी तरह नष्ट कर देते हैं—उनके आनन्दमय बचपन को बिगाड़ देते हैं।

बड़े दुःख की बात है कि हजारों माता-पिता अपने बच्चों के साथ बहुत ही सख्ती का बर्ताव करते हैं—उन्हें बुरी तरह धमकाते और भला बुरा कहते रहते हैं, इससे बेचारे वे कोमल हृदय बालक बहुत खिन्न और उदास रहा करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका मानसिक विकास खिलने से रुक जाता है, वे आजन्म सकुचाए हुए ही रह जाते हैं।

प्रत्येक माता चाहे इस बात को जानती हो या न जानती हो, पर वह अपने बच्चों को अपनी आत्म-प्रेरणा के प्रभावों से प्रवाहित करती रहती है। बच्चों के पालन-पोषण में इस शक्ति का प्रभाव हुए बिना रह नहीं सकता। जब बच्चा किसी कारण से रोने लगता है तब वह बड़े प्यार से उसके चुम्मा लेने लगती है और पुचकार कर कहने लगती है "मेरे लड़के! चुप हो; तेरा दर्द अच्छा हो गया है"। तो प्रेमपूर्ण आश्वासन से बच्चा अपने दुःख को भूल जाता है—उसे भारी तसल्ली हो जाती है। माता जब प्रेम से अपने बच्चे पर हाथ फेरने लगती है, तब उसका असर बच्चे के हृदय तक पहुँच कर उसके सारे शरीर में आनन्द उत्पन्न कर देता है। हम देखते हैं कि बच्चे की छोटी मोटी तकलीफें तो केवल माता के प्रेमपूर्ण आश्वासन से और हाथ फेर कर उसे पुचकारने मात्र से दूर हो जाती हैं।

यह बात सही है कि प्रेरणाशक्ति के द्वारा बच्चों की उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है; जिन पर कि स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर है। हममें से कुछ लोग इस बात को

अवश्य ही जानते होंगे कि हमारे मानसिक भावों पर—हमारे धैर्य पर, हमारे आशा—भरोसे पर, हमारी सम्पादन शक्ति का बल निर्भर है। यदि बच्चे के कोमल मन पर शुरू ही से आनन्दी और आशामय विचारों का प्रवाह चला जायगा, तो उनका भावी जीवन बड़ा ही आनन्दमय और आशापूर्ण हो जायगा। चिन्ता अनुत्साह को अपने पास न फटकने देंगे।

जिन लोगों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, अवश्य ही उनके बचपन में स्वास्थ्यहीनता के विचार भरे होंगे। यह बड़े ही अफ़-सोस की बात है कि बच्चों के मन में माता-पिता तथा अड़ोस पड़ोस के लोग अज्ञानता के कारण दुख दर्द आधिव्याधि के विचार बड़ी बुरी तरह भर देते हैं। वे उन्हें कहते रहते हैं कि यह मनुष्य-शरीर तो दुःख दर्द व्याधि का घर ही है। बस ये ख्याल बच्चों के दिल में जड़ जमा लेते हैं और इनका कुफल आजन्म इन बेचारों को भोगना पड़ता है। बीमारी इसी कारण तब तक हाथ धोकर उनके पीछे पड़ी रहती है, जब तक कि मृत्यु उन्हें उठा न ले जाय।

बच्चा बीमारी की जितनी बातें सुनेगा, उतना ही बीमारी का डर उसे बना रहेगा। धीरे धीरे उसका यह विश्वास हो जायगा कि ईश्वर ने मेरे भाग्य में बीमारी ही बदी है—मैं इससे कभी छुटकारा नहीं पा सकता। बस इसी कुविश्वास के कारण उसे अपना जीवन निरानन्दमय और शून्य सा प्रतीत होने लगता है। अपने भाग्य को वह हमेशा कोसा करता है।

बस इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हर माता-पिता को चाहिए कि बालक के कोमल मन में शुरू ही से सुस्वास्थ्य और शक्ति-

सम्पन्न विचारों को भरा करें। उन्हें यह बात समझा देवें कि स्वास्थ्य ही स्थायी पदार्थ है। बीमारी हमारी भूल का परिणाम मात्र है—हमारे बेमेल का नतीजा मात्र है। उसके मन में बिठा देना चाहिए कि सुस्वास्थ्य, समृद्धि, पूर्णता पर तेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है। आधिव्याधि, दुःख, दरिद्रता, मानवस्वभाव के अनुकूल नहीं। उसे ज्ञान करा देना चाहिए कि ईश्वर ने आधि-व्याधि, दुःख, दरिद्रता पैदा नहीं की—उसकी यह मनशा नहीं कि हम बीमारी भोगें। सुस्वास्थ्य लाभ करने के लिए—सुख भोगने के लिए—आनन्द में मग्न रहने के लिए ईश्वर ने हमें बनाया है यह बात उन्हें समझा देना चाहिए।

बच्चे हर बात पर झट विश्वास कर लेते हैं। उनके माता-पिता बन्धुवर्ग और अड़ोस पड़ोस के लोग जो बातें कहते हैं, उन पर वे विश्वास कर लेते हैं। यहाँ तक कि हँसी में भी उनसे जो बातें कही जाय उसे मानने को भी वे तैयार हो जाते हैं। इन बातों का अच्छा या बुरा प्रभाव उनकी आत्मा में जम जाता है जो उनके भावी जीवन में प्रकट होता है।

बच्चों को झूठा भय नहीं दिखाना चाहिए

बहुत से अज्ञानी और अविवेकी माता-पिता बच्चों को कई प्रकार के डर बता कर उन पर शासन जमाने की कोशिश करते है। "हौआ आया, वह तेरे कान काट लेगा" आदि बातें कह उन्हें डराते हैं; जिससे कि वे रोते हुए चुप हो जावें, तथा मस्ती करते हुए रुक जावें। पर इस प्रकार के माता-पिता इस बात को साफ भूल जाते हैं कि ऐसा करने से बच्चों का हम बड़ा अहित कर रहे हैं, और उन्हें भीरु तथा डरपोक बनाने का पाप अपने

सिर ले रहे हैं। इस तरह की भयावनी बातों से बच्चों का सत्यानाश करना है। हम देखते हैं कि बहुत से माता-पिता रात को बच्चा न रोवे इस ख्याल से उन्हें अफीम इत्यादि विषैले पदार्थ दिया करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके मानसिक विकास पर बड़ा जबरदस्त धक्का पहुँचता है और वे मन्दबुद्धि हो जाते हैं। जो मातापिता अपने लड़कों को बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली बनाया चाहते हैं; उन्हें चाहिए कि वे अपने लड़कों को अफीम आदि मादक पदार्थ कभी न खिलाया करें।

यदि यह भी मान लिया जाय कि भय दिखाने से बच्चों का विशेष नुकसान नहीं होता, तो भी उन्हें डराना बुरा ही है; क्योंकि धोखा देना किसी तरह अच्छा नहीं कहा जा सकता। यदि माता-पिता के लिए कोई सब से अच्छी बात है, तो वह यह है कि वे अपने बच्चों के मन को आत्म-विश्वास से भर दें अपने बच्चों पर विश्वास करें। अनुभव से यह बात जानी गई है, कि जिस बच्चे का एक दफा विश्वास हटा दिया जाता है उसका विश्वास फिर उसके मन में सहज ही जड़ नहीं जमा सकता। माता-पिता और बच्चे के बीच में कोई भेद न होना चाहिए। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के प्रति साफ और खुले दिल से बर्ताव करें। वे इस बात की पूरी चिन्ता रक्खें कि कभी बच्चे के दिल को व्यर्थ ही न दुखावें।

जब बच्चा बड़ा होता है और वह देखता है कि जिन पर मैं पूरी तरह विश्वास करता था और जिन्हें मैं ईश्वर-तुल्य समझता था वे वर्षों से हर तरह मुझे धोखा दे रहे हैं तब उसके दिल को कितनी चोट पहुँचती है—इसका ख़्याल भी कभी आपने किया है ?

माता-पिताओं को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि हर प्रकार की क्लेशजनक बातें जो बच्चे के सामने कही जाती है—हर प्रकार का मिथ्या भय जो बच्चे के कोमल मन में भर दिया जाता है तथा जैसे भाव माता-पिता उसके प्रति रखते हैं और जैसा उसके प्रति बर्ताव करते हैं; ये सब बातें उसके मन में उसी तरह जम जाती हैं और उसके भावी जीवन में प्रकट होती हैं जैसे फोनोग्राफ की चूड़ी में उतारा हुआ गाना जैसा का तैसा गायनरूप से प्रकट होता है।

जब लड़का भयभीत हो रहा हो, तब तुम उसे कभी मत मारो, न पीटो। जिस तरह व्यर्थ ही बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को मारा पीटा करते हैं, उस तरह से मारना सचमुच उनके प्रति दुष्टता का बर्ताव करना है। जरा इस भयंकरता को सोचिए तो सही कि इधर तो बच्चा मारे भय के चिल्ला रहा है और उधर पिता गुस्सा होकर बेंत लिये हुए उसे पीटने को तैयार खड़ा हुआ है। इसका बच्चे पर बहुत ही बुरा परिणाम होता है। बहुत से बच्चे माता पिता तथा शिक्षक की इस दुष्टता को कभी नहीं भूलते और बदला लेने की फिक्र में रहते हैं।

बहुत से माता-पिता बच्चे को उसके स्वभाव के विपरीत धन्धे में पटक कर उसके उन्नति-पथ पर बड़ी बुरी तरह कांटे बिछा देते हैं। वे उसे ऐसे विषय का अभ्यास करवाना चाहते हैं, जिसे करने का उसका दिल नहीं चाहता; जिसके लिए वह अपने आपको अयोग्य समझता है। जैसे बच्चे का दिल डाक्टरी के अध्ययन में लगता हो और उसे कानून का अभ्यास करने में

मजबूर करना। इसका परिणाम यह होता है कि उस बच्चे का प्रकाशमान भविष्य अन्धकारमय हो जाता है और अपने स्वभाव से विपरीत विषय में वह अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकता। अतएव माता-पिताओं को चाहिए कि जिस विषय की ओर बच्चे का दिल जाता है उसी विषय को अध्ययन करने की उसे आज्ञा दें।

माता-पिताओं को यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चों की स्वाभाविक गति में बाधा उपस्थित करना, मानो उनकी कार्य-संपादन-शक्ति को नष्ट करना है। ऐसे बहुत से मनुष्य देखे जाते हैं, जो बहुत से गुणों से युक्त हैं, पर किसी तरह की कमजोरी तथा कमी के कारण वे अपनी योग्यतानुसार कार्य नहीं कर सकते, और इसका कारण यही है कि बचपन में इनकी ये कमजोरियाँ और कमतरताएँ नहीं निकाली गई जो कि उस समय सहज साध्य थीं। केवल योग्यता का होना काफी नहीं, वरन् उस योग्यता को उपयोग करने की शक्ति का होना भी उसके साथ-साथ आवश्यक है।

यदि बच्चों को निश्चयात्मक और उपजशक्ति को बढ़ाने की शिक्षा दी जावे तो मेरी समझ में यह उनके लिए बहुत मौलिक और महत्त्वपूर्ण होगी। बच्चों को सिखाना चाहिए कि वे अपने मन को सर्वोच्च उपज शक्ति की ओर कैसे लगा सकते हैं?

बच्चों को यह शिक्षा देना बहुत जरूरी है कि वे अपने जीवन में सुख, शान्ति और सफलता कैसे प्राप्त कर सकते हैं—वे कैसे उन्नति पर पहुँच सकते हैं? वे अपनी आत्मा की दिव्य-शक्तियों को किस तरह प्रकाशित कर सकते हैं?

आज कल के कालेजों की कुशिक्षा

देखा जाता है कि बहुतसे विद्यार्थीगण अपने मग़ज़ को विद्या से भरपूर भर कर स्कूल तथा कॉलेज से निकलते हैं, पर उनमें आत्मिक योग्यता तथा आत्म-विश्वास कुछ भी नहीं होता। वे अब भी उसी तरह भीरु, शंकाशील, हतोत्साही रहते हैं, जैसे कालेज में भर्ती होने के समय में थे।

अब आप ही कहिए कि लड़के को विद्या में धुरन्धर करके संसार में भेजने से कैसे लाभ हो सकता है, जब कि उसमें यह शक्ति नहीं है कि वह अपने आत्म-विश्वास और निश्चय को ठीक ठीक काम में ला सके। उसमें तो वह कार्य-संपादन-शक्ति बल और उत्साह नहीं है, जो सफलता की कुंजी है।

मेरी राय में स्कूल तथा कालेज के लिए यह बड़े शर्म की बात है कि उसमें से ऐसे नवयुवक निकलें, जो छाती पर हाथ ठोक कर साहसपूर्वक इस बात को नहीं कह सकते कि हमारी आत्माएँ हमारी हैं और उनमें आत्म-विश्वास और निश्चय की मात्रा कुछ भी नहीं है। हमारे कालेजों से प्रतिवर्ष ऐसे हज़ारों लड़के निकलते हैं कि जिनका शिक्षण अब भी वैसा ही रहता है, जैसा कालेज में भर्ती होने के पहले था। हम देखते हैं कि बहुतसे कालेज के ग्रेजूएट उस दफा खिसियाने लगते हैं, जब उन्हें पब्लिक में व्याख्यान देने के लिए कहा जाता है। मनुष्यों की मण्डली में उठकर बोलना उनके लिए कठिन हो जाता है। दो सौ चार सौ मनुष्यों की मण्डली में वे किसी प्रस्ताव को नहीं पढ़ सकते, पढ़ना तो दूर रहा उसका अनुमोदन भी नहीं कर सकते।

वह समय शीघ्र ही आने वाला है—वह प्रभात शीघ्र ही उगने वाली है, जब कि ऐसी शिक्षाओं से नवयुवक विभूषित किये जावेंगे जिससे कि वे अपनी योग्यता का बखूबी उपयोग कर सकें और अपने ज्ञान का हर समय उपयोग कर सके और सर्व साधारण में बिना किसी हिचकिचाहट से अपने मन्तव्यों को साहसपूर्वक प्रकाशित कर सकें। आत्म-संयम और आत्म-विश्वास का उन्हें पाठ पढ़ाया जायगा। भविष्य में जो शिक्षा दी जावेगी उस का सार यही होगा कि जो कुछ विद्यार्थी जानता है, उसका वह जब चाहे तब प्रकाश कर सके—अपनी विद्या का इच्छानुसार उपयोग कर सके।

हम देखते हैं बहुत से विश्वविद्यालय के उपाधिधारी ग्रेजूएट बहुत से विषयों में वैसे ही कमजोर और गतिहीन निकलते हैं, जैसे वे कालेज में प्रवेश करने के समय थे। वह शिक्षा किस काम की जिसमें लड़कों को अपनी शक्तियों का—अपनी परिस्थिति का स्वामी होना न सिखाया जावे; जिसमें लड़कों को यह न बताया जावे कि अपनी विद्याबुद्धि का काम पड़ने पर फ़ौरन उपयोग कैसे किया जा सक्ता है।

कालेज का वह ग्रेजूएट जो डरपोक है, शंकाशील है—जो पब्लिक में या दूसरे किसी स्थान में काम पड़ने पर अपनी विद्या-बुद्धि का प्रकाश नहीं कर सकता, कभी महत्व प्राप्त नहीं कर सकता, कभी समाज में उसका वज़न पैदा नहीं हो सकता। काम पड़ने पर जिस ज्ञान का उपयोग न हो सके, वह ज्ञान किस काम का ?

वह समय आ रहा है जब कि हर बच्चे को अपने आप में

विश्वास करना—अपनी योग्यता पर भरोसा रखना सिखाया जायगा। मेरी समझ में यह बात उसकी शिक्षा का प्रधान अंग होगी क्योंकि जब वह अपने आप में पूर्ण विश्वास करने लगेगा तब वह किसी प्रकार की कमजोरी को पास फटकने न देगा।

बच्चे के मन में इस दिव्य विचार को जमा देना चाहिए कि दयासागर परमात्मा ने उसे संसार में किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा है और उसके हाथ से जरूर उस उद्देश्य की पूर्ति होगी।

हर नवयुवक को सिखाना चाहिए कि संसार में वह उस महान् पद पर आसीन होगा जिस पर संसार के महान् पुरुष हुए हैं। उसे सिखाना चाहिए कि वह ईश्वर का अंश है; सब दैवी शक्तियाँ उसमें भरी हुई हैं; अतएव वह कभी किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता। उसे सिखाना चाहिए कि तुम्हारी आत्मा में वह दिव्यता मौजूद है जो संसार को अलौकिक प्रकार से प्रकाशमान कर सकती है। उसे सिखाना चाहिए कि संसार में वह अपने आप को महत्वपूर्ण समझे। इस तरह की शिक्षा से मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ कि उसका आत्म-सम्मान बढ़ेगा—उसका मानसिक और शारीरिक विकास होगा और उसका जीवन दिव्यता से परिपूर्ण हो कर सुखपूर्ण, तथा शान्ति-पूर्ण सफलता का अनुभव करेगा।

दीर्घायु

अमेरिका के संयुक्तप्रान्त का एक परम वैभवशाली धनिक कहा करता कि यदि कोई मेरी उम्र को दस वर्ष अधिक बढ़ा दे तो मैं उसे एक करोड़ रुपये दूँ। मैं कहता हूँ कि एक करोड़ ही क्या पर वह इसके लिए एक अरब रुपये तक देने को तैयार हो सकता है।

हम सब को अपना जीवन कितना प्यारा, कितना मूल्यवान मालूम होता है। जीवन एक ऐसी वस्तु है कि दुखी से दुखी मनुष्य भी इसे छोड़ना नहीं चाहता। आजन्म निर्वासन की सजा पाया हुआ मनुष्य भी यह नहीं चाहता कि अभी मैं अपनी जीवन लीला समाप्त कर दूँ।

हमारी महत्वाकांक्षा चाहे जो हो, पर हम सब को जैसा जीवन प्यारा है, वैसा कोई पदार्थ नहीं। हमारा हमेशा यही लक्ष्य बना रहता है कि हमारा जीवन पूर्ण सुखी, पूर्ण आनन्द-मय हो। हरएक मामूली आदमी बुढ़ापे की ओर गिरती हुई अवस्था के चिन्ह देख कर भयभीत होता है। पर आदमी यही चाहता है कि मैं हमेशा मोटा ताजा और जवान बना रहूँ। पर दुख इस बात का है कि अपने स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए जैसी सावधानी रखना चाहिए वैसी वे नहीं रखते। स्वास्थ्य के दीर्घायु होने के नियमों का यथोचित रीति से पालन नहीं करते। अप्राकृतिक रहन-सहन से और बुरी आदतों से वे

अपनी शक्ति को खोते जाते हैं और लगे हाथ ही इस बात पर आश्चर्य करने लगते हैं कि हमारी शक्तियाँ क्यों क्षीण हुई जा रही हैं। हम अपनी शक्तियों को इस तरह दूषित और क्षीण कर अपने आप अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारते हैं। जहाँ कहीं हमें दीर्घ-जीवन दिखाई दे समझ लेना चाहिए कि जरूर यह जीवन आत्म-संयम द्वारा विताया जा रहा है।

जैसा कि हमारा ध्यान पैसा कमाने की ओर रहता है वैसा ही ध्यान यदि हम अपने यौवन और बल को बनाए रखने में रखें तो हमारा यौवन और बल दिन बदिन क्षीण होने के बजाय दिन दूना रात चौगुना हरा भरा और प्रफुल्लित रहेगा।

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है, जो यदि ठीक रीति से रक्खी जावे तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और यदि लापरवाही से रखी जावे तो बहुत जल्दी बिगड़ जाती है।

यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है कि हम सब लोग जीवन पर इतना प्रेम करते हैं, उससे गहरे चिपके हुए रहते हैं, पर हम उसे बुरी रहन-सहन और बुरे आचार-विचार के कारण नष्ट भी करते जा रहे हैं। हमारे जीवन के बहुत से अमूल्य दिन इसी तरह नष्ट होते जा रहे है।

जब तक हम बुढ़ापे ही के ख्याल में गर्क रहेंगे, बुढ़ापे ही की कल्पनाओं में गोते लगाते रहेंगे बुढ़ापे ही के स्वप्न देखते रहेंगे, तब तक हम बूढ़े ही होते जावेंगे। हमारे विचार, हमारी कल्पनाएँ, हमारी प्रकृति और अभिलाषाओं के विरुद्ध ठीक वैसे ही काम करने लगेंगे जैसे असफलता का भय और संशय हमारे धन कमाने के प्रयत्न के विरुद्ध काम करने लगते हैं।

हमारा मानसिक आदर्श इस बात को बता देता है कि हमारे जीवन में यौवन की इमारत बन रही है या बुढ़ापे की। हरएक मनुष्य में एक स्वाभाविक शक्ति भरी हुई है, जिससे कि वह जीवन को बढ़ा सके—अपनी आयु को दीर्घ कर सके, पर इसके लिए आवश्यक है कि पहले वह मानसिक तत्व को भली भाँति समझ ले।

जो मनुष्य यह कहा करता है कि अब हमारे गिरते हुए दिन हैं—अब हमारा शरीर दिन दिन क्षीण ही होगा—बुढ़ापे के कारण हमारा बल घटेगा, उसके लिए पूर्ण स्वास्थ्य हृष्ट-पुष्टता प्राप्त करना एकदम असम्भव है।

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है। विचार उस रास्ते की सीमा को निश्चित कर देते हैं।

बहुत से मनुष्य इस बात को नहीं जानते कि हमारे मानसिक भाव ही में वह कार्योत्पादक शक्ति है, जो हमेशा कार्योत्पादक फलों को उत्पन्न करती है। जब जब हम अपने मन को सुसंगठित करते हैं, हम उससे कार्योत्पादक पदार्थ पा ही लेते हैं। यदि हम अपने मन को सौंदर्य के विचार से सुसंगठित करें, तो उसका फल भी सुंदर निकलेगा। यदि हम अपने मन की गिरती हुई शक्तियों को बुरी दशा में ला रक्खें तो इसका फल भी हम सड़ा हुआ पावेंगे। प्रत्येक मानसिक भाव जो कि यौवन के मूल से विपरीत है, वह बुढ़ापे ही को उत्पन्न करेगा।

यदि हम हमेशा अपने मन में यौवन के दिव्य प्रवाह को बहाते रहें—यदि हम हमेशा यौवन के आदर्श को सामने रखकर

उसकी प्राप्ति के लिए यत्न किया करें तो बुढ़ापा हमसे अवश्य ही दूर रहा करेगा।

प्रेन्टिस मलफोर्ड नामक लेखक कहते हैं कि यदि तुम तीस या पैंतीस वर्ष ही की उम्र में बुढ़ापे के स्वप्न देखने लगो, तो पचास तथा पचपन बरस की उम्र में तुम पूर्ण वृद्ध हो जाओगे। तुम्हारे शरीर में झुर्रियाँ पड़ जायँगी शरीर की कार्य कारिणी शक्ति चली जायगी। इसका कारण यह है कि तुम्हारे बुढ़ापे के विचार तुम्हारे यौवन को निकाल कर उसका स्थान बुढ़ापे को दे देंगे। यदि तुम यह देखते रहोगे कि हमारा शरीर क्षीण हुआ जा रहा है, तो वह अधिकाधिक क्षीण होगा। वे मनुष्य जो अपने मनको यौवन के विचारों से हराभरा रखते हैं, उनके शरीर पर यौवन साफ झलकने लगता है। बहुत से मनुष्य साठ ही वर्ष की उम्र की अवस्था में बूढ़े दीखने लग जाते हैं, इसका कारण यही है कि उनका शुरू ही से यह विचार रहा है कि साठ वर्ष की अवस्था बुढ़ापा है।

मानव समाज के मन में यह एक भारी भ्रम जम रहा है कि पचास पचपन वर्ष की उम्र के बाद मनुष्य की ढ़लती दशा का आरम्भ हो जाता है। इस उम्र के बाद उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ नष्ट होने लगती हैं। बड़े ही शोक का विषय है कि मनुष्य जो कि ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट पुत्र है, उसकी ढलती हुई अवस्था का प्रारम्भ पचास वर्ष ही की उम्र में हो जावे। ऐसी उम्र के बाद तो उसके शरीर और मन की शक्ति बढ़ना चाहिए।

मनुष्य की बनावट की ओर ख्याल किया जावे तो मालूम होता है कि उसके पूर्ण खिलने का—उसकी कार्यसम्पादन शक्ति

के पूर्ण प्रकाश का उसकी आन्तरिक दिव्य ज्योति के चमकने का समय तीस वर्ष से शुरू होता है। क्यों कभी परमात्मा की मर्जी हो सकती है कि हम लोग पचास साठ वर्ष की उम्र में ढलती अवस्था पर पहुँच जावें, जब कि हमारे पूर्ण यौवन का आरम्भ ही तीस वर्ष से शुरू होता है। आप प्राणि-संसार की ओर दृष्टि डालिए, तथा वनस्पति संसार की ओर नजर फेंकिए तो आपको मालूम होगा कि किसी जानवर को जीवन प्राप्त करने में जितना समय लगता है, उससे वह चौगुना जीता है। वनस्पति का भी यही हाल है। उसको पूरी तरह फलने फूलने को जितना समय लगता है उससे तिगुने समय में वह मुर्झाती नहीं। जब जानवरों और वनस्पति का यह हाल है तो मनुष्य के लिए यह असम्भव है कि उसके पूर्ण यौवन खिलने को जितना समय लगे उससे वह चौगुना न जी सके। अवश्य ही हम लोग अपनी शक्ति और बल को कमसे कम उस समय तक बराबर रख सकते हैं, जब तक कि हमारी उम्र अस्सी के उस पार न चली जावे।

सर हरमन्न वेवर नामक सुप्रसिद्ध अंगरेज डाक्टर कहते हैं कि मनुष्य मजे से सौ वर्ष जीता रह सकता है।

कवि स्टेडमन का कथन है—"मनुष्य सत्तर वर्ष की उम्र ही को क्यों पुख़्ता समझते हैं? वे यदि स्वास्थ्य और बल को बनाए रखें तो क्या पाँच सौ वर्ष तक नहीं जी सकते? क्या वे नहीं चाहते कि पचास वर्ष तक हम सुख पूर्वक प्रवास करते रहें, पचास वर्ष तक नये नये अविष्कारों को आविष्कृत करते रहें; पचस वर्ष तक किसी राजनीतिज्ञ के पद पर काम करें, पचास

वर्ष तक डाक्टरी का काम करें पचास वर्ष तक नये नये ग्रन्थ लिखें और शेष में दुनिया के दूसरे दूसरे काम करें।

मनुष्य तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक कि उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, जब तक कि उसके हृदय में महत्वाकांक्षा बनी रहती है—जब तक कि उस के खून में कार्य-शक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यों न हो, पर यदि यौवन के विचार उसके मन से निकल गये हैं—उसका उत्साह ढीला पड़ गया है—उसका कार्य-कर बल कमजोर हो गया है, तो उसे बूढ़ा ही समझना चाहिए।

इस कल्पना से कि अमुक उम्र के बाद मनुष्य की ढलती अवस्था का आरम्भ हो जाता है—उसकी इच्छाएँ मन्द होने लगती हैं—इसने मानव समाज का बड़ा नाश किया है।

हम अपने आप को बूढ़े समझने लगते हैं। हमारे विचार भी ऐसे ही हो जाते हैं। इसका फल यह होता है कि बुढ़ापा हमें जल्दी जल्दी घेरने लगता है। तब तक हम बूढ़े ही होते जावेंगे जब तक कि हम अपने बुढ़ापे के विचारों को यौवन के—स्वास्थ्य के-हृष्ट-पुष्टता के—उत्साह के-विचारों में न परिणित कर दें।

"हम एक दिन अवश्य ही बूढ़े होंगे" इस कल्पना ने मानव समाज के मन में बुरी तरह जड़ जमा ली है। यही कारण है कि बहुत से मनुष्यों के मुख तथा शरीर पर शीघ्र ही बुढ़ापे के चिन्ह दीखने लगते हैं।

जब हम यह विश्वास करने लगेंगे कि जीवन का मुख्य तत्व ईश्वरीय तत्व से प्रकट हुआ है, अतएव उस तत्व पर समय का

प्रभाव नहीं चलता, बुढ़ापे की छाया नहीं पड़ सकती, तभी हम ढलती उम्र में भी अपने यौवन को कायम रख सकेंगे जब हम इस शाश्वत यौवन तत्व पर कायम रहने लगेगें, जब हम छाती पर हाथ ठोंक कर साहसपूर्वक इस बात को कहने लगेंगे कि हमारी आत्मा का सत्य स्वरूप, हमारी आत्मा का दैवी तत्व ऐसा अलौकिक है, कि वहाँ बुढ़ापा जगह नहीं पा सकता, अपना जरा भी अधिकार नहीं चला सकता, तो इस तरह के सुविचारों का प्रभाव हमारे शरीर पर दीखने लगता है। अर्थात हमारे शरीर पर पूर्ण सौन्दर्य और यौवन के सब चिन्ह दिखाई देने लगते हैं।

जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिरि हमारे विपरीत हो तो यह बात सर्वथा असम्भव है। क्या कोई डाक्टर उस रोगी को बचा सकता है, जिसका यह विश्वास हो गया है कि मैं मर जाऊँगा, कोई मुझे नहीं बचा सकता?

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ कि जिनका यह विश्वास हो गया था कि मैं साठ या पैंसठ वर्ष की उम्र से ज्यादा नहीं जी सकता। इस विश्वास ने उनके मन में ऐसी पक्की जड़ जमा ली थी कि सचमुच वे उसी उम्र में संसार से चल बसे।

इन पंक्तियों का अनुवादक एक ऐसे मनुष्य को जानता है जिसकी जन्मपत्री में लिखा हुआ था कि वह अमुक मिती को मर जायगा। उस मनुष्य का फलित ज्योतिष पर पूरा विश्वास था। उसे पूरा भरोसा हो गया था कि इस मिति के आगे से किसी तरह जी नहीं सकता, विधाता ने इतनी ही उम्र मेरे लिए

लिखी है। उक्त मिती के दो तीन दिन पूर्व से वह अपनी मृत्यु की तैयारी करने लगा। उसकी सब मनोवृत्तियाँ मृत्यु की ओर खिंच गईं। आश्चर्य इस बात का है कि वह अभागा उसी दिन मर भी गया। पाठकगण! क्या आप इसका कारण समझे? उसके मृत्यु-सम्बन्धी विचारों ही ने उसका घात किया—उसके इस दुर्विश्वास ने ही मृत्यु-मुख में उसे ढकेला। उस ज्योतिषी ने उसकी जन्मपत्री में यह लिख कर कि वह अमुक दिन मर जायगा, उसकी मृत्यु होने में सहायता दी।

लागत मूल्य पर हिन्दी पुस्तक प्रकाशित करनेवाली

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज द्वारा स्थापित

भारतवर्ष की एक मात्र सार्वजनिक संस्था

सस्ता-साहित्य-मण्डल

अजमेर की

पुस्तकों का सूचीपत्र

मण्डल के स्थाई ग्राहक बनकर सब पुस्तकें

पौने मूल्य में मंगा सकते हैं

पूज्य मालवीयजी का
हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध

हिन्दी में 'त्याग-भूमि' जैसी सुन्दर, सुसम्पादित सात्त्विक राजस-प्रधान पत्रिका देखकर मुझे प्रसन्नता होती है। इसके लेख और टिप्पणियाँ विचारपूर्ण होती हैं। स्त्रियों और युवकों को उपदेश और उत्साह देने की सामग्री इसमें खूब रहती है। अभी पत्रिका

आठ दस हज़ार वार्षिक घटी सहकर

इतनी सस्ती दी जा रही है। पर यदि इसके दस बारह हज़ार ग्राहक हो गए तो फिर घटी न रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि देशभक्त हिन्दी के प्रेमी इसके प्रचार में सहायक होंगे।

'सस्ता-मण्डल अजमेर' ने उच्च कोटि की पुस्तकें सस्ती निकालकर हिंदी की बड़ी सेवा की है। सर्व साधारण को इस संस्था की पुस्तकें लेकर इसकी सहायता करनी चाहिए।

मदनमोहन मालवीय

क्या आप मंडल व त्यागभूमि के ग्राहक बन कर
या अपने एक दो मित्रों को बनाकर
इस साहित्यसेवा और देशसेवा के यज्ञ में
सहायता न करेंगे ?

सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

उद्देश्य

यह मंडल शुद्ध सेवा भाव से हिन्दी की उत्तमोत्तम पुस्तकें व पत्रिकाएँ सस्ते से सस्ते मूल्य में प्रकाशित करने के लिए स्थापित हुआ है। इस मंडल से ऐसी ही पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, जो भाषा, भाव, शुद्धता, छपाई सफाई सभी दृष्टियों से उच्च-कोटि की हों। साहित्य ऐसा दिया जाता है जो ज्ञानवर्द्धक, उत्साहप्रद और देश सेवा प्रेरक हो। स्त्रियों और बालकों के उपयोग की भी पुस्तकें निकलती हैं।

स्थाई ग्राहक बनने के नियम

(१) एक रुपया प्रवेश फीस भेजकर कोई भी सज्जन इस मण्डल के स्थाई ग्राहक बन सकते हैं। यह प्रवेश फ़ीस मनीआर्डर द्वारा पेशगी भेजनी चाहिए। यह प्रवेश फ़ीस वापस नहीं लौटाई जाती।

(२) स्थायी ग्राहक मंडल द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकों की एक एक प्रति पौनी कीमत* में मंगा सकते हैं। यदि एक से अधिक प्रतियां मंगाना हों तो, दो आना फी रुपया कमीशन काट कर भेजी जाती हैं।

(३) ग्राहक बनने के समय से पहिले प्रकाशित हुए ग्रन्थों का लेना न लेना ग्राहकों की इच्छा पर निर्भर है। पर आगे प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में से वर्ष भर में कम से कम साढे चार रुपयों के मूल्य (कमीशन काट कर अर्थात् छे रुपियों की पूरी कीमत से) की पुस्तकें अपनी मन चाही चुन कर, अवश्य लेनी होती हैं। मण्डल से हर वर्ष प्रायः आठ दस रुपयों के मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं।

(४) यदि स्थाई ग्राहक की लापरवाही से या भूल से वी०पी० का पार्सल वापस लौट आवेगा तो डाक खर्च उन्हीं के जुम्मे होगा। यदि एक मास के भीतर भीतर वे पोस्टेज हानि न भेज देंगे तो उनका नाम स्थाई ग्राहकों में से काट दिया जायगा और फिर से एक रुपया भेजने पर ही उनका नाम स्थाई ग्राहकों में लिखा जायगा।

---

* प्रचार के लिए आत्म-कथा का मूल्य लागत से भी कम रखा गया है इसलिए यह पुस्तक पूरे मूल्य में ही ग्राहकों को भी दी जाती है।

(५) नई पुस्तकें प्रकाशित होने पर उन्हें भेजने के पन्द्रह दिन पहले ग्राहकों के पास पुस्तकों के नाम विवरण, मूल्य आदि की सूचना भेज दी जाती है। पन्द्रह दिन बाद पौनी कीमत से वी० पी० द्वारा पुस्तकें ग्राहकों के पास भेज दी जाती हैं।*

(६) मण्डल से ग्राहक नम्बर की सूचना मिलते ही अपने यहां नोट बुक में या पुस्तकों पर नम्बर जरूर लिख लेना चाहिए। पत्र-व्यवहार करते समय, यह नम्बर जरूर लिख भेजना चाहिए। बिना ग्राहक नंबर लिखे यदि कोई सज्जन पुस्तकों का आर्डर भेज देंगे और हमारे यहां से पूरे मूल्य में पुस्तकें चली जावेंगी तो उसके जिम्मेवार हम न होंगे।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) वी० पी० द्वारा पुस्तकें मँगाकर लौटा देने से हमारी बड़ी हानि होती है। एक तो पुस्तकें वापस आने में ख़राब हो जाती हैं, दूसरे पोस्टेज हानि व्यर्थ में होती है। इसलिए कृपा कर पहले से ही सोच समझ कर पुस्तकें मँगाइए। देशभाई के नाते इस संस्था की हानि आप ही की हानि है।

(२) ग्राहकों को अपना नाम, गाँव, पोस्ट, और ज़िला तथा अधिक माल मंगानेवालों को अपने स्टेशन का नाम तथा रेलवे लाइन का नाम खूब साफ साफ लिख भेजना चाहिए।

(३) रेल द्वारा पुस्तकें मँगानी हों तो आर्डर के मूल्य के चौथाई रुपये पेशगी भेजना चाहिए। अन्यथा पुस्तकें नहीं भेजी जावेंगी। इसी तरह दस या इससे अधिक मूल्यकी पुस्तकें मँगानेवालोंको तीन-चार रुपये पेशगी भेजना चाहिए।

(४) किसी वी० पी० में हिसाब संबंधी या और किसी तरह की कोई भूल जान पड़े, तो उसे लौटाना न चाहिए। वी० पी० छुड़ा कर हमें लिख भेजें। भूल तुरन्त ठीक कर दी जावेगी।

निवेदक—जीतमल लूणिया मन्त्री, सस्ता-मंडल, अजमेर।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई एक दो पुस्तक न लेनी हो अथवा और कोई पुस्तक साथ में मंगानी हो तो सूचना-पत्र मिलते ही हमें लिख देना चाहिए। पन्द्रह दिन के अन्दर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

सस्ता-मंडल अजमेर की सस्ती और उपयोगी पुस्तकें

पुस्तकों का विषय, उनकी पृष्ठ संख्या और उनके मूल्य पर विचार कीजिए। कितनी उपयोगी और साथ ही कितनी सस्ती हैं।

अन्य प्रकाशक १०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ||) या ||=) रखते हैं पर मण्डल केवल |) रखता है, इतने पर भी

१) भेजकर स्थाई ग्राहक बनने से सब पुस्तकें पौने मूल्य में मिलती हैं

(१) ब्रह्मचर्य-विज्ञान—(लेखक पं० जगन्नारायणदेव शर्मा साहित्यशास्त्री) पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे इसकी भूमिका में लिखते हैं "लेखक ने पुस्तक में ब्रह्मचर्य-रक्षा संबंधि सभी विचारणीय बातों का समावेश किया है। प्राचीन ग्रन्थों से जो अवतरण दिये हैं, वे बहुत ही स्फूर्तिदायक हैं। भारतीय युवकों को इस पुस्तक का धर्मग्रन्थ की तरह पाठ करना चाहिए।" पृष्ठ संख्या ३७४ मू० ||-)

(२) कर्मयोग—(ले० श्री अश्विनीकुमारदत्त) गीता के मुख्य विषय का प्रतिपादन बड़े ही अच्छे ढंग से किया है। पृष्ठ १५२ मू० |=) दूसरी बार छपी है।

(३) यथार्थ आदर्श-जीवन—वास्तव में मानव जीवन का आदर्श क्या होना चाहिए? यह पुस्तक आपको अपना रास्ता ढूँढ़ने में बहुत सहायक होगी। पृष्ठ २६४ मूल्य ||-)

(४) दिव्य जीवन—संसार के प्रसिद्ध विचारक स्विट् मार्स्डन के 'The miracles of Right Thoughts' का हिन्दी अनुवाद। पुस्तक दिव्य विचारों की खान है। पृष्ठ १३६ मू० |=) पांचवीं बार छपी है।

(५) व्यवहारिक सभ्यता—छोटे बड़े सब के लिए उपयोगी व्यवहारिक शिक्षायें। बालकों के लिये तो यह बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है। पृष्ठ १२८ मू० |)||

(६) आत्मोपदेश—महात्मा एपिक्टेटस के आध्यात्मिक विचार। पृष्ठ १०४ मूल्य |) यह भी दूसरी बार छपी है।

(७) जीवन-साहित्य—(ले० आचार्य काका कालेलकर) धर्म, नीति, समाज-सुधार, शिक्षा और राजनीति सम्बन्धी सजीव और मनोहर लेखों का संग्रह। काका साहब के प्रत्येक लेख में पाठक असाधारण प्रतिभा का दर्शन करेंगे। प्राचीनता और नवीनता का समझौता आप जिस कुशलता के साथ करते हैं वह देखते ही बनता है। प्रथम भाग पृष्ठ २१८ मूल्य ||) दूसरा भाग पृ० २०० मू० ||) इसकी भूमिका श्री बाबू राजेन्द्रप्रसादजी ने लिखी है।

(८) तामिल-वेद—(ले० भक्तवर ऋषि तिरुवल्लुवर) भू० ले० श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचार्य—अनु० श्री क्षेमानन्द राहत

"दक्षिण में इस ग्रन्थ का आदर वेदों के समान है। वहाँ यह पांचवां वेद कहलाता है। इसमें धर्म और नीति के ऐसे मूल सिद्धान्तों का उपदेश किया गया है जिससे मनुष्य के जीवन का दिन रात काम पड़ता है। पुस्तक की रचनाशैली बड़ी सरल और बोधगम्य है" (सरस्वती) पृष्ठ २४८ मूल्य ॥=)

(९) शैतान की लकड़ी—(अर्थात् भारत में व्यसन और व्यभिचार का दौरदौरा) सारा समाज व्यसन और व्यभिचार में आकण्ठ फंसा हुआ है। समाज की हालत देखकर आपका दिल दहल जायगा। व्यसनों में हम करोड़ों रुपये बरबाद कर रहे हैं और व्यभिचार तो हमारे जीवन-सत्त्व को ही नष्ट कर रहा है। इसे मंगाकर पढ़िए और अपने आपको तथा बालकों को इन बुराइयों से बचाने की कोशिश कीजिए। पृष्ठ ३६५ मूल्य ॥।=) इसके लेखक हैं श्री बैजनाथ महोदय बी० ए०। पुस्तक में कई चित्र भी हैं।

(१०) अन्धेरे में उजाला—(टाल्सटाय का उत्कृष्ट नाटक) सर्वस्व त्यागकर देशसेवा व आत्मोन्नति करना ही जीवन का सार है, यही इस नाटक का विषय है। पृष्ठ लगभग १६० मूल्य ।≡)

(११) सामाजिक कुरीतियाँ—(ले० महात्मा टॉल्सटॉय) टाल्सटॉय के लेखों ने और ग्रन्थों ने रूस और यूरोप के पढ़े-लिखे लोगों में महान् क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। भारतीय पाठकों के लिए भी यह बहुत उपयोगी है। पृष्ठ २८० मूल्य ॥≡)

(१२) तरंगित हृदय—(ले० पं० देवशर्मा विद्यालंकार) भू० ले० पं० पद्मसिंह शर्मा—एक प्रतिभाशाली हृदय संसार का अवलोकन करता है और उसमें विचारों की अद्भुत और स्फूर्तिजनक तरंगें—विचारों की तरंगें—उठती हैं, यह उन्हीं का संग्रह है। पृष्ठ १७६ मू० ॥) हिंदी संसार ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है

(१३) भारत के स्त्रीरत्न—(दो भाग) प्राचीन भारत के प्रायः सब धर्मों और सभी जातियों की आदर्श-पतिव्रता, वीर, विदुषी और भक्त लगभग ९० महिलाओं के ओजस्विनी भाषा में लिखे गये जीवन चरित्र। प्रथम भाग पृष्ठ ४१० मूल्य १) दूसरा भाग पृष्ठ २२८ मूल्य ॥।–)

(१४) कन्याशिक्षा—बालिकाओं के लिए। पृष्ठ ९४ मू० ।) द्वितियावृत्ति

(१५) सीताजी की अग्निपरीक्षा—यह एक मनगढंत काव्य-कल्पना नहीं ऐतिहासिक सत्य है। दलीलें बड़ी विचारणीय हैं। पृष्ठ १२४ मू० ।-)

(१६) स्त्री और पुरुष—(म० टाल्सटाय) स्त्री और पुरुषों के आदर्श सम्बन्ध पर बड़े ही अद्भुत विचार हैं। पृष्ठ १५४ मू० ।=)

(१७) घरों की सफ़ाई—प्रत्येक स्त्री, पुरुष व बालक को यह पुस्तक पढ़ना चाहिए। पृष्ठ ९२ मू० ।)

(१८) आश्रम-हरिणी—(श्री वामन मल्हार जोषी एम० ए० लिखित सामाजिक उपन्यास) पृष्ठ ९२ मूल्य ।)

(१९) क्या करें?—(टॉल्स्टाय) 'Who touches this book, touches a man' (Walt Whitman) यह पुस्तक नहीं, मानव-हृदय के कोमल और पवित्रतम विचारों का स्रोत है। टॉल्स्टाय के ग्रन्थों ने संसार के अमेरिका और रूस के सामाजिक जीवन में एक अद्भुत क्रान्ति कर डाली है। यह पुस्तक उन्हीं विचारों का एक सुन्दर संग्रह है। जीवन की गम्भीरतम समस्याओं "क्या करें" का उत्तर है। प्रथम भाग पृष्ठ २६६ मू० ॥=)

(२०) गंगा गोविन्दसिंह—ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारियों और उनके कारिन्दों की काली करतूतें और देश की विनाशोन्मुख स्वाधीनता को बचाने के लिए लड़ने वाले आत्माओं की वीर गाथाओं का उपन्यास के रूप में वर्णन। पृष्ठ २२८ मूल्य ॥=)

(२१) अनोखा—फ्रांस के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के 'The Laughing man' का हिन्दी अनुवाद। सत्ता और वैभव ये सद्गुण नहीं पनप सकते। यह तो ग़रीबी की उपज है यही बात लेखक ने विनोद से एक पागल के मुँह से कहलाई है। अनुवादक हैं ठाकुर लक्ष्मणसिंह बी० ए० एल० एल० बी०। पृष्ठ ४७४ मू० १।=)

(२२) कलवार की करतूत—(महात्मा टाल्स्टाय) एक छोटासा अत्यन्त मनोरंजक और शिक्षापूर्ण प्रहसन नाटक रूप में। पृ० ४० म० -)॥।

(२३) श्री राम चरित्र (२४) श्री कृष्ण-चरित्र। दोनों पुस्तकों के लेखक हैं महाराष्ट्र के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ रा० ब० श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम० ए०। दोनों ही पुस्तकें बड़ी खोजके साथ लिखी गई है। श्रीराम चरित्र की पृष्ठ संख्या ४४० और मूल्य १।) है। श्री कृष्णचरित्र की भी पृष्ठ संख्या लगभग ४०० होगी और मूल्य भी लगभग १।) होगा। श्री कृष्ण-चरित्र सन् २९ के अंत तक या फिर सन् ३० में छप जायगा।

(२५) आत्म-कथा—[म० गांधीजी के 'सत्य ना प्रयोगो' अथवा 'आत्म-कथा' का हिन्दी अनुवाद] अनुवादक पं० हरिभाऊ उपाध्याय। इस ग्रन्थ-रत्न का परिचय देना व्यर्थ है। पृष्ठ ४१६ प्रचार के लिये मूल्य केवल ॥=) रक्खा गया है। अंग्रेजी में इस पुस्तक का मूल्य ५) है। यह प्रथम खण्ड है।

(२६) स्वामीजी (श्रद्धानन्द) का बलिदान और हमारा कर्तव्य अर्थात् हिन्दू-मुस्लिम समस्या—ले० पंडित हरिभाऊ उपाध्याय—आज इस समस्या ने देश को जितना परेशान कर रक्खा है उतना और किसी ने नहीं इस पुस्तक में निष्पक्ष भाव से सभी पहलुओं पर विचार किया गया है। पृष्ठ १२५ मूल्य ।-) दूसरी बार छपी है।

(२७) शिवाजी की योग्यता—(ले० गोपाल दामोदर तामस्कर एम. ए.) भारत में स्वराज्य स्थापना करने वाले इस वीर महापुरुष के जीवन रहस्य को बड़े अच्छे ढंग से समझाया गया है। पृष्ठ १२२ मूल्य ।=) तीसरी बार छपी है।

(२८) यूरोप का सम्पूर्ण इतिहास—(तीन भागों में) यूरोप का इतिहास स्वाधीनता का तथा जागृत जातियों की प्रगति का इतिहास है। राज्यों की उथल पुथल के वर्णन के साथ ही इस पुस्तक में यह भी दिखलाया गया है कि भारतीय लोगों को उन घटनाओं से क्या शिक्षा लेनी चाहिए और अपने देश को किस तरह स्वतंत्र करना चाहिए। पृष्ठ ८३० मू० २)

(२९) समाज-विज्ञान—शुरू से लेकर अबतक मानव-समाज किस तरह प्रगति करता गया उसका यह इतिहास है। धर्म, राजसत्ता, नीति, सामाजिक रीतिरिवाज, वैवाहिक पद्धतियां आदि विषयोंपर भारतीय और पश्चिमी लेखकों और विचारकों के विचार लिखकर लेखक ने अपने विचार भी प्रकट किये हैं। हिन्दी में इस विषय की यह पहलीही मौलिक पुस्तक है। पृष्ठ ५८० मूल्य १॥)

(३०) हमारे ज़माने की गुलामी—(टाल्सटाय) इसमें आधुनिक सभ्यता, सरकारें और यन्त्रयुग की भयंकर टीका और समाज को इसकी गुलामी से बचाने के उपाय बताये गये हैं। पृष्ठ १०० मूल्य ।)

(३१) खद्दर का सम्पत्ति शास्त्र—(श्री रिचार्ड ग्रेग की "Economics of Khaddar" का हिन्दी अनुवाद) अनु० श्रीरामदास गौड़ एम० ए० यह वही पुस्तक है जिसकी महात्मा गांधी जी ने, लाजपतराय जी ने देश के अन्य विचारशील लोगों ने प्रत्येक भारतवासी को पढ़ने की सिफारिश की है। पृष्ठ संख्या लगभग २२४ मूल्य ॥≡)

(३२) गोरों का प्रभुत्व—(लेखक बाबू रामचन्द्र वर्मा) संसार में गोरों के प्रभुत्व का अंतिम घंटा बज चुका। अब संसार की अन्य जातियाँ किस तरह राजनैतिक रंगभूमि पर आ रही हैं और उससे गोरी जातियाँ किस तरह भयभीत हो रही हैं, यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है! पृष्ठ २७४ मूल्य ।॥=)

(३३) हाथ की कताई-बुनाई—(अनु० श्री रामदास गौड़ एम० ए०) "इसमें वेदकाल से लेकर आजतक के समय तक का हाथ से कातने और बुनने का इतिहास, उसकी उन्नति तथा अंग्रेजों ने भारत के इस रोज़गार का किस तरह सर्वनाश किया, विदेशी वस्त्रों की बाढ़ कैसे बढ़ी, वर्तमान समय में हाथ की कताई बुनाई से भारत को क्या लाभ पहुँच सकता है, आदि बातों पर विद्वत्ता-पूर्ण विचार किया गया है। पृष्ठ २६७ मूल्य ॥=)" प्रताप (कानपुर) इस विषय पर आई हुई ६६ पुस्तकों में से इसको पसन्द कर महात्मा गांधीजी ने इसके लेखकों को १०००) का पुरस्कार दिया है।

(३४) चीन की आवाज़—चीन की वर्तमान क्रांति को ठीक तौर से समझने के लिए इस ग्रन्थ का पढ़ना बहुत जरूरी है। कैसी खेद की बात है कि चीन हमारा पड़ोसी और भारत में उत्पन्न होने वाले एक महान धर्म का अनुयायी होने पर भी हमें उसकेविषय में बहुत कम ज्ञान है। पृष्ठ १२० मू० ।–)

(३५) दक्षिण आफ्रिका का सत्याग्रह—(दो भाग) महापुरुष कैसे निर्माण होते हैं यह इस पुस्तक को पढ़ने से ज्ञात होगा। यह पुस्तक पू० महात्माजी की जीवनी का एक महत्त्वपूर्ण अंश भी है। स्वयं महात्माजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि इस इतिहास के पढ़े बिना उनकी आत्मकथा अधूरी रह जाती है। प्रथम भाग पृष्ठ २७२ मूल्य ॥।) दूसरा भाग पृष्ठ २२८ मूल्य ॥)

(३६) विजयी बारडोली (साठ चित्र) बारडोली ने भारत की लाज रख ली। किसानों की एकता, स्वयंसेवकों का अपूर्व संगठन, सरदार वल्लभ भाई पटेल का युद्ध कौशल, तथा बारडोली की वीरांगनाओं की आल्हादजनक कथाओं आदि से परिपूर्ण यह बारडोली सत्याग्रह का शुरू से अन्त तक क्रमबद्ध इतिहास है। स्वराज्य का उपाय है देश में अनेकानेक बारडोली का उत्पन्न करना अतः प्रत्येक भारतवासी को यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ ५२० मू० २)

(३७) अनीति की राह पर—महात्मा गांधी के Self--restraint VS. Self-Indulgence नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। आत्म-संयम, सन्तति-निग्रह, ब्रह्मचर्य और चरित्र संगठन पर बड़ी ही उत्तम पुस्तक है। प्रत्येक देशवासी को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या नौजवान इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ लगभग १५० मूल्य ॥)

(३८) स्वाधीनता के सिद्धान्त—(टे० टिरेन्स मेकस्विनी) प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी के पास यह पुस्तक होनी चाहिए। संसार में इस पुस्तक का बड़ा आदर है। पृष्ठ २०८ मूल्य ॥)

(३९) जब अंगरेज़ नहीं आये थे ?—उस समय भारतवर्ष की कैसी उत्तम दशा थी यह अंग्रेजी शासन की ओर से बिठाई हुई कमेटी की ही रिपोर्ट है। प्रत्येक भारतवासी के जानने की चीज़ है। पृष्ठ १०० मूल्य।)

(४०) महान् मातृत्व की ओर—स्त्री-जीवन के प्रारम्भिक कठिनाइयों का दिग्दर्शन कराती हुई गार्हस्थ्य जीवन का जिम्मेदारियों को दिखलाती हुई, अपने जीवन को पवित्र और सुखमय बनाने वाली स्त्रियों के लिए बड़ी ही सुन्दर पुस्तक है। पृष्ठ २८० मूल्य ॥।=)

(४१) हिन्दी मराठी-कोष—(रचयिता श्री पुंडलीक) राष्ट्र-भाषा प्रचार के कार्य-क्रम में इस कोष का एक विशेष स्थान है। हिन्दी पढ़ने वाले प्रत्येक महाराष्ट्रीय भाई के लिए यह बड़े काम की चीज़ है। मराठी भाषा के थोड़े बहुत जानकार हिन्दी भाषी भी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। इस कोष में हिन्दी भाषा के मुहावरों का भी एक छोटासा कोष है। पृष्ठ ३७२(बड़े साइज़ के) मू० २)

अन्य उपयोगी पुस्तकें—मंडल के ग्राहक बन जाने से नीचे लिखी पुस्तकें भी पौनी कीमत में मिलेंगी।

(१) भारत के हिन्दू सम्राट् (मू० लेखक रा० ब० गौरीशंकर हीराचंद ओझा) प्राचीन काल में सम्पूर्ण भारत पर शासन करने वाले सम्राट् चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक, कनिष्क, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त हर्षवर्द्धन आदि अनेकों सम्राटों का प्रमाणपूर्ण इतिहास है। मूल्य १॥) रा० संस्करण का २॥)

(२) भगवान महावीर—महात्मा बुद्ध के समकालीन भगवान महावीर का यह सबसे बड़ा, उत्तम और प्रामाणिक जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ है। इसे पढ़ने से चित्त में पवित्रता का झरना बहने लगता है। बड़ी ही सुन्दर पुस्तक है। सजिल्द मूल्य ४॥) आर्ट पेपर पर छपा हुआ राजसंस्करण का मूल्य १०

(३) सूर्य-ग्रहण—शिवाजी के समय का ऐतिहासिक उपन्यास—अनु० बाबू रामचन्द्र वर्मा मूल्य २॥) मूल लेखक पं० हरिनारायण आपटे एम० ए०

(४) पौराणिक कथायें—इसमें भिन्न भिन्न पुराणों से संकलित प्राचीन भारत के महापुरुषों तथा सती देवियों के जीवन की विशेष विशेष घटनाओं का वर्णन है। बढ़िया कागज़ पर छपी हुई ८२५ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥=) एक तरफ़ मूल संस्कृत है। दूसरी तरफ सामने उसका अनुवाद है।

"त्यागभूमि"

प्रत्येक हिन्दी पाठक को क्यों पढ़नी चाहिए !

इसलिए कि

(१) यह हिन्दी की एक मात्र राष्ट्रीय-सामाजिक मासिक पत्रिका है और भारत में सबसे सस्ती है।

(२) इसके लेख सात्विक, प्रौढ और जीवन-प्रद होते हैं।

(३) इसके चित्र अश्लील या कामुकता बढ़ाने वाले नहीं होते वरन् जीवन के महान् आदर्शों के नमूने होते हैं। स्त्रियों और बालकों के लिए महान उपदेशक का काम करते हैं।

(४) यह ग़रीबों की विनम्र सेविका तथा किसान, मजूर और स्त्रियों के नवोत्थान के लिए प्राणपण से उद्योग करने वाली है।

(५) देश के कोने कोने में और समाज के अंग अंग में गहरी और स्पृहणीय उथल पुथल मचाने की धुन इसे सवार है।

प्रति मास १२० पृष्ठ, रंगीन व कई सादे चित्र होते हुए भी

वार्षिक मूल्य केवल ४)

नमूने की एक प्रति के लिए ।=) के टिकट भेजें

इसे देख कर आपके नयनों को सुख होगा, पढ़कर हृदय प्रसन्न होगा और इसके विचारों पर मनन करने पर आप की आत्मा का विकास होगा।

अपने बल, बुद्धि और ज्ञान को बढ़ाने के लिए।

क्या आप सिर्फ दो पाई रोज़ या

सवा पांच आने प्रति मास, या ४) वार्षिक

अपने बीसों प्रकार के खर्च में से बचाकर इसके ग्राहक नहीं बन सकते ?

अपने बीसों प्रकार के खर्च में से बचाकर

इसके ग्राहक नहीं बन सकते ?

जरूर बन सकते हैं !

'त्यागभूमि' के ग्राहक क्यों होना चाहिए?

ज़रा ख़याल कीजिए

(१) सबसे पहिले और केवल मूल्य ही को देखा जाय तो और पत्रिकाओं के हिसाब से 'त्यागभूमि' का मूल्य कम से कम ६) ६॥) रखा जाना चाहिए था जैसा कि इतने ही पृष्ठों की अन्य पत्रिकाओं का है। पर त्यागभूमि का मूल्य तो डाक व्यय सहित केवल ४) वार्षिक ही है।

(२) त्यागभूमि गंदे और लुभावने विज्ञापनों से आपको नहीं लुभाती। एक मासिक पत्रिका के लिए विज्ञापनों की आमदनी कम नहीं होती। फिर भी पाठकों के हित के ख़याल से त्यागभूमि अपने आपको इस दूषित आय से अछूती रखना चाहती है। इससे पाठक और उनका धन भी धूर्त विज्ञापनबाज़ों के चंगुल से बच जाता है और वे अपनी शक्ति, समय और द्रव्य कहीं अच्छे कामों में लगा सकते हैं।

सिर्फ़ ४) वार्षिक खर्च करने पर आपको

घर बैठे, ज्ञान, नवजीवन और देशभक्ति से परिपूर्ण
१४४० पृष्ठ पढ़ने को, अनेक उस्तादों के
रंगीन व सादे चित्र देखने को मिलेंगे
आप के घर के लोग अड़ोसी, पड़ोसी व मित्रगण भी
इससे कितना लाभ उठावेंगे!

क्या ४) में यह सौदा महँगा रहेगा?

अब आपकी बारी है

'त्याग-भूमि' का उद्देश्य शुद्ध सेवाभाव है इसीलिए तो विज्ञापनों की हज़ारों रुपियों की वार्षिक आय को छोड़ कर, अश्लील और गंदे चित्रों से मुँह मोड़ कर लागत मूल्य से भी कम मूल्य रखकर यह पत्रिका निकाली जा रही है। इसका उद्देश्य तो है

सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों में आमूल क्रान्ति करदेना

पर वह महान् उद्देश्य तभी सफल हो सकता जब इसका प्रचार घर-घर में हो। कोई गाँव ऐसा न हो जहाँ इसकी एक प्रति न जाती हो, कोई क्लब, सोसाइटी, पुस्तकालय और शिक्षित घर ऐसा न हो जहाँ इसका प्रवेश न होता हो।

अभी पत्रिका के तीन हज़ार ग्राहक हैं। अभी उसका मूल्य ७) प्रति ग्राहक पीछे पड़ता है इस प्रकार

तीन रुपये प्रति ग्राहक घटी सहकर

यह पत्रिका निकाली जा रही है। पर यदि देश-भक्त हिन्दी प्रेमियों की सहायता से इसके बारह हज़ार ग्राहक हो जाय तो यह अपना खर्चा आप संभाल लेगी।

यदि इस अपील को पढ़नेवाले

प्रत्येक पाठक केवल एक एक दो दो ग्राहक बना देने का संकल्प कर लें तो एक ही वर्ष में बारह हज़ार ग्राहक हो सकते हैं।

धनिकों से

कई निर्धन विद्यार्थी, बालिकाएँ और पुस्तकालयवाले हम से एक दो रुपये कम मूल्य पर और कभी कभी बिना मूल्य ही 'त्यागभूमि' माँगा करते हैं। आप अपनी शक्ति के अनुसार रुपये हमारे पास भेजकर ऐसे लोगों के लिए रिआयती मूल्य पर या मुफ्त में 'त्यागभूमि' मिलने की सुविधा कर सकते हैं। आपकी ओर से 'त्यागभूमि' में सूचना प्रकाशित हो जायगी।

देश भर में प्रचारकों की आवश्यकता

इस पवित्र कार्य के लिए जो भाई प्रचारक बनना चाहें, हमसे पत्र व्यवहार करें। कालेज के विद्यार्थी व स्कूलों के मास्टर तथा **गाँवों के** पोस्टमास्टर व पटवारी, अपने अपने गाँव व कस्बे में चार छः ग्राहक बना कर भी कमीशन प्राप्त कर सकते हैं।

पाठक, बताइए आप क्या कर सकते हैं?

जो कर सकें वह तुरन्त ही शुरू कर दीजिए

कम से कम आप तो ग्राहक बनही जाइए

त्यागभूमि के प्रधान स्तम्भ

आधी दुनिया (स्त्रियों के लिए) जगता राष्ट्र (बालकों के लिए)	४० पृष्ठ सुरक्षित
ज्ञानांजन	युगनिर्माण
पहला सुख	जनता का स्वराज्य
विश्वदर्शन	अछूत भाई
ऋद्धि सिद्धि	साहित्य संगीतकला
खोज में	भग्नावशेष (देशी राज्य)

त्यागभूमि का मूल्य

वार्षिक मूल्य ४) है, छः मास का २॥)

एक अंक का मूल्य ॥)

पर नमूने के केवल एक अंक के लिए ।=) के टिकट भेजिए

पुस्तकें खरीदने का अमूल्य अवसर

अन्य प्रकाशकों की कुछ पुस्तकें हमारे यहां पड़ी हुई हैं उन्हें हम चौथाई, आधा और पौने मूल्य में बेच रहे हैं आज ही कार्ड लिखकर उनका सूचीपत्र मंगालें।

पता—सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर